मसीही विश्वासियों के लिए "प्रेरितों के काम" का एक अध्ययन

PRERITON KE KAARYA

First Hindi Edition : January-2007

Adapted into Hindi by : **J.P. Pandey**
Assisted by : **R.K. Khullar**

This book is based on the English title "Lessons in ACTS for growing believers" (Tim Mcmanigle) published by the Fellowship Bible Church, 3217, Middle Road, Winchester, VA. (U.S.A.).

Copyright © The Fellowship Bible Church,
Winchester, VA. (U.S.A.).

All rights reserved

Printed in Nepal

प्रेरितों के काम

नामक

बाइबिल-पुस्तक की एक संक्षिप्त टीका

विषय सूची

पाठ एक	:	प्रेरितों के काम	1:1 — 2:40
पाठ दो	:	प्रेरितों के काम	2:41
पाठ तीन	:	प्रेरितों के काम	2:42 — 2:47
पाठ चार	:	प्रेरितों के काम	3:1 — 4:37
पाठ पाँच	:	प्रेरितों के काम	6:1 — 7:60
पाठ छः	:	प्रेरितों के काम	8:1 — 9:31
पाठ सात	:	प्रेरितों के काम	10:1 — 10:48
पाठ आठ	:	प्रेरितों के काम	11:1 — 12:17
पाठ नौ	:	प्रेरितों के काम	13:1 — 14:28
पाठ दस	:	प्रेरितों के काम	15:35 — 16:40
पाठ ग्यारह	:	प्रेरितों के काम	17:1 — 18:22
पाठ बारह	:	प्रेरितों के काम	18:23 — 20:12
पाठ तेरह	:	प्रेरितों के काम	20:17 — 20:38
पाठ चौदह	:	प्रेरितों के काम	21:17 — 28:31

1

अपने स्वर्गारोहण से पूर्व प्रभु यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को, पिता परमेश्वर द्वारा किए गये वायदे के पूरा होने के लिये, यरूशलेम में ही प्रतीक्षा करने का निर्देश दिया था : "देखो जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उण्डेलूंगा, परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहना"। पिता परमेश्वर ने क्या वायदा किया था? शान्तिदाता अर्थात् उस "सहायक" के भेजे जाने का वायदा, जो इन शुद्ध व क्षमा किए गये लोगों के जीवन में वास करने आने वाला था। प्रभु यीशु के बलिदान द्वारा विश्वासी-जीवन में परमेश्वर की आत्मा के स्थायी निवास का द्वार खुल गया था; सिर्फ उनकी शिक्षा और उनके परिवर्तन के लिए ही नहीं, बल्कि सारे संसार में प्रभु परमेश्वर की साक्षी होने के लिए उन्हें सामर्थ्य प्रदान करने हेतु भी। *"तब वे जैतून नामक पर्वत से, जो यरूशलेम के निकट, एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे। वहाँ पहुँच कर वे उस ऊपरी कक्ष में गए, जहाँ वे सब अर्थात् पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बरतुलमै, मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा ठहरे हुए थे। ये सब एकचित्त होकर कुछ स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और यीशु के भाइयों सहित लगातार प्रार्थना में लगे हुए थे"* (लूका 24:49; यूहन्ना 16:7,13; प्रेरित0 1:12-14)।

पवित्र आत्मा का भेजा जाना

अतः प्रभु के चेले यरूशलेम वापस आ कर पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा करने लगे। *"जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक स्थान पर एकत्रित थे"।* इस प्रकार प्रेरित लोग तथा अन्य सभी विश्वासी पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा में थे। वे एक "ऊपरी कक्ष" में एकत्रित थे। संभवतः वे प्रार्थना व आराधना में लगे हुए थे। पिन्तेकुस्त का दिन यहूदी पर्व का दिन था। यहूदी व्यवस्था के अनुसार यहूदी लोग फसह पर्व के समान पिन्तेकुस्त का वार्षिक पर्व भी मानते थे। फसह-पर्व के पचास दिन पश्चात् पिन्तेकुस्त का पर्व मनाया जाता था। सबत के दिन की तरह यह पर्व-दिवस भी यरूशलेम के मंदिर में सार्वजनिक भेंट-बलिदान चढ़ाने एवं उपासना करने के रूप में मनाया जाता था (प्रेरित0 1:14; 2:1)।

पवित्र बाइबिल में इस सभा के दौरान घटित विवरण पर ध्यान दें। *"एकाएक आकाश में प्रचण्ड आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर, जहाँ वे बैठे हुए थे, गूँज गया। और उन्हें आग के समान जीभें विभाजित होती हुई दिखायी दीं, और उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरीं"।* इस प्रकार सभी विश्वासियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला। हाँ, सिर्फ उन ग्यारह प्रेरितों को ही नहीं, बल्कि वहाँ उपस्थित सभी विश्वासीजन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए। अपने वायदे के मुताबिक प्रभु यीशु ने सभी विश्वासियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रदान किया। तात्पर्य यह है कि पवित्र आत्मा स्वर्ग से, परमेश्वर की सभी संतानों की अन्तरात्मा में वास करने हेतु भेजा गया। वह अनन्त काल के लिए समस्त विश्वासियों में वास करने भेजा गया है; ख्रीष्त के साथ हमें

एक करने हमारे एकत्व हेतु। इस धरती पर अपने शिष्यों के साथ 'अंतिम भोज' के समय मसीह यीशु ने यह वायदा किया था कि पिता परमेश्वर की ओर से "सहायक" अर्थात् पवित्र आत्मा भेजा जाएगा जो उसके विश्वासियों में "सदा" वास करेगा। वह जो कहता है उसे अवश्य पूरा करता है (प्रेरित0 2:2-3; यूहन्ना 14:16-17)।

उस दिन परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा को समस्त विश्वासियों में वास करने भेजा ताकि वे इस धरती पर परमेश्वर के मंदिर होकर जीवन व्यतीत कर सकें। पवित्र बाइबिल के अनुसार विश्वासी जन को वैयक्तिक तौर पर परमेश्वर का भवन (मंदिर) कहा गया है, और पवित्र आत्मा द्वारा एक किए गये विश्वासियों के झुंड को (सामूहिक तौर पर) भी परमेश्वर का मंदिर कहा गया है अर्थात् ख्रीष्त की मंडली। वह पिन्तेकुस्त का दिन परमेश्वर की कलीसिया (मण्डली) की शुरुआत का पहला दिन था, और उस दिन से सभी (मसीही) विश्वासी इस कलीसिया के अंग होते जा रहे हैं (प0कुरि0 6:19; प्रेरित0 20:28)।

इस पृथ्वी पर प्रभु परमेश्वर का सबसे पहला निवास-स्थान क्या था? पवित्र बाइबिल हमें यह सिखाती है कि ईश्वरीय निर्देश के अनुसार मूसा द्वारा निर्मित मिलाप-तम्बू के महापवित्र-स्थान में ही प्रभु परमेश्वर निवास किया। बाद में यरूशलेम में सुलेमान द्वारा बनाए गये मंदिर में परमेश्वर निवास किया। आगे चल कर बेबीलोन की सेना द्वारा उस मंदिर को नष्ट कर दिया गया। कुछ समय बाद, उसी स्थान पर एक दूसरा मंदिर बनाया गया। क्रूस पर बलि होते (मरते) समय जब उसने यह कहा कि "पूरा हुआ", तब परमेश्वर के उस मंदिर के पवित्र तथा महापवित्र स्थान को अलग करने वाले

परदे (अर्थात् लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति से दूर रखने वाले परदे) को ऊपर से नीचे तक फाड़ दिया। इस प्रकार परमेश्वर ने यह दर्शाया कि मनुष्य के लिए उसके पास वापस आने का रास्ता साफ हो गया है। इसके अतिरिक्त अब परमेश्वर मानव-निर्मित मकान में नहीं, बल्कि अपने लोगों की अन्तरात्मा में वास करेगा (निर्ग0 25:8; 40:34; प0राजा 8:10-21; यूह0 19:30; मत्ती 27:50-51)।

जब पवित्र आत्मा उस पिन्तेकुस्त के दिन प्रभु परमेश्वर की संतानों में वास करने आया; तब परमेश्वर अपने लोगों में निवास करने आया। यह प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया की शुरुआत थी; और तब से पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के जीवन (अन्तरात्मा) में निवास करता है। आज प्रत्येक विश्वासी में पवित्र आत्मा वास करता है। आपने जिस क्षण 'मसीह में' विश्वास किया उसी वक्त से आप में वह निवास करने लगा। अब हमें उन चेलों की तरह पवित्र आत्मा के आगमन की प्रतीक्षा नहीं करनी है। उस पिन्तेकुस्त के दिन प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया में निवास करने हेतु पवित्र आत्मा का आगमन हुआ, और तब से मसीह में विश्वास करने वाले प्रत्येक विश्वासीजन को पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ है। हम 'मसीह में' विश्वास करते वक्त ही पवित्र आत्मा पाकर प्रभु की कलीसिया के अंग हो जाते हैं।

"वे सब पवित्र आत्मा से भर गये, और जैसे आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे"। यहाँ "पवित्र आत्मा से भर गये" का मतलब यह है कि उन पर पवित्र आत्मा का कन्ट्रोल (नियंत्रण) हो गया। इसीलिए प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा को भेजा भी है – उसकी संतानों को नियंत्रित एवं प्रशिक्षित करते हुए मसीह की साक्षी होने के योग्य बनाना। पवित्र आत्मा

प्रत्येक विश्वासी में वास करता है और अपने नियंत्रण में प्रभु की साक्षी होने के लिए तथा दूसरों की सेवा के लिए अपनी इच्छानुसार हमें इस्तेमाल करना चाहता है।

प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय के चौथे पद पर पुनः ध्यान दें। अचानक वहाँ उपस्थित सभी विश्वासी ऐसी भाषाएं बोलने लगे जिन्हें वे स्वभावतः नहीं जानते थे। (अर्थात् ये भाषाएं उनकी मातृ-भाषाएं या उनके द्वारा सीखी गयी भाषाएं नहीं थीं, बल्कि अन्य लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएं थीं)। पवित्र आत्मा ने उन्हें ऐसी भाषाएं बोलने की क्षमता प्रदान की जो उनकी अपनी भाषा से भिन्न भाषाएं थीं। शायद हम यह सोचें कि ऐसी उत्तेजनापूर्ण परिस्थिति में केवल शोरगुल एवं कन्फ्यूजन ही रहा होगा, लेकिन वे सब एक ही समय या एक ही साथ बोलने के बजाय पवित्र आत्मा के निर्देशन अनुसार बोले। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस सम्पूर्ण घटनाक्रम पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर का नियंत्रण था, वहाँ उपस्थित विश्वासियों का नहीं, और प्रभु परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है।

चारों सुसमाचार पुस्तकों में मसीह के अद्भुत जीवन एवं कार्यों का विवरण है, और प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में पवित्र आत्मा की उपस्थिति एवं सामर्थ्य की शुरुआत तथा विश्वासियों के आंतरिक जीवन में उसके कार्य सम्बन्धी वर्णन पाया जाता है। या फिर यूँ कहें कि जैसे ख्रीष्त के प्रसंग में चारों सुसमाचार महत्वपूर्ण हैं, वैसे ही पवित्र आत्मा के प्रसंग में प्रेरितों के काम की पुस्तक महत्वपूर्ण है। जब प्रभु यीशु ने यह महान आदेश दिया : *"जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ",* तब उसने इस आदेश को इससे पूर्व के पद में कहे गए अपने अधिकार तथा इसके बाद के पद

में किए गये अपने वायदे सम्बन्धी सच्चाई से जोड़ कर कहा – *"स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है... और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ"।* इस अनुग्रहपूर्ण वायदे में प्रभु परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति-विस्तार अर्थात् पवित्र आत्मा का पूर्व-प्रबन्ध किया तथा कलीसियाई मिशनरी सेवा के विस्तार का भी पूर्वोपाय किया। वह जैसे यरूशलेम के इलाके में अपने चेलों के साथ रहा, उसी प्रकार अब भी पृथ्वी के छोर तक उनके साथ रहने का वायदा किया, जबकि वे यहूदिया और सामरिया प्रदेशों से होकर सुसमाचार-सेवा में बाहर निकल रहे थे। प्रभु का यह वायदा कैसे पूरा होने वाला था? जवाब सुस्पष्ट है – **पवित्र आत्मा** के द्वारा। इसीलिए प्रभु यीशु अपने शिष्यों से यह भी कह चुका था : *"मेरा जाना तुम्हारे लिए लाभदायक है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह **सहायक** तुम्हारे पास नहीं आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा"।* अपने स्वर्गारोहण तथा पवित्र आत्मा के आगमन के द्वारा प्रभु यीशु ने यरूशलेम क्षेत्र में चेलों के साथ अपनी दैहिक उपस्थिति के एवज़ में उनके साथ सर्वत्र उपस्थित रहने वाली अपनी **आत्मिक सामर्थ्य** प्रदान की। इस प्रकार पवित्र आत्मा पृथ्वी पर प्रभु का प्रतिनिधि-स्वरूप है। जिस प्रकार (देहधारी) मसीह ने इस धरती पर पिता परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया, उसी प्रकार अब पवित्र आत्मा को **'पुत्र परमेश्वर'** का प्रतिनिधित्व करना था।

यरूशलेम में यहूदी रहा करते थे, अर्थात् वे भक्त जो आकाश के नीचे स्थित प्रत्येक देश से आए थे। जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग भौचक्के हो गए, क्योंकि प्रत्येक ने उनको अपनी ही भाषा में बोलते सुना। वे आश्चर्यचकित और विस्मित होकर कहने लगे, *"ये सब जो बोल रहे हैं क्या गलीली*

नहीं? तब यह कैसी बात है कि हम में से प्रत्येक अपनी ही मातृ-भाषा में उन्हें बोलते हुए सुनता है? पारथी, मेदी, एलामी और मेसोपोटामिया, यहूदिया और कप्पूदूकिया और पुन्तुस और एशिया, फ्रूगिया, पंफूलिया, मिस्र और लिबिया के प्रदेश जो कुरेने के आस-पास हैं, और रोमी प्रवासी अर्थात् यहूदी और यहूदी मत अपनाने वाले, क्रेती और अरब निवासी – हम अपनी-अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के सामर्थी कार्यों की चर्चा सुनते हैं (प्रेरित0 2:5-11)।

इन विश्वासियों को पवित्र आत्मा द्वारा विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोलने की योग्यता क्यों प्रदान की गई? उस समय यहूदियों का पर्व होने के कारण यरूशलेम में विभिन्न प्रकार के भाषा-भाषी लोग उपस्थित थे। यहूदी लोगों को इतनी अधिक भाषाओं का ज्ञान कैसे हो गया था? सैकड़ों वर्ष पूर्व यहूदी लोग सच्चे परमेश्वर को छोड़ कर अन्य देवी-देवताओं अथवा मूर्तियों की ओर भटक गए थे। तब प्रभु परमेश्वर ने उन्हें सीरिया एवं बेबीलोन का गुलाम बना कर दण्डित किया था। आगे चलकर परमेश्वर ने उन्हें पुनः स्वतंत्रता प्रदान की, और कई यहूदियों को इस्राएल वापस लाकर यरूशलेम के यहूदी मंदिर का पुनः निर्माण करने दिया। इसके अलावा, बहुत से यहूदी संसार के विभिन्न देशों में जाकर बस गए। यह यहूदी जिस देश में बसे थे, धीरे-धीरे वहीं की भाषा बोलने लगे और अपनी मूल भाषा (हिब्रू या इब्रानी) को भूलते गए। लेकिन जब कभी यहूदियों का कोई प्रमुख पर्व होता था तब ये यहूदी अपने पूर्वजों के देश में स्थापित यहूदी मंदिर अर्थात् यरूशलेम के मंदिर में उपासना करने आते थे। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था कि जब पवित्र आत्मा उनमें वास करने आएगा तो उन्हें संसार के समक्ष मसीह की मृत्यु एवं पुनरुत्थान की साक्षी देने की क्षमता प्रदान करेगा। *"परन्तु जब*

पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में, यहाँ तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होगे"। इस प्रकार पवित्र आत्मा ने उन विश्वासियों को विभिन्न भाषाएं बोलने की योग्यता प्रदान करके, पिन्तेकुस्त के पर्व के समय यरूशलेम में आए हुए विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को उनकी अपनी भाषा में ईश्वरीय सुसमाचार सुनने का सुअवसर प्रदान किया। इन विश्वासियों को विभिन्न भाषाओं में बोलते हुए देखकर यरूशलेम में उपस्थित विभिन्न भाषा-भाषी लोग अपनी ही भाषा में प्रभु परमेश्वर का सन्देश सुन कर आश्चर्यचकित हो गए। *"वे आश्चर्यचकित और विस्मित होकर कहने लगे, 'ये सब जो बोल रहे हैं क्या गलीली नहीं? वे विस्मित होते रहे और घबराकर एक दूसरे से पूछने लगे 'यह क्या हो रहा है?"* (प्रेरित0 1:8; 2:6-7; 2:12)।

लोगों की प्रतिक्रिया

इस घटना के प्रति सामान्य लोगों ने आश्चर्य एवं संशय की प्रतिक्रिया दर्शायी। चेलों के हाव-भाव एवं वेश-भूषा को देखकर लोग यह समझ गए कि ये सब गलील क्षेत्र के निवासी हैं, लेकिन लोग यह नहीं समझ पाए कि यह गलीली उनकी भाषाएं (लोगों की विभिन्न भाषाएं) कैसे बोल रहे थे। अन्य कुछ लोग ठट्ठा करके यह कह रहे थे कि यह लोग "नई मदिरा के नशे में चूर हैं"। उस पर्व के समय दूसरे देशों से वहाँ आए हुए लोग अपनी भाषा में बोली गयी बात को समझ रहे थे; किन्तु यरूशलेम के स्थानीय लोग नहीं समझ सके। अतः उनका निष्कर्ष यह था कि ये गलीली "नशे में चूर हैं" (प्रेरित0 2:13)।

पतरस द्वारा व्याख्या

प्रभु यीशु के गिरफ्तार किए जाने पर उनके चेलों की प्रतिक्रिया कैसी थी? स्मरण रहे कि उस समय उनको पवित्र आत्मा नहीं मिला था। पवित्रशास्त्र में प्राप्त विवरण यह बताता है कि उनका व्यवहार कायरतापूर्ण था। आत्म-विश्वास की शेखी बघारने वाले पतरस ने तीन बार इस सत्य का इनकार किया कि वह प्रभु को जानता भी है। हाँ, वह एक विश्वासी था, प्रभु का प्रेमी था, किन्तु उस समय के मजहबी अगुवों तथा रोमी सल्तनत के सिपाहियों का साहसपूर्ण सामना करने योग्य विश्वास उसमें नहीं था। उस समय पतरस ने प्रभु का इन्कार किया, उसके प्रति वफादार नहीं रहा, उसे छोड़ दिया था; लेकिन प्रभु यीशु ने पतरस को नहीं छोड़ा। उसने पतरस के विश्वास के बने रहने के लिए प्रार्थना किया, और पतरस का विश्वास नष्ट नहीं हुआ। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा ने पतरस को अपने नियंत्रण में करके इस्तेमाल किया। वह सबके समक्ष बड़े साहस के साथ खड़ा होकर प्रचार करने लगा। *"परन्तु पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से उपदेश देने लगा; हे यहूदियों, और यरूशलेम के सब निवासियों, तुम यह जान लो और मेरी बातों को ध्यापूर्वक सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो सुबह का नौ ही बजा है"* (प्रेरित0 2:14-15)। पतरस ने सबके सामने उस घटना की व्याख्या करना प्रारम्भ किया। उसने बताया कि प्रभु के चेले मदिरा के नशे में नहीं हैं। बल्कि वे तो पवित्र आत्मा के नियंत्रण का अनुभव किए हैं। वह तो प्रभु की प्रतिज्ञानुसार परमेश्वर की पवित्र आत्मा से भरपूर हैं।

पतरस के संदेश का सार

"हे इस्राएलियों, इन बातों को सुनो : यीशु नासरी एक ऐसा मनुष्य था जिसको परमेश्वर ने सामर्थ्य के कार्य, आश्चर्यकर्मों और चिन्हों से, जो उसने उसके द्वारा तुम्हारे समक्ष किए, तुम पर प्रकट किया, जैसा कि तुम स्वयं जानते हो। इसी मनुष्य को, जो परमेश्वर की पूर्व निश्चित योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया था, तुमने विधर्मियों के हाथों क्रूस पर कीलों से ठुकवा कर मार डाला"। पतरस ने कहा कि यहूदी लोगों ने मसीह यीशु को क्रूस पर मार डाला। पवित्रशास्त्र की नबूवतों के अनुसार यीशु मसीह ने अंधों, लंगड़ों तथा अन्य प्रकार के बीमारों को चंगा किया। उसने मुर्दों को जिन्दा किया तथा अन्य अद्‌भुत आश्चर्यकर्म किए। इस प्रकार उसने यह स्पष्ट किया कि वह प्रभु परमेश्वर का अभिषिक्त एवं भेजा हुआ (मसीह) है। उसके तमाम आश्चर्यकर्मों के बावजूद अधिकतर यहूदी लोगों ने उसे परमेश्वर का जन (मसीह) मानने से इन्कार कर दिया। परन्तु प्रभु परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से पुनः जीवित कर दिया। यद्यपि यीशु मसीह हमारे पाप के लिए जिम्मेदार नहीं था, तथापि उसने स्वेच्छापूर्वक हमारे पाप का पूरा-पूरा दण्ड-मूल्य चुकता किया। इस प्रकार शैतान, पाप एवं मृत्यु पर (वह) विजयी हुआ। यदि उसने हमारे पाप का दण्ड-मूल्य चुकता नहीं किया होता अथवा वह स्वयं के पापों का दोषी होता, तो वह मृतकों में से पुनः जीवित नहीं हो सकता था। प्रभु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मसीह के बलिदान को हमारे पाप के पूर्ण दण्ड-मूल्य के रूप में स्वीकार (ग्रहण) किया, और उसे मृतकों में से पुनः जीवित किया। यदि मसीह की मृत्यु को हमारे पाप के दण्ड-मूल्य के रूप में ग्रहण नहीं किया गया होता तो हम अब तक अपने पाप के दोष-दण्ड को ही चुकाने

में फंसे रहते (प्रेरित0 2:22-23; यशा0 29:18-19, 53:4; प्रेरित0 2:24; प0कुरि0 15:14-17)।

विश्वासियों द्वारा साक्षी

"इसी यीशु को परमेश्वर ने जीवित किया जिसके हम सब साक्षी हैं"। जैसा कि प्रभु यीशु ने पहले से ही कहा था, पतरस तथा अन्य सभी उपस्थित विश्वासियों ने पवित्र आत्मा के नियंत्रण में, मसीह यीशु के पुनः जीवित हो उठने (उसके पुनरुत्थान) की साक्षी दी। पुनः जीवित हो उठने पर प्रभु यीशु ने सबसे पहले किसको दर्शन दिया था? अपने विश्वासियों को जिससे कि वे उसके पुनरुत्थान की साक्षी हों, अविश्वासियों को नहीं। अब प्रत्येक विश्वासी में पवित्र आत्मा वास करता है जिससे कि वे साहसपूर्वक उद्धारकर्ता की साक्षी दे सकें।

मसीह महिमान्वित

"इसलिए परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सर्वोच्च पद पाकर और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके, उसने इसे उण्डेल दिया जिसे तुम देखते और सुनते भी हो"। इसके बाद पतरस ने यह कहा कि प्रभु परमेश्वर ने मसीह यीशु का स्वर्गारोहण करके उसे स्वर्ग एवं पृथ्वी के शासक के रूप में अपने दाहिनी ओर विराजमान किया है। पवित्र आत्मा का उतरना, तथा प्रेरित एवं अन्य विश्वासियों का विभिन्न भाषाओं में बोलने की आश्चर्यपूर्ण क्षमता पाना भी इस सच्चाई का प्रमाण है कि मसीह यीशु स्वर्ग में पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है। अतः पतरस ने कहा कि हम सब के लिए इस सत्य को जानना-समझना बहुत आवश्यक है कि पिता

परमेश्वर ने मसीह यीशु को पुनः जीवित करके महिमान्वित किया है, और हम सबको उसे अपना उद्धारकर्ता मान कर उस पर विश्वास करना चाहिए (प्रेरित0 2:32-33; यूह0 16:7)।

यीशु ही **सत्य** है। उसने नबी के रूप में हमारे लिए परमेश्वर का वचन प्रस्तुत किया और परमेश्वर के सच्चे स्वरूप को दर्शाया। यीशु ही **मसीह** है क्योंकि वही सबसे महान महापुरोहित है। अन्य सभी पुरोहितों (याजकों) ने पशु-बलि का रक्त अर्पित किया जिससे किसी के पाप का दोष स्थाई तौर पर नहीं मिटाया जा सका और इस प्रकार मनुष्य अपने पाप की दासता से स्वतंत्र नहीं हो सकता था; किन्तु प्रभु यीशु ने अपना निष्कलंक लहू अर्पित करके पाप के दोष-दण्ड से हमें अनन्त छुटकारा प्रदान किया है। पुराना नियम काल के याजक अपनी मृत्यु तक ही याजक होते थे, लेकिन यीशु मसीह अनन्त काल तक हमारा याजक है क्योंकि अब वह मरेगा नहीं (सदा-सर्वदा जीवित है)। चूँकि यह प्रभु यीशु हमारा महायाजक है, इसलिए अस्वीकृति (rejection) के भय से मुक्त होकर हम किसी भी समय पवित्र परमेश्वर के समक्ष जा सकते हैं। समस्त अधिकार एवं सत्ता-शक्ति से सम्पन्न प्रभु यीशु पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है। वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। उसको वह नाम प्रदान किया गया है जो सर्वश्रेष्ठ है, और पिता परमेश्वर की महिमा के लिए स्वर्ग, पृथ्वी तथा पृथ्वी के नीचे का प्रत्येक घुटना उसके समक्ष झुकेगा एवं प्रत्येक जीभ यह अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है। अतः हमें प्रसन्नतापूर्वक अपने सर्वस्व के साथ उस पर आशा-भरोसा रखना चाहिए, क्योंकि वह हमारा सर्वसामर्थी उद्धारकर्ता है (यूह0 14:6; यूह0 1:18; 8:26-28; 12:49-50; दू0कुरि0 4:6; इब्रा0 3:1; रोमि0 6:9; इब्रा0 4:16; 10:19; मत्ती 28:18; प0तिमो0 6:15; फिलि0 2:10-11)।

पतरस के प्रवचन का परिणाम

"उन्होंने जब यह सुना तो उनके हृदय छिद गए और वे पतरस तथा अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, 'भाइयों, हम क्या करें?' पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी संतान के लिए और उन सब के लिए है जो दूर दूर हैं, अर्थात् वे सब जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। और बहुत सी अन्य बातों से साक्षी दे देकर वह उनसे आग्रह करता रहा कि इस कुटिल पीढ़ी से बचो"। पतरस के संदेश को सुनकर बहुत से लोगों ने **मसीह** को अस्वीकार करने के अपने पाप को पहचाना। पवित्र आत्मा ने उन्हें इस सच्चाई के प्रति कायल किया कि सच्चा मुक्तिदाता (पाप-मोचक) "परमेश्वर का पुत्र" यीशु मसीह ही है। यह प्रभु मसीह द्वारा किए गए वायदे के अनुसार ही हुआ – अर्थात् लोगों के पापी होने तथा मसीह के त्राणकर्ता होने की सत्यता की पवित्र आत्मा द्वारा कायलियत प्रदान करना। इसके अलावा प्रभु यीशु ने यह भी वायदा किया था कि पवित्र आत्मा लोगों को इस सच्चाई के प्रति भी कायल करेगा कि जो (पापी जन) मनफिराव नहीं करता वह शैतान के समान दण्ड का भागीदार होगा (प्रेरित0 2:37-40; यूह0 16:8)।

"अतः जिन लोगों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन उनमें लगभग तीन हजार व्यक्ति सम्मिलित हो गए"। पतरस का उपदेश सुनने वालों में से कई लोगों ने विश्वास किया। वे अपने पापीपन को पहचान कर प्रभु यीशु के

उद्धारप्रद कार्य पर विश्वास किए और पतरस के परामर्श के अनुसार बपतिस्मा भी लिया। उन विश्वास करने वालों ने बपतिस्मा लेकर यह प्रदर्शित किया कि पापों से छुटकारा देने वाले प्रतिज्ञात उद्धारकर्ता **मसीह** यीशु के बारे में पतरस के संदेश से वे सहमत हैं। जिनके समक्ष वे बपतिस्मा लिए थे उनके लिए इसका तात्पर्य यह था कि अपने पाप के दण्ड-मूल्य को चुकता करने के लिए अब वे यीशु मसीह की मृत्यु पर ही भरोसा कर रहे हैं (प्रेरित0 2:41)।

2

प्रतिज्ञात उद्धाकर्ता के आगमन की तैयारी में यूहन्ना द्वारा यहूदियों को बपतिस्मा देने के प्रसंग में ही पवित्र बाइबल में बपतिस्मा का पहली बार ज़िक्र किया गया है। *"उन दिनों यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यहूदियों के जंगल में आया। वह यह कह कर प्रचार किया करता था : 'मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'। तब उसके पास यरूशलेम, समस्त यहूदिया और यरदन के आसपास स्थित सारे प्रदेश के लोग निकल आए। जैसे जैसे उन्होंने अपने पापों का अंगीकार किया, उसने उन्हें यरदन नदी में बपतिस्मा दिया"।* यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यहूदियों से यह कहा कि अपने पापीपन को मान कर बपतिस्मा लेने की जरूरत है, क्योंकि प्रतिज्ञात् त्राणकर्ता आने वाला है। इस प्रकार जो लोग उसके संदेश से सहमत हुए, उन्होंने उससे बपतिस्मा लिया। यह बपतिस्मा लेकर उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के इस संदेश पर विश्वास किया है कि प्रतिज्ञात् **मसीह** आने वाला है, और वे अपने पापीपन को मानते हैं और यह भी मानते हैं कि उनके लिए एक मुक्तिदाता अत्यावश्यक है। इस प्रकार प्रभु के आगमन के लिए वह लोग अपने दिलो-दिमाग की तैयारी कर रहे थे। अपने स्वर्गारोहण से पूर्व प्रभु यीशु ने भी अपने शिष्यों को यह निर्देश दिया : *"स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के*

अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ"। प्रभु यीशु के इस आदेश का अर्थ यह है कि उसके सुसमाचार पर विश्वास करने वालों को बपतिस्मा लेना है। उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिया जाना चाहिए (मत्ती 3:1,2,5,6; मत्ती 28:18-20)।

बपतिस्मा

प्रभु यीशु द्वारा बपतिस्मा देने का आदेश यूहन्ना द्वारा किए गए बपतिस्मे के प्रचार से भिन्न था। यूहन्ना का बपतिस्मा इस बात का प्रतीक था कि व्यक्ति विशेष अपने पापीपन को मानकर प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता के आने और उद्धार करने की ताक (प्रतीक्षा) में था। प्रभु यीशु के आदेशानुसार बपतिस्मा इस बात का प्रतीक है कि विश्वासीजन अपने पापीपन को पहचान कर पाप से छुटकारे के लिए मसीह की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान पर भरोसा कर रहा है। चेलों को प्रभु यीशु ने यह निर्देश दिया कि उसके विश्वासियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दिया जाना है। अब प्रभु परमेश्वर विश्वासियों का पिता है, यीशु मसीह उनका त्राणकर्ता है और पवित्र आत्मा उनमें वास करता है।

बपतिस्मा यूनानी भाषा के "बैप्टिजो" शब्द से बना है, जिसका अर्थ है – पूरी तरह से भिगाना या डुबोना। बपतिस्मा लेते समय विश्वासीजन जिस जल में डुबोया जाता है वह उस कब्र का प्रतीक होता है जिसमें क्रूस पर मरने के बाद मसीह की लाश को गाड़ा (रखा) गया था। पवित्र बाइबल के अनुसार यीशु मसीह हमारे लिए मरा एवं हमारे लिए गाड़ा गया। वह किस मायने में हमारे लिए मरा एवं गाड़ा गया? उसी (आध्यात्मिक) मायने में, जिस मायने में पवित्र बाइबल यह कहती है कि "हम मसीह के साथ मर गए" और

जब वह गाड़ा गया तो हम "उसके साथ गाड़े गए"। हमारा बपतिस्मा दूसरों के समक्ष हमारे इस विश्वास का प्रदर्शन करता (साक्षी देता) है कि मसीह हमारे वास्ते (एवज में) मरा एवं गाड़ा गया। इतना ही नहीं पवित्र बाइबल यह भी दर्शाती है कि जैसे (परमेश्वर की दृष्टि में, आत्मिक तौर पर) हम मसीह के साथ मर गए एवं दफन किए गए, उसी प्रकार मसीह यीशु के पुनः जीवित होने पर उसके साथ नये जीवन के लिए (आध्यात्मिक तौर पर) पुनः जीवित हो चुके हैं। बपतिस्मा की डुबकी के बाद विश्वासीजन का ऊपर आना, मसीह के साथ नए जीवन में जीवित हो उठने का प्रतीक माना जाता है। अब जो नया जीवन मिला है, वह मसीह का जीवन है। हाँ, जब वह मरा तब हम भी मर गए, परन्तु वह पुनः जीवित हो गया और हमें भी अनन्त जीवन मिला है। विश्वासीजन का जल में से ऊपर आना हमारे इस विश्वास को दर्शाता है कि मसीह हमारे वास्ते (एवज़ में) मृतकों में से जीवित हुआ (रोमि0 5:8; कुलु0 2:12; रोमि0 6:3-5; रोमि0 6:4; गला0 2:20)।

बपतिस्मा : क्या नहीं?

केवल मसीह द्वारा हमारे लिए किया गया कार्य मात्र ही हमारे उद्धार का आधार है। यद्यपि आज्ञाकारी मसीही जीवन के लिए बपतिस्मा जरूरी है, लेकिन उद्धार के लिए आवश्यक नहीं है (उद्धार का अंग नहीं है)। उद्धार के लिए केवल मसीह पर विश्वास मात्र ही आवश्यक है। पवित्र आत्मा की अगुवाई से मन-परिवर्तन बगैर बपतिस्मा निरर्थक है। बपतिस्मा लेने से उद्धार नहीं मिलता। बपतिस्मा हमें परमेश्वर की संतान नहीं बनाता। हाँ, बगैर विश्वास का बपतिस्मा शरीर एवं वस्त्रों को गीला कर सकता है। हमारे पापों के

बदले मसीह की (सलीबी) मृत्यु पर विश्वास करते समय हम परमेश्वर की संतान हो गए। यदि हम परमेश्वर की संतान हैं तो मरने के बाद बगैर बपतिस्मा के भी स्वर्गलोक जाएंगे। मसीह की मृत्यु के समय उनके बगल में एक अन्य क्रूस पर मरने वाले एक अपराधी का उदाहरण इस सच्चाई का एक अकाट्य प्रमाण है। मसीह पर उस अपराधी के 'विश्वास मात्र' से उसी दिन स्वर्गलोक जाने का उसे ईश्वरीय आश्वासन मिला। प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में, बपतिस्मा हमें हमारे पापों से शुद्ध नहीं करता है। हमारे पाप का पूर्णरूपेण दण्ड-मूल्य केवल मसीह के लहू मात्र द्वारा चुकता किया गया। अतः मसीह का लहू मात्र हमें हमारे पाप से शुद्ध करने में समर्थ है (इफि0 2:8,9; तीतुस 3:5; लूका 23:43; इब्रा0 9:14)।

बपतिस्मा का महत्व

जब कोई व्यक्ति सुसमाचार संदेश को सुन कर यह समझता है कि वह अपने पाप में खोया हुआ है, परमेश्वर का विरोधी है; किन्तु प्रभु परमेश्वर उससे प्रेम करता है और उसने अपने प्रेम को मसीह में इस प्रकार प्रकट किया है कि मसीह हमारे पाप के बदले मर गया। पवित्र आत्मा द्वारा मन की आँखें खोले जाने पर ऐसा व्यक्ति मसीह के इस प्रेम-संदेश को समझ कर उस पर विश्वास करता है। प्रभु यीशु ने प्रत्येक ऐसे विश्वासी को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी है। इस बपतिस्मा के द्वारा विश्वासीजन यह दर्शाता है कि अब अपने उद्धार के लिए वह स्वयं पर अथवा स्व धर्म-कर्म पर भरोसा नहीं करता, बल्कि मसीह की मृत्यु, दफन एवं पुनरुत्थान को इसका एकमात्र आधार मानता है। बपतिस्मा के द्वारा विश्वासीजन मसीह की मृत्यु, दफन तथा उसके पुनरुत्थान के साथ अपनी

पहचान (एकता) को दर्शाता है; अर्थात् मसीह की मृत्यु, दफन एवं पुनरुत्थान को अपनाता (आत्मसात करता) है (रोमि0 5:6-8; मत्ती 28:19)।

यदि आपने बपतिस्मा नहीं लिया है तो बपतिस्मा के अर्थ पर विचार करने के बाद आप स्वयं पवित्रशास्त्र में प्राप्त इस प्रश्न पर विचार कर सकते हैं : "मेरे बपतिस्मा लेने में मेरे लिए क्या रुकावट है?" पवित्र आत्मा द्वारा यह उत्तर भी पवित्र वचन में पाया जाता है : "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो अवश्य ले सकता है"। क्या आप सच्चाई के साथ यह "विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है"? (प्रेरित 8:36-37)।

3

पतरस के प्रचार के बाद पिन्तेकुस्त के दिन तीन हजार नये विश्वासी कलीसिया में शामिल हो गये। वे प्रभु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लिये अपने प्रभु एवं उद्धारकर्ता यीशु मसीह के बारे में प्रेरितों से शिक्षा प्राप्त करने की आस लगाए रहे। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से प्रेरितगण इन नये विश्वासियों को मसीह में प्राप्त नये जीवन की शिक्षा देना प्रारम्भ किए। प्रारम्भिक कलीसिया में इस नये जीवन के जो चिन्ह दिखायी दिए उनका इस पाठ में संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। वही पैटर्न आज के विश्वासियों पर भी लागू होता है। प्रभु यीशु मसीह में हम क्या हैं और हमारे जीवन में तथा हमारे द्वारा वह क्या करना चाहता है, इसके बारे में सत्य शिक्षा मिलना बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रेरितों से शिक्षा

"अतः जिन लोगों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन उनमें लगभग तीन हजार लोग सम्मिलित हो गए। और वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने... में लवलीन रहे"। अपने स्वर्गारोहण से पूर्व प्रभु यीशु ने अपने चेलों को यह निर्देश दिया था कि "जो जो आज्ञाएँ दी हैं" वे नये विश्वासियों को "उनका पालन करना" सिखाएँ। क्या बातें सिखानी थीं? प्रभु यीशु के वचन। जिन बातों की शिक्षा प्रभु यीशु ने उन्हें दी थी, उन बातों को नये विश्वासियों को भी सिखाना था। जब वह इस धरती पर था तब प्रभु यीशु अन्य बहुत सी बातें भी अपने चेलों को सिखाना चाहता था, लेकिन वे चेले उन बातों को उस समय नहीं

समझ सकते थे, क्योंकि तब तक उन्हें पवित्र आत्मा नहीं मिला था। प्रभु यीशु यह समझता था, और इसीलिए उसने यूहन्ना 14:26 के अनुसार अपने चेलों को समझाया कि जब पवित्र आत्मा आएगा तब वह उन्हें "सब बातें सिखाएगा" और प्रभु की बातों का "स्मरण कराएगा"। अतः जब प्रभु के वायदे के अनुसार पवित्र आत्मा आया तब उसने प्रभु यीशु द्वारा उन्हें सिखाई गई सब बातों की याद दिलायी तथा प्रभु की इच्छानुसार नई बातें भी सिखाईं। तब प्रेरित लोगों ने यरूशलेम की नई मण्डली को प्रभु यीशु के वचन की शिक्षा दी। आगे चलकर इन परमेश्वर-प्रदत्त सच्चाईयों को "नया नियम" के रूप में लिपिबद्ध किया गया ताकि हम भी इनका ज्ञान प्राप्त करके इन पर विश्वास करें और परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करें। प्रभु के वचन को पढ़ने या सुनने पर समझने में सहायता करने के लिए हमें भी पवित्र आत्मा प्रदान किया गया है। लिपिबद्ध पवित्रशास्त्र कैसे उपलब्ध हुआ? इसका जवाब दूसरा पतरस की पुस्तक के पहले अध्याय में पाया जाता है : *"पर पहिले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी व्यक्तिगत विचारधारा का विषय नहीं है, क्योंकि कोई भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परन्तु लोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा परमेश्वर की ओर से बोलते थे"।*

परमेश्वर के वचन को सुनना एवं सीखना (समझना) हमारे आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक (महत्वपूर्ण) है। पवित्र बाइबल के अनुसार यह विश्वासीजन के लिए "दूध" एवं "ठोस भोजन" दोनों का काम करता है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बातचीत करता है और उसके वचन के द्वारा ही हम उसके ज्ञान में बढ़ते हैं। जितना अधिक हम उसके वचन को "सुनते" हैं

उतना ही अधिक उस पर हमारा विश्वास बढ़ता जाता है। प्रभु यीशु कल, आज और सदा-सर्वदा एक-सा है। पवित्र वचन की सुस्पष्ट शिक्षा है कि परमेश्वर कभी बदलता नहीं। वह सदैव एक समान है और हमारी तरह बदलता नहीं। अतः हम उसके अटल वचन पर पूरा भरोसा कर सकते हैं। हमारे लिए उसके वचन में परमेश्वर की भली-भावती एवं सिद्ध इच्छा प्रकट की गई है। उसकी कलीसिया के लिए परमेश्वर के आदेश अटल हैं। आज की मण्डली के लिए प्रभु का वचन उतना ही अनिवार्य है जितना कि प्रेरितों और नबियों के लिखते समय। प्रत्येक मसीही विश्वासी की यह जिम्मेदारी है कि परमेश्वर के वचन को जाने, समझे एवं उस पर विश्वास करे तथा ऐसा ही करने की अन्य विश्वासियों को शिक्षा दे (प्रेरित0 2:41-42अ; मत्ती 28:19-20; यूह0 16:12; यूह0 14:26; दू0पत0 1:20-21; प0पत0 2:2; इब्रा0 5:12-14; रोमि0 10:17; इब्रा0 13:8; गिनती 23:19; मलाकी 3:6)।

विश्वासियों के साथ संगति

"वे प्रेरितों से लगातार ***...संगति...*** *रखने में लवलीन रहे"।* नये विश्वासी अन्य विश्वासियों के साथ मित्रतापूर्ण समय व्यतीत करना प्रारम्भ किए। वे अविश्वासियों से अलग सामूहिक तौर पर एकत्रित होना शुरू किए। परमेश्वर की संतान तथा पवित्र आत्मा पाए लोग होने के कारण वे एक-दूसरे से विशिष्ट घनिष्ठता में जुड़े थे। प्रभु की संतान होने के कारण हम संसार (सांसारिकता) से अलग किए गये हैं कि प्रभु के विश्वासियों की सहभागिता में रहें। इसका मतलब यह नहीं कि अविश्वासियों से मिलना-जुलना त्याग दें; बल्कि प्रभु की साक्षी होने के उद्देश्य से अविश्वासियों के साथ भी सम्पर्क रखना जरूरी है (प्रेरित0 2:41-42; प0यूह0 1:3)।

प्रभु-भोज (रोटी एवं दाखरस)

"वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, ***रोटी तोड़ने.*** *.. में लवलीन रहे"।* उस समय की मण्डली के लोग जब सामूहिक तौर पर एकत्रित होते थे तो उनके पापों के लिए बलिदान हुए यीशु की देह एवं उसके लहू को स्मरण करते थे।

अपने गिरफ्तार होने से पूर्व अपने चेलों के साथ **अन्तिम भोज** के समय प्रभु यीशु ने उन्हें यह दर्शाया कि उसकी मृत्यु को वे कैसे स्मरण कर सकते हैं। उसने रोटी ली और उसे तोड़ कर प्रत्येक चेले को एक-एक टुकड़ा दिया। तब उसने अपने चेलों से कहा कि उसके स्वर्गारोहण के पश्चात् उन्हें भी एकत्रित होकर इसी प्रकार करना है। अतः प्रभु-भोज में यीशु के इसी उदाहरण का हम भी अनुसरण करते हैं। उस अंतिम भोज के समय प्रभु यीशु ने रोटी लेकर आशिष मांगी और उसे वहाँ उपस्थित चेलों में बाँटा और वे सब एक साथ खाए। इसी प्रकार हम भी प्रभु-भोज के समय परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं और हमारे एवज़ में क्रूस पर दी गई मसीह की देह रूपी बलिदान को स्मरण करते हैं।

रोटी के पश्चात् प्रभु यीशु ने एक प्याले में रखे दाख-रस को लिया और उसमें से प्रत्येक चेले को (एक घूंट) पीने को कहा। इस रस को पीते समय उन्हें उनके लिए बहाए जाने वाले मसीह के लहू को स्मरण करना था। आज के विश्वासी लोग भी यही करते हैं और प्रभु-भोज के प्याले से रस-पान करके अपने पापों के दण्ड-मूल्य के रूप में बहाए गये मसीह के लहू को स्मरण करते हैं (प्रेरित0 2:41-42; प0कुरि0 11:23-26; मर0 14:22-24)।

प्रार्थना

"वे... प्रार्थना करने में लवलीन रहे"। यरूशलेम की प्रारम्भिक कलीसिया पिता परमेश्वर से प्रार्थना करने में समय बिताती थी। जब प्रभु यीशु इस धरती पर रहा तो प्रार्थना उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग थी। यीशु मसीह यह जानता था कि उसे अपने सारे बात-व्यवहार एवं कार्यों के लिए पिता परमेश्वर की सहायता और अगुवाई आवश्यक है, अतः उसने प्रार्थना में बहुत समय दिया। उदाहरणार्थ : अपने चेलों का चयन करने से पूर्व उसने पिता से प्रार्थना किया, क्रूस पर जाने से पूर्व गतसमनी नामक बगीचे में जाकर प्रार्थना में समय बिताया। यदि परमेश्वर-पुत्र (मसीह) ने प्रार्थना किया तो हमारे लिए वैयक्तिक तौर पर, पारिवारिक तौर पर और सामूहिक (कलीसियाई) तौर पर प्रार्थना करते रहना कितना जरूरी है? (प्रेरित0 2:41-42; मर0 1:35; लूका 6:12,13; मर0 14:32-36)।

कार्य-व्यवहार

"सब विश्वासी मिल-जुलकर रहते थे और उनकी सब वस्तुएँ भी साझे में थीं। वे अपनी सम्पत्ति व सामान बेच कर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी सब को बाँट दिया करते थे"। विश्वासी लोग आपस में मिल-बांटकर एक दूसरे के साथ रहते थे; विशेषकर निर्धन विश्वासियों के प्रति सहायतापूर्ण नजरिया रखते थे। यरूशलेम के इन विश्वासियों के मिल-बांटकर रहने वाले जीवन-व्यवहार का कभी-कभी हम यह अर्थ लगाने लगते हैं कि दूसरे लोगों को अपनी धन-दौलत का हिस्सा हमें भी देना चाहिए। यह लालचीपन है। बेशक प्रभु के विश्वासियों को दूसरों की ज़रूरत में सेवा-सहायता करना चाहिए। बहरहाल, हमें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि अन्य विश्वासी

हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकता-पूर्ति करें (या खर्च चलाएँ) (प्रेरित0 2:44-45)।

परमेश्वर की स्तुति-प्रशंसा

"वे एक मन होकर दिन-प्रतिदिन मंदिर में जाते और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से एक साथ भोजन किया करते थे। वे परमेश्वर की स्तुति किया करते थे। सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते जाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला दिया करता था"। प्रारम्भिक कलीसिया परमेश्वर-प्रदत्त पापों की क्षमा, अनन्त जीवन तथा दैनिक आवश्यकताओं के लिए प्रभु परमेश्वर की स्तुति करती रही (प्रेरित0 2:46-47)।

सुसमाचार साक्षी

"वे परमेश्वर की स्तुति किया करते थे। सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला दिया करता था"। विश्वासियों से प्रभु के कार्य के बारे में सुन कर प्रतिदिन नये-नये लोग यरूशलेम की मंडली में शामिल होते रहे। हमारी भी यह जिम्मेदारी है : दूसरों को प्रभु के बारे में बताते रहना। पवित्र आत्मा ही हमारी इस दिशा में अगुवाई करेगा कि कब, कहाँ और क्या कहना है, और वही लोगों के मन की आँखें खोलेगा कि वे प्रभु के संदेश को समझें एवं विश्वास करें (प्रेरित0 2:47; लूका 12:12; प्रेरित0 16:14)।

4

इस अध्याय में हम पतरस और यूहन्ना से सम्बंधित कुछ खास बातों पर विचार करेंगे। यह दोनों व्यक्ति प्रभु यीशु के शिष्य थे। इन दोनों को पवित्र आत्मा ने नया नियम की कुछ पुस्तकें लिखने में भी इस्तेमाल किया।

लंगड़े मनुष्य की चँगाई

"पतरस और यूहन्ना संध्या को तीन बजे प्रार्थना के समय मंदिर जा रहे थे"। प्रभु यीशु के बलिदान होते समय परमेश्वर ने यरूशलेम में यहूदियों के मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फाड़ दिया था, जिससे लोग यह जानें कि अब उसके समक्ष ग्रहण-योग्य होने के लिए पशु-बलि अथवा अन्य किसी भेंट चढ़ावे की जरूरत नहीं है; लेकिन इसके बावजूद यहूदी लोग उस मंदिर में जाया करते थे। बाइबल में इस बात का जिक्र नहीं है कि उस फटे परदे का क्या हुआ। सम्भवतः याजकों ने उसकी मरम्मत कर दी। अधिकांश यहूदी यह नहीं मानते थे कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र (मसीह) है और यह भी नहीं मानते थे कि वह मृतकों में से पुनः जीवित हो उठा है। इस प्रकार यहूदी लोगों ने उस मंदिर में पशु-बलि की प्रथा को कायम रखा। **प्रेरितों के काम** नामक पुस्तक के लेखक, लूका ने अपनी पुस्तक में प्रभु के उस आश्चर्यकर्म का वर्णन किया है जो उसने पतरस और यूहन्ना के मंदिर जाते समय किया। *"और वे लोग एक मनुष्य को जो जन्म से लंगड़ा था ले जा रहे थे, जिसे वे प्रतिदिन मंदिर के उस फाटक पर जो 'सुन्दर' कहलाता है, बैठा दिया करते थे कि वह मंदिर में प्रवेश करने वालों से भिक्षा मांगे।*

जब उसने देखा कि पतरस और यूहन्ना मन्दिर में प्रवेश करने पर हैं तो वह भिक्षा मांगने लगा। तब पतरस ने यूहन्ना के साथ उसे एकटक देख कर कहा, 'हमारी ओर देख!' वह कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ध्यान से देखने लगा"। (प्रेरित0 3:1; प्रेरित0 3:2-5)।

आपका क्या विचार है? पतरस और यूहन्ना उस भिखारी को क्या देते? भोजन? रुपया-पैसा? वस्त्र? *"तब पतरस ने कहा, 'मेरे पास चाँदी और सोना तो है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ – यीशु मसीह नासरी के नाम से चल-फिर!"* पतरस ने उस लंगड़े को किसके नाम एवं किसकी सामर्थ्य से उठ कर चलने-फिरने का आदेश दिया? पतरस ने स्पष्ट तौर पर "यीशु मसीह नासरी के नाम" से चलने-फिरने के लिए कहा। पतरस यह चाहता था कि वह लंगड़ा उस व्यक्ति के बारे में जान-समझ सके जिसके नाम से उसे चलने-फिरने की आज्ञा दी गई है। यद्यपि उस समय के अधिकांश यहूदी यीशु को प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता स्वीकार नहीं किए लेकिन यह सर्वविदित था कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया है। बहरहाल उस लंगड़े के बारे में आगे की घटना पर ध्यान दें! *"फिर उसने उसका दाहिना हाथ पकड़कर उसे उठाया, और तुरन्त उसके पैरों और टखनों में शक्ति आ गई"।* (प्रेरित0 3:6; प्रेरित0 3:7-8)।

विस्मय

"सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए देख कर, उसे पहिचान लिया कि यह वही है जो मंदिर के 'सुन्दर' फाटक पर बैठकर भिक्षा मांगा करता था, और जो कुछ उसके साथ हुआ था उसे देखकर वे आश्चर्य और विस्मय से भर गए। जब वह पतरस और यूहन्ना का हाथ पकड़े हुए था तो सब

लोग आश्चर्यचकित होकर उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता था उनके पास दौड़े आए"। अनेक वर्षों से मंदिर के पास भीख माँगने वाले उस लंगड़े व्यक्ति को उछलते-दौड़ते देखकर लोग आश्चर्य चकित थे। लोगों के लिए इस आश्चर्यकर्म को इनकार करना असम्भव था। केवल जानबूझकर अविश्वास करने वाले ही इस सच्ची घटना की अनदेखी कर सकते थे (प्रेरित0 3:9-11)।

पतरस का उपदेश

"परन्तु जब पतरस ने यह देखा तो उसने लोगों से कहा, 'हे इस्राएली लोगों, तुम क्यों आश्चर्य करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार ताक रहे हो मानो हमने अपनी ही सामर्थ्य और शक्ति से इस मनुष्य को चलने योग्य बना दिया? इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमान्वित किया, जिसे तुमने पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का निर्णय किया तो तुमने उसके सामने उसे अस्वीकार किया और एक हत्यारे के लिए विनती की कि वह तुम्हारे लिए छोड़ दिया जाए, परन्तु जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिलाया, जिसके हम गवाह हैं'।" प्रभु यीशु का यह वायदा था कि जब उसके चेले पवित्र आत्मा पाएंगे और वह उनमें वास करेगा, तब वे प्रभु की साक्षी होंगे। उस लंगड़े की चंगाई के बाद पतरस और यूहन्ना के चारों ओर एक भीड़ जमा हो गई, और उन्हें प्रभु यीशु की साक्षी देने का एक सुनहरा अवसर मिला। पतरस ने यहूदियों को परमेश्वर की ओर से भेजे गए प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता यीशु को क्रूस पर चढ़ा कर मार डालने का दोषी ठहराया (प्रेरित0 3:12-15)।

"उसी के नाम में – अर्थात् उस विश्वास द्वारा जो यीशु के नाम पर है – इस मनुष्य को जिसे तुम जानते और देखते भी हो, बल मिला है। उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसे सब के सामने पूर्ण चंगाई दी है"। पतरस ने इस बात को स्पष्ट किया कि वह लंगड़ा पतरस की किसी शक्ति-सामर्थ्य से चंगा नहीं हुआ है बल्कि मृतकों में से जीवित हो उठे यीशु की सामर्थ्य से चंगा हुआ है, जिस पर पतरस और यूहन्ना ने भरोसा किया था। *"अब हे भाइयों, मैं जानता हूँ कि तुमने यह काम अज्ञानतावश किया और वैसा ही तुम्हारे अधिकारियों ने भी किया। परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से पहिले ही बता दिया था, कि उसका मसीह दुख उठाएगा, उसने इस रीति से पूर्ण किया। इसलिए पश्चाताप करो और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिससे कि प्रभु की उपस्थिति से सुख-चैन के दिन आएं"।* तब पतरस ने उन लोगों को **मसीह** यीशु के बारे में मन-परिवर्तन (पश्चाताप) करके उसे अपना उद्धारकर्ता मानकर उस पर विश्वास करने की आवश्यकता को दर्शाया। *"मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मेरे समान एक नबी खड़ा करेगा। जो कुछ वह तुमसे कहे उस पर ध्यान देना। और ऐसा होगा कि प्रत्येक मनुष्य जो उस नबी की बातों पर ध्यान नहीं देगा, लोगों में से पूर्णतः नाश कर दिया जाएगा'। और उसी प्रकार शमूएल और उसके पश्चात आने वाले जितने नबियों ने नबूवत की, उन सब ने इन दिनों की घोषणा की"।* इस प्रकार नबियों की पुस्तकों का हवाला देकर पतरस ने उन यहूदियों से यह कहा कि सच्चे उद्धारकर्ता अर्थात् प्रतिज्ञात् मसीह को अस्वीकार करने वाले, परमेश्वर से अलग कर दिए जाएंगे और अनन्तकालीन दण्ड के भागीदार होंगे (प्रेरित0 3:16; प्रेरित 3:17-19; प्रेरित0 3:22-24)।

अब्राहम से वाचा

"तुम ही तो नबियों की और उस वाचा की संतान हो जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम से यह कहते हुए तुम्हारे पूर्वजों के साथ बाँधी थी : 'तेरे ही वंश के द्वारा संसार के समस्त कुल आशिष पाएंगे'। परमेश्वर ने तुम्हारे लिए अपने सेवक को जिलाकर उसे पहिले तुम्हारे पास भेजा कि तुम में से प्रत्येक को आशिष दे अर्थात् बुराइयों से फेरे"। पतरस ने उन यहूदियों को याद दिलाया कि (मसीह) यीशु की मृत्यु एवं पुनरुत्थान अब्राहम को दी गई ईश्वरीय वाचा के अनुसार है। यीशु मसीह द्वारा पापों की क्षमा सर्वप्रथम यहूदियों को प्रदान की गई, तत्पश्चात् संसार के अन्य सब लोगों को। बेशक, बाइबलीय मायने में यहूदी लोग विशेषाधिकार प्राप्त लोग थे। प्रभु परमेश्वर ने उनके द्वारा स्वयं को प्रकट करने हेतु पृथ्वी की समस्त जातियों में से उन्हें चुना था। उन्हें इसलिए नहीं चुना गया था कि वे परमेश्वर के योग्य थे, बल्कि उनका चुना जाना पूर्णरूपेण ईश्वरीय अनुग्रह था (प्रेरित0 3:25-26; व्यव0 7:7-8)।

पतरस और यूहन्ना गिरफ्तार

"जब वे लोगों से बातें कर रहे थे तो याजक, मन्दिर के सिपाहियों का कप्तान तथा सदूकी उनके पास आए, और इस बात से अत्यन्त क्रोधित थे कि वे लोगों को उपदेश दे रहे हैं और यीशु का उदाहरण देकर मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने उन्हें पकड़ा और अगले दिन तक हवालात में रखा, क्योंकि संध्या हो चुकी थी"। उस मंदिर के पास पतरस ने साहसपूर्वक यह संदेश दिया, और वहाँ उपस्थित सब लोगों को यह सुनायी दिया। बेशक, प्रभु परमेश्वर उसे अपनी साक्षी के रूप में इस्तेमाल कर रहा

था। तब ख्रीष्त को मृत्यु-दण्ड का दोषी ठहराने वाले यहूदी अगुए यह सब सुनकर आग-बबूला हो उठे। उन्होंने पतरस और यूहन्ना को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया (प्रेरित0 4:1-3)।

"फिर भी वचन के सुनने वालों में से बहुत से लोगों ने विश्वास किया और उनकी संख्या लगभग पाँच हजार पुरुषों की हो गई"। यद्यपि पतरस और यूहन्ना को जेल में डाल दिया गया, लेकिन उस संदेश के द्वारा प्रभु परमेश्वर ने बहुत से लोगों को उनके पापीपन का ज्ञान दिया और इस प्रकार बहुत से लोगों ने यीशु को अपना उद्धारकर्ता मान कर उस पर विश्वास किया (प्रेरित0 4:4)।

"दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके अधिकारी, प्राचीन और शास्त्री यरूशलेम में एकत्रित हुए। महायाजक हन्ना, काइफा, यूहन्ना, सिकन्दर और महायाजक के घराने के सब लोग भी वहाँ थे"। इन्हीं लोगों ने यहूदा इस्करियोती को भी मसीह के प्रति विश्वासघात के लिए घूस दिया था। *"फिर वे उन्हें बीच में खड़ा करके पूछने लगे, 'तुम लोगों ने यह काम किस सामर्थ्य से अथवा किस नाम से किया है'?"* (प्रेरित0 4:5-6; प्रेरित0 4:7)।

पतरस का जवाब

"तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, 'प्रजा के अधिकारियों और प्राचीनों, यदि एक दुर्बल मनुष्य के साथ की गई भलाई के विषय में आज हमसे पूछ-ताछ की जाती है कि यह मनुष्य कैसे चंगा किया गया, तो तुम सब को और समस्त इस्राएल के लोगों को मालूम हो जाए कि यीशु मसीह नासरी के नाम से – जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया और जिसे परमेश्वर ने मृतकों में से जिला उठाया – इसी नाम से यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला-चंगा

खड़ा है। यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया था, परन्तु यही कोने का पत्थर बना'।" पतरस तो अन्तर्वासी पवित्र आत्मा की अगुवाई पर आश्रित था। पवित्र आत्मा पर भरोसा करने के कारण ही आत्मा सही शब्द प्रदान करके उसे इस्तेमाल कर सका। हम अपनी अकलमंदी और अपनी ताकत के भरोसे परमेश्वर की इच्छा-योजना (सेवकाई) को नहीं कर सकते। इसके विपरीत, पवित्र आत्मा पर आश्रित रहने से, वह ईश्वरीय इच्छा-योजना के अनुसार कार्य करने की क्षमता प्रदान करेगा। इसी बात को पौलुस इस प्रकार कहता है : *"मुझे सामर्थ्य प्रदान करने वाले ख्रीष्त के द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ"।* इस प्रकार, मसीह को क्रूस पर चढ़ाने वाले यहूदी अगुवों का पतरस ने निर्भीकतापूर्वक सामना किया, क्योंकि वह पवित्र आत्मा पर आश्रित रहा और उसी की अगुवाई एवं प्रेरणा से समुचित बातों को सही समय पर बोला। परमेश्वर का वचन सीखने पर और पवित्र आत्मा पर आश्रित रहने पर हम भी उसकी इच्छा योजना के अनुसार परमेश्वर के गवाह हो सकेंगे। इसके बाद, पतरस ने यीशु मसीह को "कोने का पत्थर" कहा। हाँ, उन यहूदियों ने उसे अस्वीकार कर दिया था, लेकिन उसी "कोने के पत्थर" अर्थात् मसीह को पृथ्वी और स्वर्ग में सबसे महत्वपूर्ण और सर्वोच्च स्थान मिला है। *"किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम उद्धार पाएं"।* इस प्रकार पतरस ने स्पष्ट किया कि केवल यीशु मसीह ही पापियों का उद्धारकर्ता है (प्रेरित0 4:8-11; फिलि0 4:13; प्रेरित0 4:12)।

क्या ख्रीष्त से घृणा करने वाले और उसे क्रूस पर चढ़ाने वाले इन यहूदी अगुवों का पत्थर दिल पतरस की बातों से पिघल

गया? नहीं। हाँ, उन्होंने पतरस और यूहन्ना के साहस को देखकर आश्चर्य किया, लेकिन उनके संदेश को अस्वीकार (तिरस्कार) किया। *"जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा और यह जाना कि वे अशिक्षित और साधारण मनुष्य हैं तो वे अचम्भित हुए और जान गए कि वे यीशु के साथ रहे हैं। तब उस मनुष्य को जो चंगा हुआ था उनके साथ खड़े देखकर वे निरुत्तर हो गये, परन्तु उनको महासभा से बाहर जाने की आज्ञा देकर वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, और कहने लगे, 'हम इन मनुष्यों से क्या करें? क्योंकि इनके द्वारा एक प्रत्यक्ष आश्चर्यकर्म हुआ है जो यरूशलेम के सब रहने वालों पर प्रकट है और हम उसे अस्वीकार नहीं कर सकते। परन्तु हम इन्हें धमकाएँ कि वे किसी मनुष्य से इस नाम को लेकर फिर चर्चा न करें जिससे कि यह बात लोगों में और अधिक न फैले'। उन्होंने उन्हें बुलाकर आज्ञा दी कि यीशु का नाम लेकर न तो कोई चर्चा करें और न ही कोई शिक्षा दें"* (प्रेरित0 4:13-18)।

पतरस एवं यूहन्ना का उत्तर

अपने स्वर्गारोहण से पहले प्रभु यीशु ने अपने चेलों को सब जातियों में उसकी साक्षी होने का आदेश दिया था। यहाँ यहूदी अगुवे उनका मुँह बन्द करना चाह रहे थे और यीशु का प्रचार करने से रोक रहे थे। अब पतरस और यूहन्ना किसकी बात मानते? पवित्र बाइबल यह कहती है कि हमें अपने शासक की आज्ञा माननी चाहिए। लेकिन जब शासक-वर्ग परमेश्वर के वचन के उल्लंघन की बात कहे, तब? पवित्रशास्त्र का उत्तर स्पष्ट है कि हमें परमेश्वर के वचन के विरुद्ध नहीं जाना है। पतरस और यूहन्ना का जवाब भी यही दर्शाता है : *"परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, 'तुम ही न्याय करो : क्या परमेश्वर की दृष्टि में यह उचित है कि*

परमेश्वर की आज्ञा से बढ़कर तुम्हारी बात मानें? क्योंकि यह तो हमसे हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।" (प्रेरित0 4:19-20; रोमि0 13:1-4)।

हवालात से छुटकारा

"तब उन्होंने उनको और धमकाकर तथा दण्ड देने का कोई कारण न पाकर लोगों के भय के कारण छोड़ दिया क्योंकि इस घटना के कारण लोग परमेश्वर की प्रशंसा कर रहे थे। जिस मनुष्य पर चंगाई का यह आश्चर्यकर्म हुआ था, उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी। जब उन्हें वहाँ से छोड़ दिया गया तो वे अपने साथियों के पास गए और जो कुछ मुख्य याजकों और प्राचीनों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया"। हवालात से छोड़ दिए जाने के बाद पतरस और यूहन्ना स्थानीय विश्वासियों की मंडली में जाकर उनके साथ जो कुछ हुआ था, उसे बताया। यह सब सुनकर विश्वासीगण डर-भय अथवा शिकवा-शिकायत के बजाय प्रभु परमेश्वर के प्रति और विश्वासपूर्ण प्रतिक्रिया दर्शाए। *"जब उन्होंने यह सुना तो एकचित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर को पुकारा, 'हे प्रभु, तू ने ही आकाश, पृथ्वी और समुद्र तथा सब कुछ जो उसमें है, बनाया। तू ने ही पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, "गैर यहूदियों ने रोष क्यों किया, और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों गढ़ते हैं। प्रभु के विरोध में और उसके मसीह के विरोध में, पृथ्वी के राजा उठ खड़े हुए, और शासक एक साथ एकत्रित हो गए। क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में जिसका अभिषेक तू ने किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी ग़ैर यहूदियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में एकत्रित हुए; कि वही करें जो कुछ तेरी सामर्थ्य और योजना में पहिले से निर्धारित किया*

गया था। अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख, और अपने दासों को यह वरदान दे कि तेरे वचन को पूर्ण निर्भयता से सुनाएँ। तू चंगा करने के लिए अपना हाथ बढ़ा और आश्चर्यकर्म और चिन्ह तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम के द्वारा किए जाएँ" (प्रेरित0 4:21-23; प्रेरित0 4:24-30)।

स्थानीय मण्डली को सब कुछ बताने के बाद वे यह प्रार्थना किए कि प्रभु की साक्षी देते रहने से वे भयभीत होकर पीछे न हटें। ध्यान दें कि उनकी यह प्रार्थना परमेश्वर के वचन के अनुसार थी। वे परमेश्वर के वचन को जानते थे और उसी दृष्टिकोण से प्रार्थना किए। हमें भी परमेश्वर के वचन का ज्ञान होना चाहिए ताकि प्रार्थना करते समय प्रभु की इच्छा के प्रति जागरूक रहें। क्या प्रभु परमेश्वर ने उन विश्वासियों की प्रार्थना को सुना? *"जब वे प्रार्थना कर चुके तो वह स्थान जहाँ वे एकत्रित थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन निर्भीकता से सुनाने लगे"*। क्या पतरस और यूहन्ना ईश्वर की इच्छा-योजना के अनुसार सेवा करना बन्द कर दिए? क्या उन्होंने यीशु के सुसमाचार को बताना बन्द कर दिया? नहीं। *"विश्वासियों का समुदाय एक मन और एक प्राण था। उनमें से कोई भी अपनी सम्पत्ति को अपनी नहीं कहता था, परन्तु उनका सब कुछ साझे का था। और प्रेरित बड़ी सामर्थ्य के साथ प्रभु यीशु के पुनरुत्थान की साक्षी देते थे, और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था"*। रोमियों की पत्री के आठवें अध्याय के अट्ठाईसवें-उन्तीसवें पदों के अनुसार हमारे जीवन में ऐसा कुछ नहीं हो सकता जिससे प्रभु परमेश्वर नहीं निपट सकता। सबसे कठिन, कष्टकर और निराशाजनक परिस्थितियों पर भी प्रभु परमेश्वर का ऐसा नियंत्रण रहता है कि उनके द्वारा वह अपने प्रेमियों एवं

विश्वासियों में भलाई ही उत्पन्न करता है। प्रारम्भिक कलीसिया के इस अनुभव से तीन खास लाभ हुए : विश्वासियों के परस्पर प्रेम एवं एकता में मजबूती आई, वे पवित्र आत्मा पर आश्रित जीवन जीने का महत्व सीखने लगे, और उन पर परमेश्वर की आशीष बनी रही (प्रेरित0 4:31; 4:32-33; रोमि0 8:28-29)।

5

अविश्वासियों की ओर से भीषण विरोध के बावजूद विश्वासी लोग निष्ठापूर्वक प्रभु की साक्षी देते रहे और कलीसिया की तेजी से वृद्धि हुई। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि सतावट की परिस्थिति में भी विश्वासीगण अपने विश्वास में स्थिर रहे और एक दूसरे के प्रति प्रेम में बढ़ते गये। इस पाठ में हम एक ऐसी समस्या के बारे में पढ़ेंगे जो इस नवजात मण्डली के लिए घोर विरोध, उत्पीड़न या मृत्यु-दण्ड की धमकियों से भी ज्यादा हानिकारक थी। यह समस्या बाहरी अविश्वासियों से नहीं आयी, बल्कि मण्डली के मध्य के विश्वासियों से। अन्दरूनी ईष्या-द्वेष एवं लड़ाई-झगड़ा ऐसी विनाशक ताकते हैं जिनके द्वारा अविश्वासियों के समक्ष कलीसिया की साक्षी (रूपी मशाल) को शैतान बुझाने लगता है। जब विश्वासी लोग परस्पर लड़ाई-झगड़े एवं ईष्या-द्वेष करते हैं तो भ्रम में फँसते हैं और इस प्रकार प्रभु की सेवकाई में रुकावट आती है (याकूब 3:16)।

असहमति

"उन दिनों जब चेलों की संख्या बढ़ रही थी तब यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों का इब्रानी बोलने वाले यहूदियों से यह विवाद उठ खड़ा हुआ कि प्रतिदिन भोजन-वितरण में हमारी विधवाओं की उपेक्षा की जाती है"। यरूशलेम की मण्डली में बहुत सी ऐसी विधवाएँ थीं जिनकी देखभाल करने के लिए उनके कोई रिश्तेदार नहीं थे। अतः कलीसिया उनके भरण-पोषण में सहायता कर रही थी। यदि उनके सगे-सम्बन्धी (परिवार के लोग) होते तो शायद मण्डली को उनकी देखभाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

प्रत्येक परिवार के अगुवों का प्रभु के समक्ष यह दायित्व है कि वे अपने परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध करें (प्रेरित0 6:1; प0तीमु0 5:8)।

यरूशलेम की कलीसिया में यहूदी पृष्ठभूमि के दो प्रकार के लोग शामिल थे। एक वे यहूदी मसीही जो फिलेस्तीन के मूल निवासी (अरामी भाषा-भाषी) थे; दूसरे वे यहूदी मसीही जो फिलेस्तीन की सीमा के बाहरी क्षेत्र के निवासी (यूनानी भाषा-भाषी) थे। यूनानी भाषा-भाषी (यहूदी) मसीही लोग विधवाओं की देखभाल के सम्बन्ध में तरफदारी की शिकायत करने लगे। उनकी दृष्टि में जितनी अच्छी देख-रेख यरूशलेम क्षेत्र की विधवाओं की हो रही थी, उतनी उनके क्षेत्र की विधवाओं की नहीं। उनकी इस आशंका एवं अपेक्षा का पवित्र शास्त्र समर्थन नहीं करता। वास्तव में, उस समय कलीसिया की इतनी तेजी से (संख्या) वृद्धि हो रही थी कि प्रेरित लोगों के लिए प्रत्येक कलीसियाई सेवा-गतिविधि की देखभाल करना सम्भव नहीं था।

प्रेरितों का दायित्व

"बारहों ने चेलों की मण्डली को बुलाकर कहा, 'हमारे लिए यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर के वचन को छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा करें। इसलिए, हे भाइयों, अपने में से सात सच्चरित्र पुरुषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों कि हम इस कार्य का संचालन उनके हाथों में सौंप दें। परन्तु हम तो स्वयं प्रार्थना और वचन की सेवा में लगे रहेंगे'।" लोगों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देना प्रेरितों का प्रमुख दायित्व था। अतः उन्होंने विश्वासियों को एकत्रित करके समुचित निर्देश दिया। ध्यान दें कि पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रेरितों की प्रमुख जिम्मेदारी परमेश्वर के

वचन की शिक्षा देना और प्रार्थना में लवलीन रहना था। बेशक, उन भूखों को भोजन प्रदान करना महत्वपूर्ण था; लेकिन प्रेरितों ने चर्च की इस परिस्थिति को भी, अपने लिए परमेश्वर के इच्छा-उद्देश्य (बुलाहट) में बाधक नहीं होने दिया। यह प्रेरितगण कौन थे? यह वही लोग थे जिन्हें प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान चुना था। उसने उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करके अपनी (मसीह की) साक्षी के रूप में दूसरों के मध्य शिक्षा-सेवा के लिए भेजा। उस समय वह सभी प्रेरित यरूशलेम में ही रह रहे थे और कलीसिया की देखभाल व अगुवाई में लगे थे। वह अन्य विश्वासियों को शिक्षा देने में लगे थे, जो आगे चलकर दूसरों को शिक्षा देते। दूसरों को शिक्षा देना और उनके लिए प्रार्थना करना प्रत्येक विश्वासी की बुलाहट है (प्रेरित0 6:2-4; दू0तीमु0 2:2)।

सेवकों की जरूरत

"इसलिए, हे भाइयों, अपने में से सात सच्चरित्र पुरुषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों कि हम इस कार्य का संचालन उनके हाथों में सौंप दें"। कलीसिया में परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने वालों की आवश्यकता है, और कभी-कभी दान-भेंट एकत्रित करके आवश्यकताग्रस्त लोगों में वितरित करने वालों की भी जरूरत पड़ती है। ध्यान दें कि ऐसे कार्य के लिए भी प्रेरितों ने कैसी योग्यता वाले लोगों को चुनने का निर्देश दिया। इससे हमें यह ज्ञान मिलता है कि चर्च में किसी खास सेवकाई में किसी व्यक्ति को लेने से पूर्व उसके बारे में कुछ खास बातों पर विचार करना महत्वपूर्ण है : क्या वह इस प्रकार का काम करता है? क्या वह इस कार्य के योग्य है? इस प्रकार के सेवकों की नियुक्ति प्रेरितों के काम के छठवें अध्याय के तीसरे पद के उन्हीं गुणों पर आधारित होनी चाहिए जिन

पर प्रभु के प्रेरितों ने बल दिया है। वैसे तो प्रत्येक विश्वासी को कलीसिया की सेवा में तत्पर रहना चाहिए। स्वयं प्रभु यीशु ने भी हमारी सेवा किया, तो हमें भी दूसरों की सेवा में तत्पर रहना चाहिए (प्रेरित0 6:3; मर0 10:42-45)।

"यह बात समस्त मण्डली को उचित जान पड़ी; और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, प्रखुरूस, नीकानोर, तिमोन, परमिनास और अन्ताकिया के निकुलाऊस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। वे इन्हें प्रेरितों के सामने ले आए और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे"। जब यरूशलेम की कलीसिया ने उन सात खास लोगों को चुन लिया, तब प्रेरितों ने उनके लिए प्रार्थना किया कि इस नये सेवा-दायित्व में प्रभु परमेश्वर उन्हें ज्ञान-समझ प्रदान करे। तब प्रेरितों ने उन पर अपना हाथ रखकर यह प्रदर्शित किया कि प्रेरितगण एवं कलीसिया उनकी इस नियुक्ति का अनुमोदन करते हैं और उनकी इस सेवकाई में अपना सहयोग प्रदान करेंगे (प्रेरित0 6:5-6)।

"परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की संख्या अत्याधिक बढ़ती गई और बहुत से याजकों ने भी इस मत को ग्रहण कर लिया"। इस प्रकार मण्डली में शांति व एकता पुर्नस्थापित हुई, कलीसिया उन्नति करती गई और सुसमाचार-सेवा का फल एवं प्रभाव भी बढ़ता गया। कलीसिया की साक्षी के कारण बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करने लगे। यहाँ तक कि बहुत से यहूदी याजकों ने भी प्रभु पर विश्वास किया; जो सम्भवतः उसे क्रूस पर चढ़ाने के समर्थक थे। प्रभु परमेश्वर प्रेमी व अनुग्रहकारी परमेश्वर है। वह उन्हें भी क्षमा प्रदान करता और ग्रहण करता है जो उसके प्रति विरोध व शत्रुता का व्यवहार किए हैं (प्रेरित0 6:7; कुलु0 1:5-6)।

स्तिफनुस की गवाही

"स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों के बीच बड़े बड़े अद्‌भुत कार्य और चिन्ह दिखाया करता था"। कलीसिया की सेवा के लिए चुने गये उन सात सेवकों में से एक का नाम **स्फितनुस** था। वह हर बात के लिए प्रभु परमेश्वर पर ही आशा-भरोसा लगाए रहने वाला व्यक्ति था। इसीलिए लोगों के समक्ष परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रदर्शन हेतु पवित्र आत्मा उसका इस्तेमाल कर सका। *"तब वह सभागृह जो स्वतंत्र किए हुए दासों का कहलाता था, उस में कुछ लोग जो कुरेनी, सिकन्दरिया, किलिकिया और एशिया से आए थे उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे। फिर भी वह ऐसी बुद्धि और आत्मा से बोलता था कि वे उसका विरोध करने में असमर्थ रहे। तब उन्होंने कुछ व्यक्तियों को यह कहने के लिए फुसलाया, 'हमने इसे मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है'। तब वे लोगों को तथा प्राचीनों और शास्त्रियों को भड़का कर उस पर चढ़ आए और उसे घसीट कर महासभा में ले गए। वे झूठे गवाहों को सामने लाए जिन्होंने कहा, 'यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरुद्ध निरन्तर बोलता रहता है। हमने इसे यह कहते सुना है कि वही यीशु नासरी इस स्थान को ध्वस्त कर देगा और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं'। जब सभा में बैठे हुए लोगों ने उस पर दृष्टि गड़ाई तो सब ने उसका मुँह स्वर्गदूत के सदृश देखा"* (प्रेरित0 6:8; प्रेरित0 6:9-15)।

शैतान यह देर तक नहीं देख सका कि प्रभु परमेश्वर स्तिफनुस को बड़ी सामर्थ्य के साथ इस्तेमाल कर रहा था। प्रभु के इस काम में रुकावट डालने की नीयत से उसने कुछ लोगों को

स्तिफनुस पर हमला करने के लिए उकसाया। जब स्तिफनुस से एक सभागृह में कुछ लोगों ने वाद-विवाद किया तो वे उसकी बुद्धिमता एवं समझाने की शक्ति का सामना नहीं कर सके और अत्यन्त ईर्ष्या से भरकर उसका विरोध करने लगे। ये विरोधी लोग दूसरों को भड़काकर स्तिफनुस के बारे में झूठा आरोप लगाए और उस पर निन्दापूर्ण आक्रमण कराने लगे। उनकी यह कुयोजना कामयाब हुई, वहाँ उपस्थित भीड़ स्तिफनुस के खिलाफ हो गई और मंदिर की महासभा द्वारा दण्ड देने की माँग करने लगी।

सभा में स्तिफनुस का भाषण

उसे पकड़ कर सभा के समक्ष उपस्थित किया गया और महापुरोहित ने उससे पूछा कि क्या उसके खिलाफ लगाए गए आरोप सत्य हैं। महायाजक के इस सवाल के जवाब में स्तिफनुस ने यहूदी जाति के सम्पूर्ण इतिहास का हवाला देकर अपनी बात प्रस्तुत की। सत्य को समझने के बारे में इन यहूदी अगुवों (महापुरोहितों) का पिछला इतिहास अच्छा नहीं रहा और इन्होंने प्रायः प्रभु के सच्चे नबियों की बात का तिरस्कार किया था। इतना ही नहीं, इन्हें चेतावनी देने के लिए परमेश्वर द्वारा भेजे गए कुछेक प्रभु-भक्तों का तो इन्होंने कत्ल भी कर दिया था। इनके मध्य यूसुफ और मूसा जैसे प्रभु-भक्तों के अच्छे उदाहरण के बावजूद इस्राएल के लोग अपने परमेश्वर पर विश्वास रखने और उसकी आज्ञा मानने में बारम्बार असफल रहे।

तत्पश्चात् स्तिफनुस ने परमेश्वर द्वारा अब्राहम, इसहाक और याकूब के चुनने का जिक्र किया। अपने भाइयों द्वारा त्याग दिए जाने के बावजूद यूसुफ के प्रति प्रभु परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा और उसे

मिस्र देश का राज्यपाल बनाया। अकाल के समय इसी यूसुफ के द्वारा प्रभु परमेश्वर ने उसके भाइयों का भरण-पोषण करके उनके जीवन को बचाया। इसके बाद के इस्राएलियों की नई पीढ़ी को मिस्र की गुलामी में रहना पड़ा। मूसा ने इन गुलाम इस्राएलियों की मदद करनी चाही, लेकिन उन्होंने उसे अस्वीकार किया। तब मूसा मिस्र छोड़ कर बियाबान में भाग छिपा। बहरहाल प्रभु परमेश्वर मूसा के साथ था, और समय आने पर उसे पुनः मिस्र भेजा कि इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाए। प्रभु परमेश्वर द्वारा आश्चर्यपूर्ण तरीके से मिस्र की गुलामी से निकाले जाने के बावजूद वे परमेश्वर का इनकार करते रहे और मिस्र वापस जाना चाहते थे। अन्ततः जब वे प्रतिज्ञात् देश अर्थात् कनान में पहुँचे तो परमेश्वर के शासन की अधीनता को पुनः अस्वीकार किए और मूर्तिपूजा में लग गए। बारम्बार परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं को भेज कर उन्हें चितौनी दिया, लेकिन उन्होंने नबियों द्वारा दिए गए परमेश्वर के वचन का तिरस्कार किया। यहूदी इतिहास की इस तस्वीर के द्वारा स्तिफनुस ने अपने जमाने के यहूदियों को भी उनके अविश्वासी एवं अवज्ञाकारी पूर्वजों के समान दर्शाया। अपने संदेश के आखिर में स्तिफनुस ने यह कहा कि जैसे उनके पूर्वजों ने परमेश्वर के अनेक नबियों का तिरस्कार करके मार डाला, उसी प्रकार उसके जमाने के लोगों ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र (मसीह) को मार डाला (प्रेरित0 7:1)।

स्तिफनुस की मृत्यु

"जब उन्होंने यह सब सुना तो वे तिलमिला उठे और स्तिफनुस पर दाँत पीसने लगे। परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर एकटक देखा तथा परमेश्वर की महिमा की और यीशु को, परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखा। तब उसने कहा,

'देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखता हूँ'। परन्तु उन्होंने जोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए और एक साथ उस पर झपटे। वे उसे खदेड़कर नगर से बाहर ले गए और उसका पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने चोगे उतार कर शाऊल नामक एक नवयुवक के पास रख दिए। जब वे पथराव कर रहे थे तो स्तिफनुस ने प्रार्थना की, 'हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!' और अपने घुटनों के बल गिरकर वह जोर से चिल्लाया, 'प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!' यह कहकर वह सो गया" (प्रेरित0 7:54-60)।

स्तिफनुस के ठोस एवं सत्य संदेश ने उसके सुनने वालों को आग-बबूला कर दिया। उस पर पथराव करके उसे मार डाला गया। ऐसा करते समय उन्होंने अपने चोगे शाऊल नामक एक व्यक्ति के पास रख दिये थे, जो इस पथराव का समर्थक था (अगले पाठ में इस व्यक्ति की चर्चा की गई है)। अपनी मृत्यु से पूर्व स्तिफनुस ने प्रभु यीशु को पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान देखा। बेशक, प्रभु यीशु यह जानता था कि उसके दास स्तिफनुस को मार डाला जाएगा, अतएव पार्थिव शरीर त्याग कर स्तिफनुस के स्वर्ग पहुँचने की प्रतीक्षा में प्रभु यीशु उसे अपनी संगति में स्वीकार करने के लिए तैयार था। संभवतः अपने पार्थिव शरीर को छोड़ने से पूर्व हम प्रभु यीशु को पिता परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान नहीं देखेंगे, लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि स्तिफनुस की तरह वह प्रत्येक विश्वासी से प्रेम करता है। स्वर्ग पहुँचने पर वह अपने प्रत्येक विश्वासी को ग्रहण करेगा, जैसे कि वह स्तिफनुस के स्वागत की प्रतीक्षा में था।

इस बाइबल-विवरण में स्तिफनुस के उस प्रगाढ़ प्रेम पर ध्यान दें, जो उसने उस पर पथराव करने वालों के प्रति व्यक्त किया। अपने मरते समय भी उसने प्रभु से प्रार्थना किया कि 'यह पाप उन पर न लगाए'। उस समय स्तिफनुस यह नहीं जानता था कि उसकी प्रार्थना एक सबसे महान मिशनरी सेवक पर लागू होगी – अर्थात् शाऊल पर, जो बाद में पौलुस प्रेरित कहलाया।

6

"इस प्रकार उसके मार डाले जाने में शाऊल भी सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ, और प्रेरितों को छोड़ वे सब यहूदिया और सामरिया के समस्त प्रदेशों में तितर-बितर हो गए। फिर कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को दफ़नाया और उसके लिए बड़ा विलाप किया। परन्तु शाऊल घर-घर जाकर कलीसिया को उजाड़ने और स्त्री-पुरुषों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालने लगा"। प्रेरितों के काम की पुस्तक का आठवाँ अध्याय शाऊल नामक एक यहूदी युवक की कहानी से आरम्भ होता है। यह वही व्यक्ति था जिसके पास स्तिफनुस का पथराव करने वाले लोग अपना वस्त्र रखे थे। यह युवक यीशु को प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता (मसीह) नहीं मानता था, और न ही विश्वासियों की इस बात को मानता था कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से पुनः जीवित कर दिया है। शाऊल यह मानता था कि मसीही लोग दूसरों को धोखा दे रहे हैं, यीशु झूठा (मसीह) है और स्वयं को परमेश्वर का पुत्र कह कर यीशु ने परमेश्वर की निन्दा की (प्रेरित0 8:1-3)।

प्रभु यीशु ने पहिले से ही अपने शिष्यों से यह कह दिया था कि ऐसे दिन आएँगे जब *"जो कोई तुम्हें मार डालेगा, समझेगा कि परमेश्वर की सेवा कर रहा है"।* शाऊल भी यही सोच कर प्रभु यीशु के अनुयायियों को खोज-खोज कर सताने में लगा था कि 'झूठे मसीह' को मारना परमेश्वर की सेवा है। अतः नासरत के यीशु के सभी अनुयायियों को मौत के घाट उतारना उसने 'स्व-धर्म-सेवा' समझ रखा था (यूह0 16:2)।

तितर-बितर हुए विश्वासियों का कार्य

"अतः जो तितर-बितर हुए थे, घूम-घूम कर वचन का प्रचार करने लगे"। जब यरूशलेम के विश्वासियों पर शाऊल का भीषण आक्रमण व अत्याचार होने लगा तो बहुत से विश्चासी वहाँ से दूसरे क्षेत्रों में चल दिये। जहाँ कहीं भी वे गए, अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार उसकी साक्षी देते रहे।

"और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा"। यरूशलेम से तितर-बितर हुए लोगों में फिलिप्पुस नामक एक विश्वासी भी था। यह उन सातों में से एक था जिसे मण्डली की सेवा के लिए नियुक्त किया गया था (प्रेरित 6:5)। अपने स्वर्गारोहण से पूर्व प्रभु यीशु ने अपने चेलों से यह कहा था कि पवित्र आत्मा के आगमन के पश्चात् वह लोग यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और यहाँ तक कि पृथ्वी के छोर तक उसके गवाह होंगे। इस आज्ञा का पालन करते हुए फिलिप्पुस ने सामरिया क्षेत्र में सुसमाचार सन्देश का प्रचार किया। सामरी लोग असीरियाई आक्रमण के कारण उत्तरी राज्य के इस्राएलियों की हार के बाद वहाँ बस कर इस्राएलियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने वाले विदेशियों की संतान (वंशज) थे। आगे चलकर यरूशलेम के मंदिर में जाने के बजाय सामरी लोगों ने अपना एक अलग मंदिर बना लिया था। इन सब कारणों से अमिश्रित इब्री वंश के (सामान्य) यहूदी इन सामरी लोगों को असली यहूदी नहीं मानते थे। इन दोनों समुदायों के सदियों पुराने अविश्वास एवं परस्पर ईर्ष्या-द्वेष के बावजूद फिलिप्पुस ने उनके मध्य सुसमाचार सुनाया जिससे वे भी परमेश्वर की संतान होने का सुअवसर पाएँ। उसके सुसमाचार प्रचार से बहुत से सामरी

प्रभु यीशु पर विश्वास किए और उद्धार पाए। *"जब लोगों ने फिलिप्पुस की बातें सुनीं और उन चिन्हों को देखा जिन्हें वह दिखा रहा था तो उन्होंने एकचित्त होकर उसकी बातों पर ध्यान दिया। क्योंकि बहुत लोगों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुयी निकल रही थीं, तथा अनेक जो लकवे के मारे और लँगड़े थे, चँगे किए जा रहे थे। और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया"।* प्रभु यीशु के बारे में फिलिप्पुस की साक्षी पर विश्वास करने के कारण सामरी लोग बहुत आनन्दित हुए। गिरफ्तारी की धमकी एवं घोर सतावट के बावजूद विश्वासीगण प्रभु यीशु पर विश्वास करते रहे और उसकी आज्ञा का पालन किए। नतीजतन, वे जहाँ कहीं गये, मँडली बढ़ती गयी। इससे उनके विरोधी लोग उनका मुँह बन्द करने के लिए और अधिक जोर लगाने लगे (प्रेरित0 8:4; 8:5; 6:5; 8:6-8)।

शाऊल का मन-परिवर्तन

"फिर शाऊल जो अभी भी प्रभु के शिष्यों को धमकियाँ देने तथा उनकी हत्या करने की धुन में था, महायाजक के पास गया, और उस से दमिश्क के आराधनाओं के लिए इस अभिप्राय से पत्र प्राप्त किए कि यदि उसे इस पंथ के अनुयायी मिलें, वे चाहे स्त्री हों अथवा पुरुष, तो उन्हें बाँध कर यरूशलेम ले आए"। उधर यरूशलेम क्षेत्र के मसीही विश्वासियों को सताने के काम में शाऊल कोई ढिलाई नहीं लाया था। जब उसे यह पता चला कि बहुत से विश्वासी यरूशलेम छोड़कर अन्यत्र चले गए हैं, और सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं, तब उनका पीछा करके गिरफ्तार करता था और यरूशलेम वापस लाकर दण्डित करा रहा था। क्या कभी ऐसा दुर्जन भी प्रभु यीशु का अनुयायी हो सकता था? मसीह के विश्वासियों की

साक्षी के द्वारा उद्धार पाने वालों में ऐसे व्यक्ति के मन-परिवर्तन की उम्मीद बिल्कुल नहीं थी कि विश्वासियों का घोर उत्पीड़न करने वाला शाऊल जैसा दुर्जन भी मसीही विश्वासी बन जाएगा (प्रेरित0 9:1-2)।

"और ऐसा हुआ कि यात्रा करते हुए जब वह दमिश्क के समीप पहुँचा तो सहसा आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर चमकी, और वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज़ यह कहते हुए सुनी, 'शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों सताता है?' उसने पूछा, 'प्रभु, तू कौन है?' तब उसने कहा, 'मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है। परन्तु उठ और नगर में जा, और जो करना है वह तुझे बता दिया जाएगा'। जो मनुष्य उसके साथ यात्रा कर रहे थे वे आवाक् खड़े रह गए, क्योंकि आवाज तो सुनते थे पर किसी को देखते न थे। तब शाऊल भूमि पर से उठा और यद्यपि उसकी आँखें खुली हुई थीं, फिर भी वह कुछ देख नहीं पा रहा था, और वे उसका हाथ पकड़ कर उसे दमिश्क ले आए। वह तीन दिन तक न देख सका, और उसने न खाया और न पीया"। परमेश्वर के वचन का विरोध करने वालों को प्रभु की साक्षी देने से भयभीत नहीं होना चाहिए। जैसे प्रभु पर विश्वास करने के बाद उसने शाऊल का मन परिवर्तन कर दिया उसी प्रकार उसके सुसमाचार पर अविश्वास करने वाले अन्य विरोधियों का भी जीवन-परिवर्तन सम्भव है। दोपहर के सूर्य की चमक से बढ़कर तेज में प्रभु यीशु के चेहरे का दर्शन पाकर शाऊल अन्धा हो गया और इसके परिणाम स्वरूप उसका जीवन-परिवर्तन हो गया। जरा शाऊल के उस भयावह अनुभव के बारे में सोचिए जब उसे यह पता चला कि जिसे वह सता रहा है, वह तो इस्राएल का प्रभु परमेश्वर है। वह तो यह सोच बैठा था कि मसीही विश्वासियों

को सताने के द्वारा वह परमेश्वर की सेवा (उसे प्रसन्न) कर रहा है। अब उसे यह ज्ञान हुआ कि वह गम्भीर गलती में फँसा था। चर्च का उत्पीड़न करके शाऊल का विवेक उसे व्याकुल तो करता था, लेकिन शाऊल इसकी अनदेखी करता रहा था। बहरहाल अब उसे सच्चाई का ज्ञान हो गया था, और मसीह के दर्शन में उसने जो कुछ देखा व सुना था, उसका इंकार नहीं कर सकता था। अब उसके मन में यह बात पक्की तौर पर बैठ गयी थी कि मसीह वास्तव में मृतकों में से जीवित हो उठा है, और वही परमेश्वर का एकलौता पुत्र एवं प्रतिज्ञात् मसीही है। उसकी अन्धी अवस्था में ही शाऊल को एक छोटे बालक की तरह दमिश्क शहर में ले जाया गया (प्रेरित0 9:3-9)।

"दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, जिस से प्रभु ने दर्शन में कहा, 'हनन्याह!' उसने उत्तर दिया, 'प्रभु देख, मैं यहाँ हूँ'। प्रभु ने उस से कहा, 'उठ कर उस गली में जा जो 'सीधी' कहलाती है, और यहूदा के घर जाकर शाऊल नामक एक तरसुस निवासी के विषय पूछ ले, क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है, और उसने दर्शन में हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है जिससे कि वह फिर से देख सके'। परन्तु हनन्याह ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मैंने बहुतों से इस व्यक्ति के विषय में सुना है, कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों को कितना नुकसान पहुँचाया है, और यहाँ भी इसको मुख्य याजकों की ओर से अधिकार मिला है कि जितने तेरा नाम लेते हैं उन सब को बन्दी बना ले'।" (प्रेरित0 9:10-14)।

शाऊल, दमिश्क नगर में एक बिस्तर पर लेटा था। वह अन्धा हो गया था और तीन दिनों तक न तो कुछ खाया और न ही कुछ पीया था। अब वह यरूशलेम में विश्वासियों का घोर उत्पीड़न

करने वाला व्यक्ति नहीं रह गया था। दमिश्क में रहने वाला हनन्याह नामक प्रभु का चेला शाऊल के पास जाने से भयभीत था; और ऐसी आशंका स्वाभाविक थी। हनन्याह को यह नहीं मालूम था कि दमिश्क आते समय शाऊल को प्रभु यीशु का दर्शन प्राप्त हुआ है। हनन्याह तो सिर्फ उस शाऊल के बारे में जानता था जो विश्वासियों के परिवारों को बर्बाद करने में लगा था और प्रभु यीशु पर विश्वास करने वालों को मौत के घाट पहुँचाता था। *"परन्तु प्रभु ने कहा, 'चला जा, क्योंकि वह तो ग़ैर यहूदियों, राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊँगा कि मेरे नाम के लिए उसे कितना दुख सहना पड़ेगा'"* (प्रेरित0 9:15-16)।

जब कभी प्रभु परमेश्वर हम से कोई कठिन या असम्भव कार्य कराना चाहता है तो ऐसे कार्य को पूरा करने के लिए ईश्वरीय अनुग्रह एवं सामर्थ्य भी प्रदान करता है। सामान्यतः यह ईश्वरीय अनुग्रह परमेश्वर के वचन को सुनने एवं उस पर आशा-भरोसा रखने के द्वारा प्राप्त होता है। हनन्याह ने परमेश्वर के इस प्रोत्साहन वचन (बात) पर भरोसा किया कि शाऊल उसका चुना हुआ पात्र है और उससे भयभीत होने की जरूरत नहीं है। *"तब हनन्याह ने जाकर उस घर में प्रवेश किया और उस पर अपने हाथ रख कर कहा, 'भाई शाऊल, प्रभु यीशु जिसने तुझे उस मार्ग पर जिस से तू आ रहा था, दर्शन दिया, उसी ने मुझे तेरे पास भेजा है कि तू फिर से देखने लगे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए'। तब तत्काल शाऊल की आँखों से छिलके-से गिरे और वह पुनः देखने लगा। फिर उठकर उसने बपतिस्मा लिया। तब भोजन करके उसने बल प्राप्त किया। फिर वह कई दिनों तक उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे"।*

सम्भव है कि हनन्याह की तरह परमेश्वर की इच्छा का पालन करने में कभी हम भी भयभीत या आशंकित हों। किन्तु परमेश्वर पर इस बात के लिए हम सदैव भरोसा कर सकते हैं कि वह हमसे ऐसा कुछ नहीं कराएगा जिससे हमारी एवं कलीसिया की भलाई नहीं होगी (प्रेरित0 9:17-19)।

"और वह तुरन्त आराधनालयों में यह कहकर यीशु का प्रचार करने लगा, 'यही परमेश्वर का पुत्र है'। सब सुनने वाले आश्चर्यचकित होकर कहने लगे, 'क्या यह वही नहीं जो यरूशलेम में इस नाम के लेने वालों को नाश करता था और यहाँ इसी अभिप्राय से आया था कि उन्हें बाँध कर मुख्य याजकों के पास ले जाए?' परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया और प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है दमिश्क में रहने वाले यहूदियों का मुँह बन्द करता रहा"। अब पौलुस (शाऊल) दमिश्क के विश्वासियों के साथ संगति करने लगा और अपने अविश्वासी जीवन के ख्रीष्त-विरोधी साथियों को मसीह की साक्षी देने लगा। वह "पुराना नियम" शास्त्र को भली-भाँति जानता था और सर्वश्रेष्ठ यहूदी धर्मशास्त्रियों के अधीन यहूदी धर्म का अध्ययन किया था। इतना ही नहीं, वह स्वयं यहूदी धर्म-व्यवस्था का एक शिक्षक था। दमिश्क निवासी यहूदियों को मसीह सम्बन्धी पुराना नियम शास्त्र की समस्त नबूवतों की याद दिलाते हुए उसने यह प्रमाणित किया कि नासरत का यीशु ही प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता (**मसीह**) है (प्रेरित0 9:20-22)।

"जब बहुत दिन बीत गए तो यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने का षडयंत्र रचा। परन्तु पौलुस को उनका षडयंत्र मालूम हो गया। वे उसे मार डालने के लिए दिन-रात फाटकों पर घात लगाए रहते थे। परन्तु उसके चेलों ने रात में उसे एक टोकरे में बैठा कर

शहरपनाह से नीचे उतार दिया"। बेशक शाऊल के मन-परिवर्तन से शैतान बहुत निराश एवं क्रोधित हुआ होगा, क्योंकि प्रभु के लोगों को सताने के काम में उसका एक प्रमुख सहयोगी उससे अलग हो गया था। अतः शैतान ने शाऊल को मार डालने के लिए दूसरों को उकसाना शुरू कर दिया। उन दिनों पत्थर की मोटी दीवाल से शहर के चारों ओर शहरपनाह बनी होती थी और कुछ लोगों के मकान इस दीवाल से सटे हुए बने होते थे। सम्भवतः किसी विश्वासी का घर शहरपनाह से सटे बना था जिसके घर की खिड़की से पौलुस को बचाने के लिए शहर से बाहर भेज दिया गया (प्रेरित0 9:23-25)।

शाऊल का पुनः यरूशलेम पहुँचना

"यरूशलेम में आकर वह चेलों से मिलने का प्रयत्न करने लगा, परन्तु वे सब उस से डरते थे, और उन्हें विश्वास नहीं होता था कि वह भी एक चेला है। परन्तु बरनाबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उन्हें बताया कि उसने किस प्रकार मार्ग में प्रभु को देखा और उसने उस से बातें कीं, और यह भी कि दमिश्क में उसने कैसे साहसपूर्वक यीशु के नाम में प्रचार किया। वह उसके साथ यरूशलेम में आते-जाते और निर्भीकता से यीशु के नाम में प्रचार करता रहा"। इस प्रकार शाऊल दमिश्क से वापिस यरूशलेम पहुँचा। जब उसने यरूशलेम से दमिश्क के लिए प्रस्थान किया था तो वह शैतान की संतान था; किन्तु अब वह परमेश्वर की संतान के रूप में वापस आया। यरूशलेम से दमिश्क जाते समय वह यीशु एवं कलीसिया का शत्रु था, किन्तु अब वह यीशु के दास और विश्वासियों के भाई के रूप में यरूशलेम वापिस आया। लेकिन यरूशलेम की कलीसिया में शाऊल का उत्साहपूर्ण स्वागत नहीं हुआ। वह लोग भयभीत थे और उन्हें यह विश्वास नहीं हो रहा था कि इतना बुरा

व्यक्ति भी मसीही विश्वासी हो सकता है। वहाँ की कलीसिया के लोगों ने सोचा कि शायद यह शाऊल की कोई चाल है कि विश्वासियों में घुसकर उन्हें धोखा दे और सताए (प्रेरित0 9:26-28)।

प्रभु परमेश्वर ने शाऊल के बचाव के लिए बरनाबास नामक एक साधारण विश्वासी को इस्तेमाल किया। बरनाबास शब्द का अर्थ है "सान्त्वना की संतान"। बरनाबास को दूसरे विश्वासियों से मित्रवत् व्यवहार करने एवं ढाढस देने का वरदान प्राप्त था। यह पवित्र आत्मा की ओर से था।

"और यूनानी भाषी यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता रहा, परन्तु वे उसकी हत्या का प्रयत्न करने लगे। परन्तु जब भाइयों को यह मालूम हुआ, तो वे उसे कैसरिया ले गए, फिर उन्होंने उसे तरसुस भेज दिया"। इस घटना में शाऊल को मारने का षडयंत्र करने वाले वही लोग थे जिन्होंने स्तिफनुस को पत्थरों से मार डाला था। मूलतः स्तिफनुस के मारे जाने में शाऊल की सहमति थी। परन्तु अब शाऊल वही शिक्षा दे रहा था जो स्तिफनुस देता था। फिर, अन्य विश्वासियों ने शाऊल को मारे जाने से बचाया (प्रेरित0 9:29-30)।

"अतः सारे यहूदिया, गलील और सामरिया की कलीसिया को शान्ति मिली, और उसकी उन्नति होती गई, और वह प्रभु के भय में चलती तथा पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन में बढ़ती गई"। प्रारम्भिक कलीसिया को सताने के काम में लगा सबसे प्रमुख अगुवा अब प्रभु यीशु का विश्वासपात्र बन चुका था। अब विश्वासी लोग प्रभु के वचन के ज्ञान एवं विश्वास में उन्नति करते गए। बहुत से लोग प्रभु यीशु पर विश्वास करके बपतिस्मा लिए ओर मंडली में शामिल होने लगे (प्रेरित0 9:31)।

7

यह सच है कि यहूदी लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे, किन्तु वे लोग इस सच्चाई को बढ़ा-चढ़ा कर यह (अहंकारपूर्ण) अर्थ लगाने लगे थे कि वे अन्य लोगों से सुपरिअर (उच्च या बेहतर किस्म के लोग) हैं। वे यह सोच बैठे थे कि खतना-विधि एवं यरूशलेम के यहूदी मंदिर सम्बन्धी धर्म-विधियों के पालन से परमेश्वर के दरबार में उनका विशिष्ट स्थान है। उन्हें अपने वंश एवं विरासत का अहंकार था, और इस गलतफहमी में थे कि वे परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य होने लायक हैं। स्तिफनुस की मृत्यु तथा उसके बाद के कुछ समय तक प्रेरितों ने सिर्फ यहूदियों में, या अन्य जातियों से यहूदी हुए लोगों में या फिर मूसा एवं व्यवस्था को मानने वाले सामरी लोगों में ही सुसमाचार सुनाया था। यद्यपि प्रभु यीशु ने कहा था कि सारे संसार को साक्षी देना है, किन्तु इस समय तक चेले यह नहीं समझे थे कि मूसा एवं उसकी व्यवस्था को नहीं मानने वाले लोगों को भी सुसमाचार की साक्षी देना है। खतना-रहित एवं मूसा की व्यवस्था को नहीं मानने वालों को यहूदी लोग तुच्छ समझते थे।

प्रभु यीशु पर विश्वास करने वाले यहूदी यह नहीं समझते थे कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात् खतना एवं व्यवस्था निष्प्रभावी (प्रभावहीन) हो गए थे, क्योंकि मसीह की मृत्यु ने ईश्वरीय माँग को पूर्णतः पूरा कर दिया, और उस पर विश्वास करने वाला प्रत्येक जन परमेश्वर के समक्ष स्वीकार्य है। अब विश्वासियों के लिए खतना कराना अनिवार्य नहीं है। प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानने वाले प्रत्येक विश्वासी को पापों की क्षमा प्राप्त होती

है और उसमें पवित्र आत्मा का वास होता है, चाहे वह खतना-सहित हो या खतना-रहित। बहरहाल प्रेरितगण इस सच्चाई से अनभिज्ञ थे, अतः उन्हें परमेश्वर की ओर से इसे सीखना आवश्यक था।

"कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक व्यक्ति था। वह उस सैन्य दल का सूबेदार था जो इतालवी कहलाता था। वह भक्त था तथा अपने सारे घराने समेत परमेश्वर का भय मानता था, और यहूदियों को बहुत दान दिया करता था और निरन्तर परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था"। कुरनेलियुस रोमन फौज का एक कप्तान था। वह एक सौ सैनिकों का इंचार्ज (अफसर) था। वह सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करता था, किन्तु खतना-विहीन था। उन दिनों के अधिकतर गैर-यहूदी मूर्ति-पूजक थे, लेकिन कुरनेलियुस की तरह कुछेक गैर-यहूदी एकमात्र सच्चे परमेश्वर को मानते थे। ऐसे गैर-यहूदी यहूदी सभागृहों में जाकर पुराना नियम शास्त्र यानि मूसा की व्यवस्था सम्बन्धी शिक्षा को सुनते मानते थे, किन्तु खतना करके यहूदी नहीं बने थे। शायद आपको याद हो कि प्रभु परमेश्वर ने संसार की सारी जातियों के सम्बन्ध में अब्राहम से एक वायदा किया था। अब उस वायदे के पूरा होने का समय आ गया था। परमेश्वर यह चाहता था कि प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता सम्बन्धी सुसमाचार उन्हें भी सुनाया जाए जो यहूदी नहीं थे (प्रेरित0 10:1-2)।

"दिन के तीन बजे के लगभग उसने दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि एक स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर उस से कहा, 'कुरनेलियुस'! उस ने उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखा और भयभीत होकर कहा, 'हे प्रभु, क्या है?' उसने उस से कहा, 'तेरी प्रार्थनाएं और दान स्मृति के रूप में परमेश्वर के समक्ष पहुँचे हैं। अब कुछ

व्यक्तियों को याफा भेज कर शमौन नामक व्यक्ति को जो पतरस भी कहलाता है, बुलवा ले। वह चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन नाम किसी व्यक्ति का अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है'।" पतरस चमड़े का धन्धा करने वाले एक व्यक्ति के यहाँ मेहमान के रूप में ठहरा हुआ था। ऐसे लोग मरे हुए जानवरों की खाल उतार कर चर्म-वस्त्र वगैरह बनाने के लिए चमड़े की तैयारी (चर्म-शोधन) का काम करते थे। यहूदी समाज में ऐसा काम करने वालों को निम्न स्तर का व्यक्ति समझा जाता था, भले ही वह एक सच्चा ईश्वर-भक्त हो। मृतक पशुओं के सम्पर्क में आने वाले अपने धन्धे के कारण प्रायः ऐसे लोग अपना कारोबार कस्बे के बाहर करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इस घटना के द्वारा प्रभु परमेश्वर पतरस के मन को इस सच्चाई के लिए तैयार कर रहा था कि सुसमाचार गैर-यहूदियों के लिए भी है। कट्टर यहूदी के रूप में पाले-पोसे गए पतरस के लिए एक चर्मकार मसीही के यहाँ अतिथि होकर रहना दीनतापूर्ण अनुभव था (प्रेरित0 10:3-6)।

"जब स्वर्गदूत जिसने उस से बातें की थीं चला गया, तब उसने अपने दो सेवकों और निरन्तर अपने समीप रहने वाले भक्त सैनिकों में से एक को बुलाया। और उन्हें सारी बातें समझा कर याफा भेजा"। कुरनेलियुस ने परमेश्वर के वचन का फौरन पालन किया। वह सत्य के ज्ञान का भूखा-प्यासा था, अतः बिना किसी देरी के दो सेवकों को पतरस को बुलाने के लिए भेजा। प्रभु परमेश्वर ने कुरनेलियुस के मन को तैयार किया था। अब वह पतरस के मन को तैयार कर रहा था कि वह एक गैर-यहूदी के घर जाकर भोजन करे और वचन की शिक्षा दे। सामान्यतः यहूदी लोग ऐसा नहीं करते थे (प्रेरित0 10:7-8)।

"दूसरे दिन जब वे चलते चलते नगर के पास पहुँचने पर थे, उसी समय दोपहर के लगभग पतरस प्रार्थना करने के लिए छत पर गया। उसे भूख लगी तथा कुछ खाने की इच्छा हुई, परन्तु जब वे तैयारी कर ही रहे थे तो वह बेसुध हो गया। और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु चारों कोनों से लटकती हुयी भूमि पर उतर रही है, जिसमें सब प्रकार के चौपाए और पृथ्वी के रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। उसे एक आवाज सुनाई दी, 'पतरस, उठ। मार और खा!' परन्तु पतरस ने कहा, 'नहीं प्रभु कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है'। फिर दूसरी बार उसे एक आवाज सुनायी दी, 'जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है उसे तू अपवित्र मत कह।' तीन बार ऐसा ही हुआ, तब वह वस्तु तुरन्त आकाश में उठा ली गई"। प्रभु परमेश्वर द्वारा दिखाए गए दर्शन में प्रदर्शित पशु-पक्षियों को पतरस नहीं खाना चाहता था, क्योंकि यहूदियों को परमेश्वर प्रदत्त व्यवस्था में यह बताया गया था कि किस जानवर को खाना चाहिए और किस जानवर को खाना वर्जित है। उस दर्शन में दिखाये गये कुछ जानवर यहूदियों के खाने के लिए वर्जित नहीं थे, परन्तु वर्जित जानवरों के साथ शामिल दिखाई देने के कारण पतरस ने उन्हें खाना नहीं चाहा। पतरस को उन्हीं पशु-पक्षियों को खाने की आदत थी जो 'पुराना नियम' शास्त्र की व्यवस्थानुसार पाले-पोसे एवं **वध** किए गए हों। उसे उस भोजन से दूर रहने की शिक्षा मिली थी जो यहूदी शास्त्र के अनुसार अशुद्ध या प्रदूषित माना जाता था। प्रायः हम उस पशु-पक्षी को खाना नापसन्द करते हैं जिसे साधारणतया लोग नहीं खाते। उदाहरण के तौर पर किसी-किसी समाज (देश) में किसी पालतू पशु का माँस खाना बुरा माना जाता है

और अक्सर सरकारी कानून द्वारा ऐसे माँस को खाने की मनाही रहती है। उन पशु-पक्षियों को वध करके खाने सम्बन्धी ईश्वरीय आदेश के समय पतरस को भी इसी प्रकार अनिच्छापूर्ण महसूसियत हुई (प्रेरित0 10:9-16; व्यव0 11)।

प्रभु परमेश्वर पतरस को क्या सिखा रहा था?

1. क्रूस पर मसीह की मृत्यु के कारण मूसा की व्यवस्था में दिए गये भोजन सम्बन्धी ईश्वरीय निर्देशों का समापन (अंत) हो चुका है।
2. जैसे उस दर्शन के सभी पशु-पक्षी एक साथ थे और परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध थे, उसी प्रकार प्रभु यीशु पर विश्वास करने वाले सभी यहूदी एवं गैर-यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध हैं और कलीसिया में एक (साथ) हैं।
3. प्रभु परमेश्वर ने सभी मसीही विश्वासियों को शुद्ध किया (धर्मी ठहराया) है। अतः किसी मसीही विश्वासी को न तो पतरस द्वारा अशुद्ध या आत्मिक तौर पर निम्न समझा जा सकता है और न ही किसी अन्य यहूदी द्वारा।

कुरनेलियुस के घर पतरस

"पतरस जब इस दुविधा में ही था कि जो दर्शन मैंने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो, कुरनेलियुस द्वारा भेजे गए लोग शमौन के घर का पता लगा कर द्वार पर आ खड़े हुए। वे पुकार कर पूछने लगे, 'शमौन जो पतरस कहलाता है, क्या यहीं ठहरा हुआ है?' पतरस उस दर्शन पर सोच-विचार कर ही रहा था कि आत्मा ने उस से कहा, 'देख, तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ रहे हैं। अब उठ और नीचे जा और निःसंकोच उनके साथ चला जा, क्योंकि स्वयं मैंने ही उन्हें

भेजा है'। तब पतरस ने नीचे जाकर उन लोगों से कहा, 'देखो, जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो वह मैं ही हूँ। तुम क्यों आए हो?' उन्होंने कहा, 'कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी, परमेश्वर का भय मानने वाला और सारी यहूदी जाति में सम्मानित है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है कि तुझे अपने घर बुला कर तुझसे वचन सुने'। तब उसने उन्हें भीतर बुला कर घर में ठहराया। दूसरे दिन वह उठा और उनके साथ गया, और याफा के रहने वाले भाइयों में से कुछ उसके साथ गये"। इन सब घटनाओं के द्वारा प्रभु परमेश्वर जो कुछ कर रहा था, पतरस वह सब तत्काल नहीं समझा। बहरहाल, उसने प्रभु पर भरोसा किया और कुरनेलियुस के घर की ओर प्रस्थान किया (प्रेरित0 10:17-23)।

"दूसरे दिन वह कैसरिया पहुँचा। कुरनेलियुस अपने सम्बन्धियों एवं घनिष्ठ मित्रों के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जैसे ही पतरस ने प्रवेश किया तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की, और उसके चरणों पर गिरकर उसे प्रणाम किया। परन्तु पतरस ने उसे उठाते हुए कहा, 'उठ, मैं भी तो मनुष्य हूँ'।" कुरनेलियुस ने अपने सारे परिवार एवं मित्रों को पतरस का संदेश सुनने के लिए एकत्रित किया। अपनी अज्ञानतावश, कुरनेलियुस पतरस के पैरों पर गिर कर उसे दण्डवत् करने लगा, किन्तु पतरस किसी के द्वारा अपनी पूजा कराना उचित नहीं मानता था, क्योंकि केवल परमेश्वर की ही उपासना की जानी चाहिए (प्रेरित0 10:24-26)।

पतरस का प्रवचन

"तब पतरस ने मुंह खोल कर कहा : 'अब मैं सचमुच समझ गया हूँ कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता, प्रत्येक जाति में

जो उसका भय मानता है तथा धार्मिकता के कार्य करता है, वही उसे ग्रहणयोग्य होता है। उसने यीशु मसीह के द्वारा – वह सब का प्रभु है – जो वचन इस्राएलियों के पास शान्ति का प्रचार करते हुए भेजा – तुम स्वयं ही उस वचन को जानते हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के पश्चात् गलील से लेकर सम्पूर्ण यहूदिया में फैल गया। तुम यीशु नासरी को जानते हो कि परमेश्वर ने उसे किस प्रकार पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषिक्त किया और वह किस प्रकार भलाई करता और उन सब को जो दुष्टात्मा द्वारा सताए हुए थे चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। हम उन सब बातों के गवाह हैं जो उसने यहूदिया के देश और यरूशलेम में कीं, और उन्होंने क्रूस पर लटका कर उसे मार भी डाला। परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन जिला उठा कर प्रकट भी होने दिया, सब लोगों पर नहीं, वरन् उन गवाहों पर जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया था, अर्थात् हम पर जिन्होंने मृतकों में से उसके जी उठने के पश्चात् उसके साथ खाया-पीया। उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करें और दृढ़तापूर्वक साक्षी दें कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों ओर मृतकों का न्यायी नियुक्त किया है। सब नबी उसकी साक्षी देते हैं कि प्रत्येक जो उस पर विश्वास करता है, उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है'।" पतरस ने कुरनेलियुस के घर पर उपस्थित लोगों को प्रभु यीशु का सरल संदेश सुनाया। पतरस ने उन्हें किसी धर्म में शामिल होने की प्रेरणा नहीं दिया, बल्कि सीधे-सादे शब्दों में प्रभु यीशु मसीह के जीवन, मरण एवं पुनरुत्थान का संदेश सुनाया। उसके बोलते समय पवित्र आत्मा द्वारा एक अद्‌भुत काम हुआ कि प्रभु पर विश्वास करने के लिए लोगों के मन तैयार हो गए (प्रेरित0 10:34-43)।

गैर यहूदियों के मन-परिवर्तन की पहली प्रमुख घटना

"जब पतरस यह वचन कह ही रहा था, तभी वचन के सब सुनने वालों पर पवित्र आत्मा उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए हुए थे, सब विस्मित हुए कि पवित्र आत्मा का दान ग़ैर यहूदियों पर भी उंडेला गया है। क्योंकि वे उन्हें भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस ने कहा, 'क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये लोग जिन्होंने हमारे समान ही पवित्र आत्मा पाया है, बपतिस्मा न पाएं?' और उसने आज्ञा दी कि उनको यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे कुछ दिन और ठहरने के लिए विनती की"। अचानक कुरनेलियुस तथा उस मीटिंग में उपस्थित लोगों को यह ज्ञान हुआ कि प्रभु तो पवित्र परमेश्वर है और वे पापी हैं। उन्हें यह भी ज्ञान हुआ कि प्राचीन काल से ही प्रभु परमेश्वर ने पापियों के उद्धार हेतु एक प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता भेजने का वायदा किया था। पतरस द्वारा दिए गये सुसंदेश के दौरान पवित्र आत्मा ने उन ग़ैर यहूदियों को यह समझ प्रदान किया कि यीशु ही वह प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता है जो उन्हें उनके पापों से उद्धार देने आया। पतरस के साथ आए अन्य विश्वासी यह देखकर आश्चर्य-चकित थे कि कुरनेलियुस और उसके परिवार के लोगों ने पतरस के संदेश पर विश्वास किया, और उसके उपदेश के समापन से पूर्व मसीह यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा किया। प्रभु यीशु के प्रति उनके इस विश्वासपूर्ण प्रत्युत्तर के बाद उन पर पवित्र आत्मा आया और उन्हें ऐसी भाषाएं बोलने की क्षमता प्रदान किया जिन्हें वे कभी सीखे नहीं थे। यह पिन्तेकुस्त के दिन की घटना के समान था। यहूदी विश्वासियों की तरह गैर यहूदी

विश्वासियों को भी पवित्र आत्मा का दान देकर प्रभु परमेश्वर ने पतरस के साथ वहाँ उपस्थित यहूदियों को यह सच्चाई दर्शायी कि प्रभु परमेश्वर के समक्ष गैर-यहूदी भी स्वीकार्य हैं। अन्य भाषा बोलने का प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक ही और हवाला पाया जाता है (प्रेरित0 19) जबकि पुराना नियम के प्रभु-भक्तों (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों) ने मसीह यीशु पर विश्वास किया (प्रेरित0 10:44-48; प्रेरित0 19)।

8

पवित्र आत्मा ने पतरस को यह सीख प्रदान किया कि मसीह यीशु द्वारा सम्पन्न किए गये प्रायश्चित-कार्य के आधार पर ग़ैर यहूदी लोग भी परमेश्वर के समक्ष स्वीकार्य हैं। इसके अतिरिक्त पिछले पाठ में हमने यह भी देखा कि पतरस एवं उसके साथ कुरनेलियुस के घर जाने वाले अन्य यहूदियों को पवित्र आत्मा ने यह दर्शाया कि मसीही विश्वासी होने के लिए यहूदी धर्म का अनुयायी होना आवश्यक नहीं है। यहूदी पृष्ठभूमि से विश्वासी होने वाले मसीही अपनी यहूदी विरासत पर अहंकार करने लगे थे और उनके लिए यह समझना कठिन था कि यहूदी हुए बिना ग़ैर यहूदियों के लिए भी परमेश्वर द्वारा उद्धार का मार्ग खोल दिया गया है। अतः ऐसे यहूदी मसीहियों ने यह सोचा के कुरनेलियुस जैसे ग़ैर यहूदी के यहाँ जाकर पतरस शायद अपने अधिकार से दो कदम आगे बढ़ गया है; और अन्य जातियों में सुसमाचार सुनाने से पूर्व उसे यरूशलेम की कलीसिया के अन्य अगुवों से अनुमति लेनी चाहिए थी। पतरस में सीखने की मनसा थी। वह पवित्र आत्मा द्वारा सिखाई जाने वाली बातों को ग्रहण करता था, भले ही ऐसी बातें बचपन से सीखी गई बातों के विपरीत हों।

"फिर प्रेरितों तथा भाइयों ने जो सारे यहूदिया में थे सुना कि ग़ैर यहूदियों ने भी परमेश्वर का वचन ग्रहण कर लिया है। अतः जब पतरस यरूशलेम आया तो ख़तना किए हुए लोग उससे यह कहकर वाद-विवाद करने लगे, 'तू ने तो खतना रहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ भोजन किया'।" पतरस तो कुरनेलियुस के घर परमेश्वर-प्रदत्त

दर्शन के अनुसार गया था। उस दर्शन के द्वारा पतरस को परमेश्वर ने यह दर्शाया के यदि प्रभु परमेश्वर ग़ैर यहूदियों को ग्रहण करता है, तो पतरस को भी ऐसा करना चाहिए। परन्तु यरूशलेम में उपस्थित शेष प्रेरितों ने तथा वहाँ की मंडली के लोगों ने वह ईश्वरीय दर्शन नहीं देखा था जिसे उसने याफा में देखा था। अतः उनके लिए यह समझना भी कठिन था कि पतरस किसी ग़ैर यहूदी के घर जाकर उसके साथ क्यों भोजन किया (प्रेरित0 11:1-3)।

यरूशलेम की मंडली में यहूदी विश्वासियों का एक खास ग्रुप पतरस के इस सेवा-कार्य का कड़ा विरोध कर रहा था (प्रेरित0 11:2)। वे यहूदी पृष्ठभूमि के मसीही थे और यह मानते थे कि यीशु ही उद्धारकर्ता है; लेकिन इसके साथ वे यह भी मानते थे कि मसीहियों के लिए ख़तना कराना और (दस) आज्ञाओं का पालन करना भी अनिवार्य है। इनमें से कुछ यहूदियों ने आगे चलकर कलीसिया के लिए बड़ी समस्याएं खड़ी कर दी थीं। *"तब पतरस ने उन्हें क्रमानुसार सुनाना-समझाना आरम्भ किया"।* यरूशलेम की कलीसिया के अगुवों के समक्ष पतरस ने यह स्पष्ट किया कि उसने जो कुछ किया, वह क्यों किया। *"और ज्योंही मैंने बोलना आरम्भ किया त्योंही पवित्र आत्मा उन पर भी उसी रीति से उतरा जिस प्रकार आरम्भ में हम पर उतरा था। तब प्रभु का वचन मुझे स्मरण आया जो वह कहा करता था, 'यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'। अतः यदि परमेश्वर ने उन्हें भी वही वरदान दिया जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से प्राप्त हुआ था, तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?"* तब पतरस ने अपने दर्शन का उल्लेख करते हुए कुरनेलियुस के घर पर जो कुछ हुआ था उसका वर्णन किया। उसने

उन अगुवों को परमेश्वर के वचन की याद दिलाते हुए यह भी कहा कि परमेश्वर तो परमेश्वर है और उससे बहस करना अपनी मूर्खता दिखाना है (प्रेरित0 11:4; 11:15-17)।

"वे यह सुन कर चुप हो गए और परमेश्वर की महिमा करके कहने लगे, 'तब तो परमेश्वर ने ग़ैर यहूदियों को भी जीवन के लिए मन-फिराव का वरदान दिया है'।" जब उन अगुवों ने परमेश्वर द्वारा ग़ैर यहूदियों को खतना बगैर ग्रहण करने की बात सुनी, तब उन्होंने भी इस वास्तिविकता को ग्रहण किया (प्रेरित0 11:18)।

तितर-बितर हुए विश्वासियों द्वारा सेवकाई

इसके बाद प्रेरितों के काम के लेखक लूका ने स्तिफनुस की मृत्यु के पश्चात् यरूशलेम से तितर-बितर हुए, अन्य विश्वासियों द्वारा की गई सुसमाचार-सेवा सम्बन्धी विवरण को प्रस्तुत किया है। *"अतः लोग उस क्लेश के कारण जो स्तिफनुस के सम्बन्ध में आरम्भ हुआ था तितर-बितर हो गए थे। वे चलते-चलते फीनीके, साइप्रस और अन्ताकिया पहुँचे तथा यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन नहीं सुनाते थे। परन्तु उनमें से कुछ साइप्रसवासी और कुरेनी थे जो अन्ताकिया पहुँच कर यूनानियों को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे। यहूदी पृष्ठभूमि के विश्वासी यरूशलेम में हुई सतावट के कारण अपने तितर-बितर होने के बाद जहाँ कहीं गए वहाँ सिर्फ अन्य यहूदियों को ही सुसमाचार सुनाए। उस समय रोमी साम्राज्य के अधीन देशों में प्रमुखतः यूनानी भाषा ही प्रचलित थी। यरूशलेम के बाहरी प्रदेशों में रहने वाले अधिकतर यहूदी यूनानी भाषा भी जानते थे। तितर-बितर हुए यूनानी भाषा-भाषी यहूदी (मसीही विश्वासी) लोग ग़ैर यहूदियों को भी उद्धारकर्ता (मसीह यीशु) के बारे में बताने*

लगे। इस प्रकार कुरनेलियुस की भाँति अनेक प्रभु-भक्त ग़ैर यहूदी लोग प्रभु यीशु पर विश्वास करने लगे। वे जानते थे कि परमेश्वर ने एक प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता भेजने का वायदा किया है। प्रभु का हाथ उन पर था, और बड़ी संख्या में लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे" (प्रेरित0 11:19-20; 11:21)।

अन्ताकिया की कलीसिया

"जब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक पहुँची तो उन्होंने बरनाबास को अन्ताकिया भेज दिया। जब उसने वहाँ पहुँच कर परमेश्वर के अनुग्रह को देखा तो वह आनन्दित हुआ और उन सबको प्रोत्साहित करने लगा कि वे सम्पूर्ण हृदय से प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। क्योंकि वह एक भला मनुष्य था और पवित्र आत्मा तथा विश्वास से परिपूर्ण था। और बहुत से लोग प्रभु के पास लाए गए"। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने वाला यह पहला ग़ैर यहूदी झुण्ड (समूह) था। इनके विषय में सुनकर यरूशलेम की आश्चर्यचकित कलीसिया ने बरनाबास नामक एक विश्वासी को वहाँ भेज कर वास्तविकता का पता लगाना चाहा। यह वही बरनाबास था जो पौलुस के दमिश्क से यरूशलेम वापस आने पर उसका मित्र हो गया था (9:27)। बरनाबास यरूशलेम की मंडली का एक सामान्य सदस्य था (प्रेरित0 11:22-24)।

बरनाबास को अन्ताकिया की मंडली में भेजने का उद्देश्य यह पता लगाना भी था कि क्या वह झुण्ड प्रभु यीशु की समस्त शिक्षाओं का अनुसरण कर रहा है। आज की मंडलियों के लिए भी यह महत्वपूर्ण है कि वे प्रेरितों की शिक्षाओं का विश्वास एवं अनुसरण करें। प्रत्येक पीढ़ी के विश्वासियों का यह दायित्व है कि वे परमेश्वर

के वचन की सच्चाईयों को सीखें और बिना कुछ जोड़े-घटाए इन सच्चाईयों को दूसरे विश्वासियों को सौंपे (सिखाएँ)। इस विस्मयकारी दायित्व को हल्की बात नहीं समझना है।

"तब वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिए तरसुस गया। जब वह मिल गया तो उसे अन्ताकिया ले आया। तब ऐसा हुआ कि वे पूरे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते रहे और बहुत से लोगों को शिक्षा देते रहे। और चेले सबसे पहिले अन्ताकिया में मसीही कहलाए"। अन्ताकिया की मंडली में शिक्षा देते समय बरनाबास ने पौलुस को वहाँ शिक्षा देने में सहायता के लिए बुलाया। **ख्रिष्टियन** या **मसीही** शब्द का अर्थ है – ख्रीष्त का जन या मसीह का अनुयायी। अन्ताकिया के **मसीही** लोग अपने अहंकार के प्रति मृतक थे और ख्रीष्त पर आशा-भरोसा रखने वाले उसके आज्ञाकारी अनुयायी थे। इन विश्वासियों के ख्रीष्त समान जीवन-आचरण को देखकर अन्ताकिया के अविश्वासी लोग उन्हें **ख्रिष्टियन** कहने लगे। ऐसा **मसीही** कहा जाना बड़े सम्मान की बात है (प्रेरित0 11:25-26)।

याकूब की हत्या और पतरस कैदी

"लगभग उसी समय हेरोदस राजा ने कलीसिया के कुछ व्यक्तियों को सताने के लिए उन पर हाथ डाले। उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला"। पौलुस के मसीही विश्वासी हो जाने के बाद कलीसिया की सतावट रुक गई थी, और उसे कुछ समय के लिए "शाँति मिली", लेकिन कुछ ही समय बाद यह शाँति भँग हो गई।

यहाँ जिस हेरोदेस राजा का ज़िक्र किया गया है, वह उस हेरोदेस का पोता था जो यीशु को बाल्यावस्था में ही मार डालना

चाहता था। यहाँ जिस याकूब की हत्या का उल्लेख है, वह शहीद होने वाला प्रभु का पहला प्रेरित था। प्रभु जब इस धरती पर आया था तो उसने याकूब तथा अन्य प्रेरितों को इस बात के प्रति आगाह कर दिया था कि उसकी साक्षी होने के कारण उनमें से कुछेक की हत्या भी कर दी जाएगी। यहूदी अगुवे इस बात से बहुत खुश थे कि हेरोदेस राजा ने याकूब को तलवार से मरवा डाला है, क्योंकि तमाम यहूदियों को प्रभु यीशु का विश्वासी होते देख कर उन्हें बहुत ईर्ष्या होने लगी थी। उनके लिए सबसे परेशानी की बात यह थी कि यहूदी विश्वासी (मसीही) लोग इस सच्चाई के प्रति गैर यहूदियों को कायल कर रहे थे कि केवल मसीह पर विश्वास करने से अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर उन्हें स्वीकार कर लेगा। *"जब उसने देखा कि यहूदी इस बात से प्रसन्न होते हैं तो उसने पतरस को भी गिरफ्तार करने के लिए कदम उठाया। ये अख़मीरी रोटी के दिन थे। और उसने उसे पकड़ कर बन्दीगृह में डाल दिया, और चार-चार सैनिकों के चार दलों के पहरे में इस अभिप्राय से रखा कि फसह के पश्चात् उसे बाहर लोगों के सामने लाया जाए"।* यहूदियों को खुश करने की मंशा से राजा हेरोदेस ने पतरस को कैद में डाल दिया। बहरहाल, प्रेरितों के काम 12:21-23 में इस हेरोदेस राजा की मृत्यु का रोचक विवरण पाया जाता है (प्रेरित0 12:1-2; 9:31; लूका 11:49; प्रेरित0 12:3-4; 12:21-23)।

"इस प्रकार पतरस बन्दीगृह में रखा गया, परन्तु कलीसिया उसके लिए परमेश्वर से लौ लगा कर प्रार्थना करती रही"। ऐसी परिस्थितियों में विश्वासियों ने वही किया जो उनके लिए उचित था अर्थात् वे प्रार्थना में लगे रहे कि प्रभु परमेश्वर पतरस को कैद से छुटकारा दे। हालाँकि उस जेल की दीवार मोटे पत्थरों की थी और

उसके फाटक लोहे के थे, किन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य के समक्ष यह सब बेकार थे। विश्वासी लोग यह जानते थे कि उस जेल से भागना नामुमकिन है। कैदी लोग जंजीर द्वारा सुरक्षाकर्मियों से बंधे होते थे, और जेल के गेट पर अन्य गार्ड ड्यूटी देते थे ताकि कैदी भाग न सकें। क्या ऐसे सुरक्षा घेरे से पतरस को प्रभु परमेश्वर छुड़ा सकता था? मनुष्य की दृष्टि में यह एक असम्भव जैसी बात थी। शक्तिशाली रोमन सरकार की न्याय-प्रक्रिया से बच निकलना असम्भव जैसी बात थी। बहरहाल प्रभु यीशु ने कहा : "मनुष्यों के लिए यह असम्भव है, परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है"। प्रभु के चेले इस सच्चाई से परिचित थे, अतः वे पतरस के लिए प्रार्थना में लवलीन रहे (प्रेरित0 12:5; मत्ति 19:26)।

परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। जिस प्रभु परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया, लाल समुद्र में उनके लिए सूखा मार्ग बनाया, मरुभूमि में उन्हें मन्ना खिलाया, चट्टान से पानी पिलाया और इस प्रकार चालीस वर्षों तक उनकी देखभाल किया; उसके लिए पतरस को उस रोमन कैद से मुक्त करना कोई बड़ी बात नहीं थी। *"जिस रात्रि हेरोदेस उसे बाहर लाने वाला था, पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ दो सैनिकों के बीच में सो रहा था और प्रहरी द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। और देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत एकाएक प्रकट हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार कर उसे जगाया और कहा, 'जल्दी उठ!' और उसके हाथों से जंजीरें गिर पड़ीं। स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'कमर बांध, और अपने जूते पहिन ले'। उसने वैसा ही किया। फिर उसने उससे कहा, 'अपना वस्त्र पहिन कर मेरे पीछे आ'। वह बाहर निकला और उसके पीछे-पीछे*

चलता गया, परन्तु उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है वह वास्तविक है, पर उसने यह सोचा कि मैं कोई दर्शन देख रहा हूँ। और जब वे पहिले और दूसरे पहरे से निकल कर लोहे के उस फाटक पर आए जो नगर की ओर जाता है तो वह उनके लिए अपने आप खुल गया। वे बाहर निकल कर एक गली में होकर चले, और तुरन्त स्वर्गदूत उसे छोड़ कर चला गया। जब पतरस सचेत हुआ तो उसने कहा, 'अब मैं निश्चयपूर्वक जान गया हूँ कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया और यहूदियों की सारी आशाओं पर पानी फेर दिया है'।" (प्रेरित0 12:6-11)।

सम्भवतः कोई यह प्रश्न करे कि पतरस को छुड़ाने के लिए प्रभु परमेश्वर ने क्यों एक स्वर्गदूत भेजा, जबकि स्तिफनुस और याकूब को मार डाला जाने दिया? क्या पतरस को प्रभु औरों से ज्यादा प्रेम करता था? नहीं। परमेश्वर अपनी संतान को अन्य किसी संतान से ज्यादा प्यार नहीं करता। उसकी दृष्टि में उसका प्रत्येक जन प्रिय है। वह अपनी प्रत्येक संतान को बहुत प्यार करता है। वह हमसे इतना ज्यादा प्रेम करता है कि हमें हमारी पापी दशा से बचाने के लिए हमारे बदले क्रूस पर मर गया ताकि शाश्वत् काल के लिए हमें अपनी सहभागिता में रखे।

यदि परमेश्वर हम सब को एक समान प्यार करता है तो उसने स्तिफनुस और याकूब को क्यों नहीं बचाया? जबकि पतरस को कैद से छुड़ा लिया? क्या पतरस को इसलिए बचाया गया, क्योंकि मंडली के लोग उसके लिए प्रार्थना करते रहे? और स्तिफनुस और याकूब के लिए प्रार्थना नहीं की गई? नहीं। मंडली ने स्तिफनुस

और याकूब के लिए भी प्रार्थना की होगी। जब हम बीमार लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं तो कुछ लोग स्वस्थ हो जाते हैं, और अन्य कुछ लोग चंगा नहीं होते। हमारे जीवन की इन घटनाओं के बारे में प्रभु परमेश्वर जो कुछ उत्तम समझता है, वही होने देता है। परमेश्वर की बुद्धिमत्ता और हमारे प्रति उसका प्रेम सर्वोत्तम है। उसके प्रत्येक निर्णय में उसका प्रेम सक्रिय है। परमेश्वर को हम ऐसा-वैसा करने का हुक्म नहीं दे सकते। वह तो हमारा मालिक है। हमें उसकी इच्छा को सहर्ष ग्रहण करना है। परमेश्वर अपनी संतान के लिए जो कुछ करता है, वह सदैव ठीक ही होता है (रोमि0 8, 28, 25)।

हो सकता है कि प्रभु परमेश्वर ने याकूब को दुनिया से इसलिए जाने दिया क्योंकि परमेश्वर द्वारा इस संसार में याकूब से ली जाने वाली सेवकाई पूरी हो चुकी थी। दूसरी ओर पतरस को कैद से इसलिए छुड़ाया क्योंकि उससे अभी और सेवकाई करानी थी। इस असमंजसता, अस्पष्टता या भ्रामकता के बावजूद परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और उसकी यह इच्छा है कि हम असंभव परिस्थितियों में उससे प्रार्थना करते रहें। वह इस धरती पर अपनी संतानों की सेवा-सहभागिता चाहता है, और प्रार्थना इसका एक मुख्य अंश है। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना, उसके साथ सीखने का सुनहरा अनुभव (अवसर) होता है। जब हम उसके वचन के आधार पर परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते हैं तब अपने जीवन के लिए उसकी इच्छा का बेहतर ज्ञान पाते हैं और इसके फलस्वरूप उसी की इच्छा के अनुरूप प्रार्थना करना सीखते हैं (यिर्म0 33:3; यूह0 16:24)।

"जब उसे यह मालूम हुआ तो उस यूहन्ना की माता मरियम के घर गया जो मरकुस भी कहलाता है – जहाँ बहुत लोग एकत्रित होकर प्रार्थना कर रहे थे। जब उसने फाटक के द्वार को खटखटाया, तब रूदे नामक दासी उत्तर देने आयी। जब उसने पतरस की आवाज पहचानी तो आनन्द के मारे द्वार खोले बिना ही दौड़कर अन्दर गई और बताया कि पतरस फाटक पर खड़ा है। उन्होंने उससे कहा, 'तू पागल है!' परन्तु वह दृढ़तापूर्वक बोली कि यह सच है। तब उन्होंने कहा, 'उसका स्वर्गदूत होगा!' परन्तु पतरस खटखटाता रहा। जब उन्होंने द्वार खोला तो वे उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गए। परन्तु उसने उन्हें चुप रहने को हाथ से संकेत करके बताया कि प्रभु ने किस प्रकार से मुझे बन्दीगृह से बाहर निकाला, फिर उसने कहा, 'याकूब तथा भाईयों को यह समाचार दो'। तब वह वहाँ से निकलकर किसी दूसरे स्थान को चला गया'।" पतरस ने विश्वासियों से कहा कि वे याकूब तथा यरूशलेम की मंडली के अन्य अगुवों को यह बताएँ कि प्रभु परमेश्वर ने उसे कैसे बचाया है। यह याकूब वही व्यक्ति नहीं था जिसे राजा हेरोदेस ने तलवार से मरवा डाला था। यह मरियम और युसुफ का पुत्र अर्थात् यीशु का (सौतेला) भाई था। जब पतरस अन्य क्षेत्रों में सेवा-कार्य करने लगा, तब (इस) याकूब को यरूशलेम की मंडली की अगुवाई करनी पड़ी। इसी याकूब ने "याकूब" नामक पत्री को लिखा (प्रेरित0 12:12-17)।

9

अपने स्वर्गारोहण के पूर्व प्रभु यीशु ने अपने प्रेरितों से यह वायदा किया था कि जब पवित्र आत्मा आएगा तब वे यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया तथा पृथ्वी के छोर तक उसके गवाह होंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक से अब तक के विवरण में हमने यह अध्ययन किया कि किस प्रकार यरूशलेम, यहूदिया एवं सामरिया के क्षेत्रों में पवित्र आत्मा द्वारा प्रभु के चेले इस्तेमाल हुए। इसके बाद हम यह पढ़ेंगे कि किस प्रकार पवित्र आत्मा ने शाऊल तथा उसके मित्रों को इस्तेमाल करके इस्राएल के चहुँओर के देशों में सुसमाचार पहुँचाया।

"अन्ताकिया की कलीसिया में कुछ नबी तथा शिक्षक थे, जैसे : बरनाबास और शमौन जो काला कहलाता था, लूकियुस करेनी, मनाहेम जिसका पालन-पोषण चौथाई देश के राजा हेरोदेस के साथ हुआ था, और शाऊल"। शाऊल एवं बरनाबास तथा अन्य कुछ लोग अन्ताकिया की नई मंडली को शिक्षा दे रहे थे। शिक्षा देने के इस कार्य में लगे लोगों में से कुछेक विश्वासी भविष्यवक्ता (नबी) थे और कुछेक शिक्षक। यह भविष्यवक्ता ऐसे विशिष्ट लोग थे जो सीधे पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर से शिक्षा-संदेश प्राप्त करते थे, न कि मनुष्यों या पुस्तकों जैसे किसी प्राकृतिक साधन द्वारा। वह ऐसे लोग होते थे जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा वही शिक्षा प्रदान की जाती थी जो प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में उसकी संतानों के लिए जानना जरूरी था। ऐसे भविष्यवक्ता सिर्फ वही विश्वासी होते थे जिन्हें प्रभु परमेश्वर इस विशिष्ट सेवा के लिए चुनता था। कभी-कभी ऐसे भविष्यवक्ताओं के द्वारा पवित्र आत्मा किसी खास व्यक्ति को उसके भावी जीवन

सम्बन्धी घटनाओं के प्रति भी आगाह करता था। उदाहरणार्थ : प्रेरित0 21:10-11 में अगबुस नामक नबी द्वारा पौलुस की भावी गिरफ्तारी एवं रोमन अधिकारियों के हाथ सौंपे जाने सम्बन्धी भविष्यवाणी। इन भविष्यवक्ताओं के द्वारा पवित्र आत्मा ने लोगों को उनके पाप के प्रति भी आगाह किया। कलीसिया को परमेश्वर का संदेश देते समय, इन भविष्यवक्ताओं द्वारा वही सत्य बोला जाता था जो प्रभु परमेश्वर कहना चाहता था। अतः ऐसा भविष्यवक्ता (नबी) होने के लिए ईश्वरीय बुलाहट, एक महान बुलाहट होती थी (प्रेरित0 13:1; व्यव0 18:18-20)।

सारी कलीसिया के ज्ञान हेतु प्रभु परमेश्वर की ओर से प्रेरितों एवं भविष्यवक्ताओं को प्रदान की गई प्रकाशना अब ईश्वरीय संदेश के रूप में "नया नियम" शास्त्र में लिपिबद्ध है। अपनी संतानों को प्रभु परमेश्वर जो जरूरी ज्ञान देना चाहता है वह सब पवित्र बाइबॅल में प्रदान किया गया है। तो फिर कलीसिया में शिक्षकों का क्या प्रयोजन रहा? उन्होंने मंडली को "पुराना नियम" शास्त्र से शिक्षा दी, तथा प्रेरितों एवं भविष्यवक्ताओं द्वारा परमेश्वर की ओर से प्राप्त नई ईश्वरीय प्रकाशना की भी शिक्षा दी।

प्रभु परमेश्वर अपने विश्वासियों के लिए जो ज्ञान देना चाहता है, वह सब उसके वचन (पवित्र बाइबॅल) में लिखा हुआ है। इसका मतलब यह नहीं कि प्रभु परमेश्वर आजकल हमसे बात नहीं करता; क्योंकि उसका वचन पढ़ते समय वह वचन के द्वारा हमसे बात करता है। पवित्र आत्मा द्वारा लिखित वचन को हमारी खास परिस्थिति में लागू किया जाता है। अपने वचन के द्वारा परमेश्वर हमसे जो कुछ कहता है उस पर विश्वास करने तथा उसके प्रत्युत्तर में विश्वासपूर्वक आगे बढ़ने की अगुवाई करता है। अपने वचन के द्वारा आपकी अन्तरात्मा से वह जो कुछ कहता है वह खरी शिक्षा

(sound doctrine) पर आधारित (प्रमाणित) होना चाहिए। इसीलिए नये विश्वासियों के लिए भी सम्पूर्ण बाइबॅल अध्ययन आवश्यक है। झूठे शिक्षकों द्वारा धोखा खाने से बचने के लिए विश्वासीजन को पवित्र शास्त्र अध्ययन में परिश्रमशील होना चाहिए जिससे कि औरों की शिक्षा को जाँच-परख सके। हमें "प्रत्येक आत्मा की प्रतीति" के प्रति खबरदार किया गया है, और "आत्माओं को" परखने के लिए कहा गया है कि परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं (प्रेरित0 17:11; प0यूह0 4:1)।

वर्तमान कलीसिया में वही शिक्षा दी जाती है जिसे परमेश्वर ने अपने वचन में स्पष्टतः प्रकाशित किया है। अपने विश्वासियों से पवित्र वचन सीखने की परमेश्वर इसलिए भी अपेक्षा करता है ताकि अन्ताकिया के अगुवों जैसे हम भी प्रभु के वचन के योग्य शिक्षक हों। कलीसियाई उन्नति एवं विश्वासियों के आत्मिक पालन-पोषण में प्रत्येक विश्वासी का योगदान है। पुरुषों पर कलीसिया के देखरेख तथा सभी सदस्यों को शिक्षा देने की जिम्मेदारी है। स्त्रियों पर अन्य स्त्रियों (विशेषकर जवान स्त्रियों) को तथा बच्चों को शिक्षा देने की जिम्मेदारी है (तीतुस 2:3-5; प0तीमु0 2:12)।

बरनाबास और शाऊल की मिशनरी बुलाहट

"जब वे उपवास तथा प्रभु की उपासना कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'मेरे लिए बरनाबास तथा शाऊल को उस कार्य के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है'। जब वे उपवास तथा प्रार्थना कर चुके तो उन पर हाथ रख कर उन्हें भेज दिया"। अन्ताकिया की मंडली द्वारा प्रभु परमेश्वर की आराधना करते समय पवित्र आत्मा उनसे बोला और यह निर्देश दिया कि बरनाबास और शाऊल को उन लोगों में सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजें

जिन्होंने सुसमाचार को कभी नहीं सुना है। अतः सारी मंडली एकत्रित हुई और उस मंडली के अगुवों ने बरनाबास और शाऊल पर अपना हाथ रखकर यह प्रदर्शित किया कि प्रभु यीशु की शिक्षा देने के लिए उन दोनों को भेजने का सारी मंडली समर्थन करती है। ऐसा करके उन्होंने यह भी दर्शाया कि वे उन दोनों के लिए प्रार्थना करेंगे और उनकी सेवकाई को सपोर्ट करेंगे। जिस सेवा में उन्हें पवित्र आत्मा की बुलाहट के अनुसार भेजा जा रहा था वह सिर्फ उन दोनों का ही काम नहीं था बल्कि अन्ताकिया की सारी कलीसिया का सेवा-कार्य था। इस प्रकार शाऊल एवं बरनाबास उस सारी मंडली के प्रतिनिधि स्वरूप सेवकाई में जा रहे थे (प्रेरित0 13:2-4)।

आज भी प्रवित्र आत्मा विश्वासियों को ऐसी सेवकाई में बुलाता है। चाहे विश्वासीजन अपनी स्थानीय कलीसिया में रह कर सेवा करे अथवा अन्यत्र भेजा जाए, कलीसिया के सेवा-मिशन में प्रत्येक विश्वासी का एक विशेष योगदान (भूमिका) है। जो लोग कलीसिया से दूर जाकर मिशनरी सेवा में रहते हैं, वह भी अपने भेजने वाली कलीसिया के अंग हैं, और उन्हें अपनी मंडली की प्रार्थना एवं उसके सपोर्ट की आवश्यकता होती है। जो विश्वासी सेवकाई के लिए अन्यत्र भेजे जाने के बजाय अपनी स्थानीय मंडली के ही करीब रहते हैं, उनके लिए यह सुअवसर होता है कि बाहर भेजे गये सेवकों के लिए प्रार्थना करें और उन्हें सपोर्ट करें (मत्ती 9:37-38)।

"अतः पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाकर वे सिलूकिया गए और वहाँ से जहाज़ द्वारा साइप्रस गए। सलमीस पहुँच कर उन्होंने यहूदियों के आराधनालयों में परमेश्वर के वचन का प्रचार करना प्रारम्भ किया। यूहन्ना उनका एक सेवक था"। शाऊल और बरनाबास

अन्ताकिया से जलयान द्वारा प्रस्थान करने के बाद साइप्रस नामक द्वीप पर पहुँचे। बरनाबास साइप्रस का निवासी था। उस द्वीप के सलमीस नामक नगर में पहुँच कर उन्होंने वहाँ के यहूदी सभागृह में शिक्षा दिया। यद्यपि यह दोनों मुख्यतः गैर यहूदियों में सुसमाचार प्रचार के लिए भेजे गए थे, किन्तु अक्सर जब वे किसी ऐसे स्थान पर होते थे जहाँ यहूदी सभागृह होता था तो वे पहले वहीं जाकर शिक्षा देते थे, और इस प्रकार अन्य जातियों से पहले यहूदियों को सुसमाचार ग्रहण करने का अवसर प्रदान करते थे। ऐसा इसीलिए करते थे क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने सर्वप्रथम यहूदियों को "अपनी निज प्रजा" होने की बुलाहट प्रदान किया था और उन्हें ही प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता के आगमन सम्बन्धी वायदे दिए गए थे (प्रेरित0 13:4-5)।

किसी स्थान के यहूदी सभागृह से सुसमाचार शिक्षा की शुरुआत करना एक अच्छा कदम था, क्योंकि वहाँ जाने वाले यहूदियों को पुराना नियम शास्त्र की तथा प्रतिज्ञात् मुक्तिदाता के बारे में जानकारी थी। लेकिन उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि वह प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता आ चुका है। वे यह नहीं जानते थे कि नासरत के जिस यीशु को उसके अगुवों ने क्रूस पर चढ़ा दिया था वही प्रतिज्ञात् मसीह था जिसके बारे में सम्पूर्ण पुराना नियम में प्रभु परमेश्वर ने वायदा किया था। संभवतः इन साइप्रस निवासी यहूदियों को यह मालूम था कि यीशु नाम के एक व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ा दिया गया है। बहरहाल उन्हें यह नहीं मालूम था कि वह तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो गया और अब पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है, और यह वही सच्चा उद्धारकर्ता है जिसे भेजने की प्रभु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। बरनाबास और शाऊल ने प्रभु यीशु मसीह के पुनः जीवित हो उठने की साक्षी दी। स्मरण रहे कि

प्रभु यीशु के पुनः जीवित हो उठने के बाद शाऊल ने दमिश्क के रास्ते पर उसका दर्शन प्राप्त किया था। अतः बरनाबास और शाऊल जब किसी नगर में पहुँचते थे तो सबसे पहले वहाँ के यहूदियों के सभागृह में जाकर संगति करते थे। प्रायः व्यवस्था-पाठ हो जाने के बाद, उन्हें कुछ कहने का अवसर दिया जाता था (प्रेरित0 13:15)। वे उस समय वहाँ उपस्थित लोगों को यह शिक्षा देते थे कि यीशु नासरी ही प्रतिज्ञात् मसीह है और उस पर विश्वास करने वालों को उद्धार प्राप्त होता है। ऐसे समय वे वहाँ उपस्थित यहूदियों को पुराना नियम की नबूवतों को भी स्मरण कराते थे; और तब यह प्रमाणित करते थे कि कैसे प्रभु यीशु के जीवन में यह सारी नबूवतें पूरी हुईं।

इन सभागृहों में सिर्फ यहूदी ही नहीं, बल्कि कुरनेलियुस जैसे गैर यहूदी भी आते थे। ऐसे ग़ैर यहूदी सच्चे परमेश्वर के उपासक एवं उसके भक्त होते थे। यह लोग पुराना नियम एवं प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता सम्बन्धी भविष्यवाणियों से परिचित थे और उन पर विश्वास करते थे। इनमें से अधिकतर गैर यहूदी खतना करा कर यहूदी नहीं बनना चाहते थे, परन्तु पुराना नियम की शिक्षाओं पर विश्वास करते थे। यहूदी सभागृहों में बरनाबास और शाऊल की शिक्षाओं को सुनने वालों में से प्रायः ऐसे ग़ैर यहूदी ही मसीह के सुसमाचार को अपनाने में आगे रहे।

प्रेरितों के काम के तेरहवें अध्याय के पाँचवे पद में जिस यूहन्ना का (जो **मरकुस** भी कहलाता था – 12:25) ज़िक्र है, वह प्रेरित यूहन्ना नहीं था, बल्कि बरनाबास का एक रिश्तेदार था (कुलु0 4:10)। अन्ततः बरनाबास, शाऊल और मरकुस (यूहन्ना) सलमीस से प्रस्थान करके पाफुस पहुँचे। पाफुस पहुँचने के बाद का विवरण

लिखते हुए "प्रेरितों के काम" का लेखक लूका "**शाऊल**" के यहूदी नाम के बजाय उसका रोमन नाम "**पौलुस**" इस्तेमाल करने लगता है।

"पौलुस और उसके साथी जल-मार्ग से होकर पाफुस से पंफूलिया के पिरगा में आए, और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया"। पिरगा पहुँचने पर यूहन्ना (मरकुस) उन्हें छोड़कर वापिस यरूशलेम चला गया। इन पदों से यह स्पष्ट नहीं है कि मरकुस (यूहन्ना) उन्हें छोड़कर क्यों वापिस चला गया, किन्तु आगे के विवरण से पता चलता है कि बरनाबास के निवेदन के बावजूद पौलुस अपनी अगली सुसमाचार प्रचार-यात्रा में यूहन्ना (मरकुस) को साथ रखने से खुश नहीं था। बाद में मरकुस (यूहन्ना) के प्रति पौलुस ने नरमी अपनायी और अपने मृत्यु-दण्ड से पूर्व रोम में अपने कारावास के दौरान भेंट करने आने के लिए उससे आग्रह किया (प्रेरित0 13:13; 15:36-38; दू0तीमु0 4:11)।

"वे पिरगा से चलकर पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुँचे और सबत के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए"। पिरगा से प्रस्थान करके वे पिसिदिया प्रदेश के एक अन्य अन्ताकिया नामक शहर में पहुँचे। यह अन्ताकिया नामक नगर तेरहवें अध्याय के पहले पद में वर्णित सीरिया के **अन्ताकिया** नामक नगर से भिन्न स्थान था। *"व्यवस्था और नबियों की पुस्तकों में से वचन पढ़ने के पश्चात् आराधनालय के अधिकारियों ने उनके पास कहला भेजा, 'भाइयों, यदि तुम्हारे पास लोगों के लिए प्रोत्साहन का कोई वचन है तो सुनाओ'। तब पौलुस उठ खड़ा हुआ और हाथ से संकेत करके कहने लगा। 'हे इस्राएलियों और परमेश्वर का भय मानने वालों, सुनो'"* (प्रेरित0 13:14; 13:15-16)।

इस पिसिदिया प्रदेश के **अन्ताकिया** शहर में भी पौलुस एवं उसके साथी सबसे पहले यहूदी सभागृह में गए। वहाँ भी, अवसर दिये जाने पर उसने पुराना नियम की शिक्षाओं एवं भविष्यवाणियों के आधार पर उपस्थित लोगों को प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता के भेजे जाने के बारे में परमेश्वर के वायदों की याद दिलाया। तब उसने यह बताया के प्रभु परमेश्वर ने नासरत के यीशु को भेजकर अपने वायदे को पूरा किया। परन्तु यहूदियों और उनके अगुवों ने यीशु नासरी को प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता मानने से इंकार (अस्वीकार) कर दिया और उसे क्रूस पर मार डालने के बाद दफना दिया। लेकिन पिता परमेश्वर ने उसे तीसरे दिन मृतकों में से पुनः जीवित कर दिया। अब उस पर विश्वास करने के द्वारा पापों की क्षमा मिलती है और परमेश्वर ऐसे विश्वासियों को ग्रहण करता है। *"हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो पूर्वजों से की गई थी यह सुसमाचार सुनाते हैं, कि परमेश्वर ने यीशु को जिला कर वही प्रतिज्ञा हमारी संतान के लिए पूर्ण की जैसा कि दूसरे भजन में भी लिखा है, **'तू मेरा पुत्र है, आज ही मैंने तुझे जन्म दिया है।'**... इसलिए हे भाइयों, तुम यह जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें सुनाया जाता है, और इसी के द्वारा प्रत्येक विश्वास करने वाला उन सब बातों से छुटकारा पाता है जिन से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा छुटकारा नहीं पा सकते थे।"* पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि व्यवस्था-पालन द्वारा परमेश्वर के समक्ष वे कभी भी ग्रहणयोग्य नहीं हो सकते। क्यों? क्योंकि व्यवस्था का पूरी तरह पालन करने में कोई भी सक्षम नहीं है। प्रभु यीशु के बलिदान (मृत्यु) एवं उसके पुनरुत्थान पर विश्वास के द्वारा प्रत्येक विश्वासी को क्षमा प्राप्त है। इतना ही नहीं, बल्कि ऐसे विश्वासी को एक नया स्वभाव तथा परमेश्वर के समक्ष स्वीकार्यता मिलती है (प्रेरित0 13:32-33; 38-39)।

*"जब पौलुस तथा बरनाबास बाहर जाने लगे तो लोगों ने उनसे अनुरोध किया कि आने वाले सब्त के दिन ये बातें उन्हें फिर से सुनाई जाएं। जब आराधना समाप्त हो गयी तो बहुत-से यहूदी तथा यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से लोग पौलुस तथा बरनाबास के पीछे चल पड़े। उन्होंने वार्तालाप करते हुए उनसे आग्रह किया कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहें। अगले सब्त को प्रायः सारा नगर परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उमड़ पड़ा। परन्तु जब यहूदियों ने भीड़ को देखा तो वे ईर्ष्या से भर गये और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों का खण्डन करने लगे। तब पौलुस तथा बरनाबास ने दृढ़तापूर्वक कहा, 'यह अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता, परन्तु इसलिए कि तुम उसकी अवहेलना करते हो तथा अपने आप को अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो तो देखो, हम ग़ैर यहूदियों की ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, **'मैंने तुझे ग़ैर यहूदियों के लिए ज्योति ठहराया है कि तू पृथ्वी के छोर तक उद्धार का कारण हो'**"* (प्रेरित0 13:42-47)।

देहधारी होकर संसार में अपने आगमन से पूर्व प्रभु यीशु यह जानता था कि मसीह के रूप में उसे बहुत कम इस्राएली ग्रहण करेंगे। परन्तु परमेश्वर की योजना यह थी कि ग़ैर यहूदियों को भी **मसीह** का सुसमाचार मिले ताकि उन्हें भी उनके पापों से क्षमा-प्राप्ति हो। सदियों पूर्व प्रभु परमेश्वर ने अब्राहम से यह वायदा किया था कि उसके द्वारा (सिर्फ यहूदी घराने ही नहीं; बल्कि) "पृथ्वी के सब घराने" आशीष पाएँगे (उत्प0 12:3)। अतः पौलुस और बरनाबास ने उस यहूदी सभागृह से उनके साथ बाहर आने वालों को "परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहने" के लिए प्रोत्साहित किया।

"और प्रभु का वचन पूरे क्षेत्र में फैलता चला गया। परन्तु यहूदियों ने भक्त एवं कुलीन स्त्रियों तथा शहर के प्रमुख व्यक्तियों को भड़काया और पौलुस तथा बरनाबास के विरुद्ध उपद्रव करवा कर उन्हें अपनी सीमा के बाहर निकाल दिया। तब वे उनके विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए। और चेले आनन्द तथा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते गए"। अफसोस है कि अधिकतर यहूदियों ने नासरत के यीशु को प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता (मसीह) नहीं माना। उन्होंने यह सोचा कि उनकी यहूदी विरासत और व्यवस्था के नियमों का पालन करने की उनकी कोशिश उन्हें परमेश्वर के यहाँ ग्रहण योग्य बनाएगी। इसके विपरीत बहुत से ग़ैर यहूदियों ने अपने पापीपन तथ मसीह बगैर अपनी असहाय अवस्था को पहचाना, और मसीह यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करना ही अपनी एकमात्र जीवन-आशा समझा (प्रेरित0 13:47-52)।

यहूदियों द्वारा सुसमाचार अस्वीकार करने से पौलुस और बरनाबास के सुसमाचार मिशन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। वे 'परिस्थिति की अधीनता' के बजाय पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन आचरण कर आनन्द ले रहे थे। बेशक, यहूदियों के मन की कठोरता को देखकर वे दुखित हुए, लेकिन प्रभु के इन दोनों सेवकों ने अपने कार्य-उद्देश्य तथा परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता को अपनी परिस्थितियों एवं अपने मनोवेग द्वारा नियंत्रित नहीं होने दिया। उनकी मनोवृत्ति एवं उनके कार्य-निर्णय परमेश्वर के सत्य की अधीनता में थे। अतः जब परमेश्वर के संदेश एवं उनका विरोध हुआ, तो प्रत्येक परिस्थिति पर परमेश्वर के नियंत्रण को पहचानते हुए वे "अपने पैरों की धूल झाड़ कर" ईश्वरीय उद्देश्य के अनुसार आगे चल दिए।

इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे में

"फिर ऐसा हुआ कि इकुनियुम में वे साथ-साथ यहूदियों के आराधनालय में गए, और उन्होंने इस ढंग से बातें कीं कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुत लोगों ने विश्वास किया। परन्तु जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया, उन्होंने ग़ैर-यहूदियों के मनों को उत्तेजित किया और भाइयों के विरुद्ध उनमें कटुता उत्पन्न कर दी। इसलिए वे वहाँ बहुत दिनों तक रहे और प्रभु पर भरोसा रखते हुए निर्भयता से प्रचार करते रहे, और प्रभु उनके हाथों से चिन्ह और अद्‌भुत काम करवा कर अपने अनुग्रह के वचन की साक्षी देता रहा। परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई जिससे कुछ तो यहूदियों के पक्ष में और कुछ प्रेरितों के पक्ष में हो गए। परन्तु जब ग़ैर यहूदियों और यहूदियों ने अपने अधिकारियों के साथ मिलकर उनके साथ दुर्व्यवहार करने तथा उन्हें पथराव करने का प्रयत्न किया तो वे इसे जानकर लुकाउनिया, लुस्त्रा और दिरबे के नगरों में और आस-पास के प्रदेशों में भाग निकले और वहाँ सुसमाचार सुनाते रहे। लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा हुआ था, जिसके पैर निर्बल थे। वह माँ के गर्भ से ही लँगड़ा था और कभी नहीं चला था। यह व्यक्ति पौलुस को बातें करते सुन रहा था। पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाई और यह देख कर कि उसे चँगा हो जाने का विश्वास है, बड़ी जोर से कहा, 'अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो जा!' और वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने फिरने लगा। पौलुस के इस कार्य को देखकर लुकाउनिया की भाषा में लोग चिल्लाकर कहने लगे, 'देवतागण मनुष्यों का रूप धारण करके हमारे बीच में उतर आए हैं'। वे बरनाबास को ज्यूस कहने लगे तथा पौलुस को हिरमेस, क्योंकि वह बात करने में प्रमुख था। ज्यूस का मंदिर शहर के सामने ही था।

उसका पुजारी बैलों और मालाओं को फाटक पर ले आया और उसने भीड़ के साथ मिलकर बलिदान चढ़ाना चाहा" (प्रेरित0 14:1-13)।

यहाँ लुस्त्रा और दिरबे में यहूदी सभागृह होने का ज़िक्र नहीं है। यह ग़ैर यहूदी नगर थे, और यहाँ के लोग मूर्तिपूजक थे। यहूदियों के सच्चे एवं जीवित प्रभु परमेश्वर के बारे में वे नहीं जानते थे। परमेश्वर की सामर्थ्य में पौलुस ने उसके अनुग्रह के वचन की साक्षी दी। पौलुस द्वारा परमेश्वर के आश्चर्यकर्म को देखकर वहाँ के लोग इन दोनों प्रचारकों की अपने दो देवताओं के रूप में पूजा करने के जोश में आ गए, और उनके एक पुजारी ने उनके समक्ष बैलों का भेंट-बलिदान भी चढ़ाने का प्रयास किया। *"परन्तु जब प्रेरितों ने अर्थात् बरनाबास और पौलुस ने यह सुना तो उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े और भीड़ की ओर (यह) चिल्लाते हुए लपके"।* पहले तो इस बलिदान की बात को पौलुस एवं बरनाबास नहीं समझ पाए, लेकिन जैसे ही उन्हें यह एहसास हुआ कि लोग उनकी पूजा-अर्चना करने वाले हैं "तो उन्होंने अपने वस्त्र" फाड़ कर यह दर्शाया कि वे उससे प्रसन्न होने के बजाय शोकित हैं। उन्होंने कहा, *"अरे भाइयों, यह सब क्या कर रहे हो? हम भी तो तुम्हारे समान मनुष्य ही हैं; और तुम्हें इस अभिप्राय से सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं को छोड़कर जीवित परमेश्वर की ओर फिरो जिसने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र तथा जो कुछ उनमें है, सब को बनाया। उसने बीते युगों में सभी जातियों को अपने-अपने मार्गों पर चलने दिया। फिर भी उसने अपने आपको गवाह रहित नहीं छोड़ा, किन्तु वह भलाई करता रहा और तुम्हें वर्षा तथा फलवंत ऋतुएं देकर तुम्हारे हृदयों को भोजन तथा आनन्द से तृप्त करता रहा'। यह कहने पर भी उन्होंने भीड़ को*

बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिए बलिदान न चढ़ाएँ" (प्रेरित0 14:1-13; 14:14; 14:15-18)।

बरनाबास और पौलुस की वापसी यात्रा

"और उस सुसमाचार को सुनाने तथा बहुत से चेले बनाने के पश्चात्, वे लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए, और चेलों के मनों को स्थिर करते और विश्वास में स्थिर रहने के लिए यह कह कर प्रोत्साहित करते रहे, 'हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है'।" वे पुनः लुस्त्रा, इकुनियुम और पिसिदिया के अन्ताकिया लौट कर नये विश्वासियों को परमेश्वर के बारे में तथा मसीह में प्राप्त नवजीवन की और शिक्षा दिये। इस प्रकार उन लोगों ने नयी मंडलियों को मसीह के विश्वास में स्थिर बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया और परमेश्वर की संतान होने के कारण इस संसार में कठिनाईयों एवं सतावट को सहने हेतु तत्पर रहने के लिए आगाह किया (प्रेरित0 14:21-22; प0पत0 2:21)।

"फिर उन्होंने प्रत्येक कलीसिया में प्राचीन नियुक्त कर के उपवास सहित प्रार्थना की, और उन्हें प्रभु के हाथों में सौंप दिया जिस पर उन्होंने विश्वास किया था"। पौलुस और बरनाबास ने नई मंडलियों में प्राचीनों को नियुक्त किया। ये प्राचीन उन मंडलियों में शिक्षा देने एवं उनकी देखभाल के लिए उसी प्रकार जिम्मेदार थे जिस प्रकार प्रेरितगण यरूशलेम की मंडली की देखभाल कर रहे थे और जिस प्रकार पौलुस और बरनाबास (सीरिया के) **अन्ताकिया** की मंडली में। प्राचीनों का सेवा-दायित्व एक महत्वपूर्ण कार्य है। कलीसिया के प्राचीन (अगुवे) ऐसे होने चाहिए जो पवित्र आत्मा द्वारा तैयार, लैस एवं नियंत्रित हों। कोई नया विश्वासी या आत्मिक तौर

से अपरिपक्व विश्वासी कलीसिया को बहुत नुकसान पहुँचा सकता है, इसीलिए पवित्रशास्त्र में बहुत स्पष्ट लिखा है कि ऐसे दायित्वपूर्ण सेवा-कार्य के लिए सिर्फ उन्हीं विश्वासियों को नियुक्त करना चाहिए जिनका आत्मिक जीवन परिपक्वता की ओर हो और जिनके जीवन आचरण में पवित्र आत्मा के फल प्रकट हों (प्रेरित0 14:23; तीतुस 1:5-9; प0तीमु0 3:1-7)।

घर वापसी

"तब वे पिसिदिया से होते हुए पंफूलिया पहुँचे। फिर पिरगा में वचन सुना कर वे इटली गए। वहाँ से वे जहाज द्वारा अन्ताकिया गए, जहाँ वे परमेश्वर के अनुग्रह में उस कार्य के लिए सौंपे गए जिसे उन्होंने पूरा किया था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने कलीसिया को एकत्रित किया और जो कुछ परमेश्वर ने उनके साथ किया था उसे कह सुनाया, और यह भी कि किस प्रकार परमेश्वर ने ग़ैर यहूदियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया। तब वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे"। इस प्रकार सुसमाचार सेवा करते हुए पौलुस और बरनाबास अन्ताकिया की मंडली में वापस आए, जहाँ से उन्हें इस सेवा के लिए भेजा गया था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने वह सब बताया जो पवित्र आत्मा ने उनके द्वारा किया। पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह के अद्‌भुत संदेश को सुनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने पर हम भी अपनी मंडली के मध्य लोगों को प्रोत्साहित करने हेतु परमेश्वर के कार्य के बारे में बता सकते हैं (प्रेरित0 14:24-28)।

10

"पौलुस तथा बरनाबास भी अन्ताकिया में रह गए, और बहुत लोगों के साथ वे भी प्रभु के वचन की शिक्षा देते और उसका प्रचार करते रहे। कुछ दिनों के पश्चात् पौलुस ने बरनाबास से कहा, 'जिन जिन नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ वहाँ लौट कर भाइयों को देखें कि वे कैसे हैं'।" अपनी गृह-मंडली अर्थात् अन्ताकिया की कलीसिया में "चेलों के साथ बहुत दिन तक" रहने के बाद पौलुस और बरनाबास ने अपनी प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित मंडलियों की ओर पुनः जाने का निर्णय किया। उन मंडलियों को और शिक्षा एवं मार्ग-दर्शन (guidance) रूपी सहायता देने के लिए वे वहाँ जाना चाहते थे। जैसे कोई माता अपने नवजात शिशु को पैदा करके दुग्ध-भोजन के लिए असहाय (अकेला) नहीं छोड़ती उसी प्रकार नये विश्वासियों की भी देखभाल करना अत्यावश्यक है। नये विश्वासियों की देखरेख (पालन-पोषण) मंडली की एक बहुत ही महत्वपूर्ण सेवा है। सिर्फ नये विश्वासियों को ही नहीं, बल्कि सभी विश्वासियों को ठोस शिक्षा पाने की जरूरत है। यह दायित्व मुख्यतः कलीसिया के अगुवों का होता है। प्राचीनों का कार्य-दायित्व अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, उनके लिए बहुत कार्य हैं। प्राचीन लोग शिक्षा देते हैं, परामर्श देते हैं और आवश्यकतानुसार लोगों के घरों में भी जाकर भेंट करते हैं। उन्हें भक्तिपूर्ण उदाहरण होना है और अपने झुंड के विश्वासियों की आत्मिक देखभाल करनी है। किसी मंडली के चहुँओर उस मंडली के विश्वासियों की सुसमाचार-सेवा के फलस्वरूप जब नये लोग प्रभु पर विश्वास करके

उद्धार पाते हैं तब उस मंडली की यह जिम्मेदारी है कि उनके लिए आवश्यक शिक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करे।

"बरनाबास अपने साथ मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी ले जाने का इच्छुक था। परन्तु पौलुस इस बात पर अड़ा रहा कि हम उस व्यक्ति को जिसने पंफूलिया से हमारा साथ छोड़ दिया था और जो हमारे साथ काम पर नहीं गया था अपने साथ न ले जाएँ"। मरकुस कहलाने वाला यूहन्ना जो प्रथम मिशनरी यात्रा में पौलुस और बरनाबास के साथ था, किन्तु बाद में उन्हें छोड़ कर वापस आ गया था, अब उनके मध्य मतभेद का कारण बन गया। पौलुस उसे अब अपने साथ नहीं ले जाना चाहता था, जबकि बरनाबास उसे ले जाने के पक्ष में था। *"इस पर उनके मध्य ऐसा बड़ा मतभेद उठ खड़ा हुआ कि वे एक दूसरे से अलग हो गए और बरनाबास मरकुस को लेकर जलमार्ग से साइप्रस चला गया"।*

बरनाबास मरकुस (यूहन्ना) को छोड़ नहीं सका। बरनाबास कलीसिया के लोगों में 'प्रोत्साहन या ढाढस-पुत्र' के रूप में जाना जाता था, क्योंकि वह ऐसे विश्वासियों का साथी व सहारा होता था जो तिरस्कृत या मित्र-विहीन दिखाई देते थे। वह ऐसे लोगों को अपनी संगति, सहभागिता एवं सहायता के द्वारा प्रभु में स्थिरता, हियाव और ढाढस देता था। जब पौलुस नये विश्वासी के रूप में दमिश्क से यरूशलेम वापिस आया था तो उस पर कलीसिया के लोग भरोसा करने से हिचकिचा रहे थे। उस पर वहाँ की मंडली ने तभी भरोसा किया जब बरनाबास ने उसे अपनाकर मंडली के लोगों को यह आश्वासन दिया कि पौलुस अब प्रभु में हमारा एक भाई है, विरोधी नहीं। इस गहरे मतभेद के बावजूद आगे चलकर मरकुस को

प्रभु ने पौलुस के लिये एक आशीष का कारण बनाया (प्रेरित0 15:35-36; इब्रा0 13:7,17; प्रेरित0 15:37-38; 15:39; दू0तीमु0 4:11)।

पौलुस का सीरिया, किलीकिया और गलातिया की ओर प्रस्थान

"परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया और भाइयों द्वारा प्रभु के अनुग्रह में सौंपे जाकर वह वहाँ से चल दिया"। यरूशलेम की मंडली के सीलास नामक एक अगुवे को पौलुस ने अपना सहकर्मी चुना। यहाँ प्रभु के द्वारा प्रदान किया गया एक बुद्धिमत्तापूर्ण सिद्धान्त पाया जाता है। जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों को प्रचार एवं चंगाई के सेवा में भेजा तब उन्हें दो-दो करके भेजा था। प्रभु की सेवा में हमारा सहकर्मी परमेश्वर की ओर से एक वरदान होता है। *"और सीरिया तथा किलिकिया में फिरता हुआ कलीसियाओं को स्थिर करता रहा"।* पवित्र शास्त्र में यह नहीं बताया गया है कि सीरिया और किलिकिया क्षेत्र की यह कलीसियाएँ कैसे प्रारम्भ हुईं; लेकिन संभावना इस बात की है कि एक नये विश्वासी के रूप में जब यरूशलेम से पौलुस अपने घर की ओर जा रहा था तब उसकी सुसमाचार-साक्षी से यह मंडलियाँ शुरू हुईं (प्रेरित0 15:40; मर0 6:7; प्रेरित0 15:41)।

"तब वह दिरबे और लुस्त्रा को भी गया। और देखो, वहाँ तीमुथियुस नामक एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदी महिला का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। उसका लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में अच्छा नाम था। पौलुस इस व्यक्ति को अपने साथ ले जाना चाहता था। अतः उसे लेकर उन स्थानों में रहने वाले यहूदियों के कारण उसने उसका ख़तना किया, क्योंकि वे सब जानते थे कि उसका पिता यूनानी था"। पौलुस ने तीमुथियुस को खतना

क्यों कराने दिया? क्या खतना बगैर परमेश्वर के समक्ष तीमुथियुस स्वीकार्य नहीं होता? नहीं! ऐसा नहीं है। उसका खतना इसलिए कराया गया ताकि वह पौलुस के साथ यहूदी सभागृहों में शिक्षा देने जा सके। यदि तीमुथियुस का खतना नहीं होता, तो यहूदी सभागृहों में शिक्षा देने के लिए उसका स्वागत नहीं होता, और पौलुस की शिक्षा-सेवा में भी रुकावट आती। मसीही विश्वासी के रूप में हम अनेक ऐसे काम करते हैं, या नहीं करते हैं। क्यों? क्या परमेश्वर के समक्ष स्वीकार्य होने के लिए? नहीं! बल्कि इसलिए ताकि दूसरों को हमारे कार्य-व्यवहार से ठोकर न लगे (प्रेरित0 16:1-3)।

मैसीडोनिया की ओर

"जब वे नगर-नगर होकर जा रहे थे तो उन आदेशों को पहुँचाते गए जिनका निश्चय यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने किया था कि लोग उनका पालन करें। इस प्रकार कलीसियाएं विश्वास में दृढ़ होती गईं और संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ती गईं"। दिरबे और लुस्त्रा से प्रस्थान करने के बाद, पौलुस और सीलास उस क्षेत्र की अन्य मंडलियों में भी गए।

"वे फ्रूगिया और गलातिया के प्रदेशों से होकर निकले, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। और जब पे मूसिया में पहुँचे तो उन्होंने बितूनिया जाने का यत्न किया, परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया; अतः वे मूसिया से होकर त्रोआस पहुँचे"। तत्कालीन एशिया क्षेत्र के बहुत से लोग अभी सुसमाचार संदेश नहीं सुने थे। अतः पौलुस उन इलाकों में जाना चाहा; किन्तु उस समय प्रभु की यह इच्छा नहीं थी। पवित्र आत्मा सभी विश्वासियों में वास करता है, जिससे उन्हें सारे संसार में सुसमाचार पहुँचाने की सामर्थ्य (क्षमता एवं योग्यता) प्राप्त हो। यद्यपि

प्रभु की आज्ञा है कि सुसमाचार सारे संसार के लोगों को सुनाना है, तथापि हमें पवित्र आत्मा पर आश्रित रह कर उसकी अगुवाई एवं मार्ग-दर्शन के अनुसार सही लोगों के पास सही समय पर सुसमाचार-प्रचार करना है। इसलिए हमें सदैव प्रभु की इच्छा एवं अगुवाई हेतु उसकी ओर ही दृष्टि लगाए रहना है। हमें सब लोगों को सुसमाचार सुनाने के उपयुक्त अवसर के लिए प्रभु की ओर देखते रहना है, परन्तु किस समय किधर जाएँ, इस अगुवाई के लिए पवित्र आत्मा पर आश्रित जीवन बिताना है। प्रभु ने पौलुस को "एशिया में" और अधिक प्रचार करने से उस समय क्यों रोका? क्या वहाँ के लोगों को प्रभु प्रेम नहीं करता था? बेशक, वह प्रेम करता था। आगे चलकर उचित समय पर "एशिया" के शेष क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार किया गया।

हाँ, इन पदों में यह नहीं बताया गया है कि उस समय पौलुस को परमेश्वर ने "एशिया" में आगे बढ़ने से क्यों रोक दिया। परमेश्वर अपने प्रत्येक कार्य-व्यवहार का हमें सदैव कारण नहीं बताता। हमें उस पर भरोसा करने की बुलाहट मिली है, न कि उससे प्रश्न (संदेश, तर्क, विवाद) करने की। उसके प्रत्येक कार्य की व्याख्या (कारण) की ज़िद करके वास्तव में हम यह दर्शाते हैं कि हम उस पर भरोसा नहीं करते। इसके विपरीत हमें सदैव उस पर भरोसा रखना चाहिए। और उसकी आज्ञा माननी चाहिए। हाँ, तब भी जब कि हम उसके कार्य-व्यवहार का कारण नहीं समझते। चूँकि पौलुस एवं उसके साथी पवित्र आत्मा की अगुवाई के लिए परमेश्वर पर आश्रित रहते थे, अतएव उसने उनकी अगुवाई की : *"रात में पौलुस को एक दर्शन दिखाई दिया कि मैसीडोनिया का एक पुरुष खड़ा हुआ मुझसे निवेदन कर रहा है, 'मैसीडोनिया में आकर हमारी सहायता कर'।"*

इसका मतलब यह नहीं है कि प्रभु परमेश्वर ने सदैव दर्शन के द्वारा ही पौलुस की अगुवाई किया। नहीं, उसने सदैव दर्शन के द्वारा न तो पौलुस की अगुवाई की, और न ही हमारे साथ ऐसा करता है। हाँ, वह जैसा चाहे वैसा कर सकता है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। संभवतः प्रभु परमेश्वर उस व्यक्ति को भी किसी दर्शन के द्वारा आपके पास नहीं लाया जिससे सुसमाचार सुन कर आप प्रभु के विश्वासी हुए। प्रायः पवित्र वचन पढ़ने के द्वारा प्रभु अपने विश्वासियों की अगुवाई करता है। तब उसके लोग इस अगुवाई को प्रार्थना में प्रभु के समक्ष लाते हैं और अपनी अगुवाई के प्रति प्रभु परमेश्वर अपने विश्वासियों में बोझ (इच्छा) पैदा करता है, भले की उस कार्य के सम्पन्न किए जाने के तौर-तरीके के बारे में प्रभु का जन अनभिज्ञ हो।

मैसीडोनिया के बारे में दर्शन प्राप्त करने के बाद पौलुस वहाँ के लिए तुरन्त चल पड़ा। *"जब उसने यह दर्शन देखा तो यह समझते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों में सुसमाचार सुनाने के लिए हमें बुलाया है, हमने शीघ्र ही मैसीडोनिया जाने का विचार किया। अतः त्रिआस छोड़कर हम जलमार्ग द्वारा सीधे समोथ्राके तक गए और दूसरे दिन नियापुलिस को, फिर वहाँ से फिलिप्पी पहुँचे जो मैसीडोनिया प्रान्त का एक मुख्य नगर तथा रोमी उपनिवेश है और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे"।* इस विवरण से आगे की बातों को पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे कि **प्रेरितों के काम** का लेखक **लूका** भी पौलुस के साथ था। त्रोआस पहुँचने के बाद, वे लोग वहाँ से मैसीडोनिया प्रान्त के एक प्रमुख नगर फिलिप्पी की यात्रा पर चल दिए।

"सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझ कर गए कि वहाँ प्रार्थना करने का कोई स्थान होगा और हम बैठकर उन स्त्रियों से बातचीत करने लगे जो वहाँ एकत्रित थीं। और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की एक स्त्री सुन रही थी। वह बैंजनी वस्त्र बेचने वाली और परमेश्वर की भक्त थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर ध्यान लगाए। जब उसने और उसके परिवार ने बपतिस्मा लिया तो हमसे यह कहते हुए आग्रह किया, 'यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी मानते हो तो आकर मेरे घर में ठहरो'। और उसने हमें विवश कर दिया"।

शायद फिलिप्पी में कोई यहूदी सभागृह नहीं था। बहरहाल जब पौलुस को यह ज्ञात हुआ कि नदी के पास यहूदी महिलाओं का एक समूह प्रार्थना करने एकत्रित होता है, तब वह उनसे भेंट करने गया। वहाँ "लुदिया" नामक एक "बैंजनी वस्त्र बेचने वाली" महिला से भेंट हुई। पौलुस से बातचीत करते समय प्रभु ने उस स्त्री के मन में काम किया और उसने मसीह यीशु के बारे में पौलुस द्वारा बताए गए संदेश पर विश्वास किया और उद्धार पायी। सुसमाचार-संदेश के प्रति उस महिला ने सही एवं सच्चा प्रत्युत्तर व्यक्त किया। वह परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाने और पौलुस की सेवा में सहयोग एवं आशीष का पात्र होने के लिए तत्पर थी। उसकी सेवा में सहायता प्रदान करने हेतु उस महिला में अतिथि-सत्कार के लिए अपना घर खोल दिया। इससे हम यह सीखते हैं कि विश्वासीजन चाहे जो कार्य-व्यवसाय करता हो और चाहे जहाँ रहता हो, वह अपने जीवन-व्यवहार द्वारा अपने इर्द-गिर्द के लोगों को प्रभावित कर सकता है। यद्यपि वह एक नई विश्वासी थी, तथापि अन्य लोगों के लिए आशीष का कारण होने के लिए तत्पर थी। अपने जीवन-आचरण

के द्वारा परमेश्वर के प्रेम को दूसरों तक पहुँचाने के द्वारा वह महिला पौलुस के लिए तथा फिलिप्पी की मंडली के लिए बड़ी सहायक साबित हुई (प्रेरित0 16:4-5; 16:6-8; 16:9; 16:10-12; 16:13-15)।

पौलुस द्वारा दुष्टात्मा निकालना

"तब ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना करने के स्थान को जा रहे थे तो हमें एक दासी मिली जिसमें भविष्य बताने वाली आत्मा थी। वह शकुन विचारने के द्वारा अपने स्वामियों के लिए बहुत रुपये कमा लाती थी। वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर बार-बार चिल्लाने लगी, 'ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो तुम्हें उद्धार के मार्ग का संदेश सुनाते हैं।' वह कई दिनों तक ऐसा ही करती रही। परन्तु पौलुस अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसने मुड़कर उस आत्मा से कहा, 'मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ कि उसमें से निकल जा!' और वह उसी क्षण उसमें से निकल गई"। फिलिप्पी पहुँचने पर शुरू में सब कुछ ठीक रहा, लेकिन बाद में परेशानी शुरू हुई। वहाँ की एक दुष्टात्माग्रस्त महिला पौलुस की सेवा में रुकावट पैदा करने लगी। तब प्रभु यीशु के नाम से पौलुस ने उस महिला में से दुष्टात्मा को निकल जाने का आदेश दिया और "वह उसी क्षण उसमें से निकल गई"। इससे यह प्रकट हुआ कि दुष्टात्माएँ भी प्रभु यीशु के अधिकार के नीचे (पाँव तले) हैं (प्रेरित0 16:16-18)।

"जब उसके स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा समाप्त हो गई तो वे पौलुस और सीलास को पकड़कर और घसीटकर चौक में अधिकारियों के सम्मुख ले गए और उन्हें मुख्य न्यायाधीशों के सामने लाकर उन्होंने कहा, 'ये यहूदी हमारे नगर में

बड़ी गड़बड़ी मचा रहे हैं, और ऐसी रीतियों का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें मानना या ग्रहण करना हम रोमियों के लिए उचित नहीं।' भीड़ इकट्ठी होकर उन पर चढ़ आई, ओर न्यायाधीषों ने कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें आज्ञा दी कि उन्हें बेंत लगाए जाएँ। और बेंत से बहुत पिटवा कर उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया, और जेल के दरोगा को आज्ञा दी कि उनकी कड़ी चौकसी करे। उसने यह आज्ञा पाकर उन्हें बन्दीगृह के भीतरी भाग में डाल दिया, और उनके पैर काठ में जकड़ दिए"। इस अद्‌भुत घटना को देखकर, उस महिला की गतिविधियों से आमदनी करने वाले बहुत क्रोधित हुए। उन्हें उस महिला की चिन्ता नहीं थी, वे तो उससे होने वाली अपनी अच्छी-खासी कमाई अर्थात् अपने स्वार्थ-सिद्धि के चक्कर में थे। अतः उन मनुष्यों ने पौलुस और सीलास पर आरोप मढ़ दिए, वहाँ के अधिकारियों ने प्रभु के इन दोनों सेवकों को बेंतों से बहुत मारा-पीटा और उनके पैरों को काठ में जकड़ कर जेल के ऐसे स्थान में डाल दिया जहाँ से उनका भागना असम्भव हो। यह सब देखकर ऐसा लगा जैसे कि प्रभु परमेश्वर की तुलना में शैतान ही ज्यादा ताकतवर है, परन्तु इन सब घटनाओं को होने देने के पीछे परम प्रधान परमेश्वर का एक खास उद्‌देश्य था। अगर शैतान को ईश्वरीय उद्‌देश्य का ज्ञान होता तो वह पौलुस और सीलास को उस जेल में जकड़ने के बजाय फिलिप्पी से दूर भगाने की युक्ति में होता।

जेलर का मन-परिवर्तन

पौलुस और सीलास की पीठों पर बेंतों की इतनी मार पड़ी थी कि चमड़ी कट-कट कर खून निकलने लगा था। ऐसी दुःख-दर्द भरी अवस्था में उन्होंने क्या किया होगा? वे तो यह सब सहते-सहते

हताश, निराश एवं बेहाल हो सकते थे। वे तो प्रभु परमेश्वर से शिकायत कर सकते थे, या अपने सताने वालों के प्रति घृणा व्यक्त कर सकते थे। परन्तु *"अर्ध-रात्रि के लगभग पौलुस तथा सीलास प्रार्थना कर रहे थे तथा परमेश्वर की स्तुति के गीत गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे"।* वे हताश-निराश नहीं थे, बल्कि वे तो प्रभु के नाम से दुःख सहने के शुभ अवसर के लिए परमेश्वर की स्तुति-प्रशंसा कर रहे थे। परमेश्वर पर उनका यह विश्वास था कि उसने किसी खास मकसद से ही उन्हें दुःख-मुसीबत में डाला है। हमारे जीवन में ऐसा कुछ नहीं आता जिसके पीछे कोई खास प्रयोजन नहीं। बेशक, कई बार हम उसके उद्देश्य-योजना को तत्काल नहीं समझते। ऐसे वक्त हमें उसकी कृपा, प्रेम, भलाई सम्बन्धी वायदों पर भरोसा रखना है, और यह नहीं भूलना है कि विश्वासयोग्य परमेश्वर का यह वायदा है कि वह अपने विश्वासीजन को कभी नहीं छोड़ेगा। पौलुस और सीलास को भी उसने त्यागा नहीं था। शीघ्र ही उन्हें यह ज्ञान हुआ कि प्रभु परमेश्वर ने उन्हें इतनी मुसीबत में क्यों डाला था (प्रेरित0 16:19-24; 16:25; इब्रा0 13:5)।

"तभी अचानक एक बड़ा भूकम्प आया जिससे कि बन्दीगृह की नींव हिल गई और तुरन्त सब द्वार खुल गए और सब की बेड़ियाँ खुल गईं। दरोगा जब नींद से जागा और उसने जेल के द्वारों के खुला देखा तो अपनी तलवार खींच ली और यह सोचकर कि क़ैदी भाग गए हैं, अपने आप को मारने पर ही था"। उस जेल के इंचार्ज की यह जिम्मेदारी थी कि एक भी क़ैदी भागने न पाए। अतः ऐसी परिस्थिति में वह भयभीत होकर अपने आप को मार डालने वाला था। पौलुस यह समझ गया और फौरन उसे अपने पास बुलाया – "तभी पौलुस ने जोर से पुकार कर कहा, 'अपने आप को

कोई हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहीं हैं'।" ध्यान दें कि वह व्यक्ति पौलुस और सीलास को बड़ी कड़ाई के साथ जेल में रखे था, किन्तु उनके मन में इस दरोगा के प्रति प्रेम था और वे उसे भी मसीह के प्रेम का ज्ञान देना चाहते थे। क्रूस पर चढ़ाए जाने पर प्रभु ने अपने सताने वालों के लिए अपने पिता से क्या कहा था? (प्रेरित0 16:26-27; 16:28; लूका 23:24)।

"और वह बत्ती मँगा कर तेजी से भीतर गया और पौलुस तथा सीलास के सामने भय से काँपते हुए गिर पड़ा। और उन्हें बाहर लाकर उसने कहा, 'सज्जनों, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ'?" पौलुस और सीलास की बातचीत के बाद उस दरोगा के मन में पवित्र आत्मा ने कार्य किया और उसके पापीपन के प्रति उसे कायल किया। तब उसने आतुर मन से उद्धार-मार्ग के बारे में उनसे और अधिक जानकारी चाही। *"उन्होंने कहा, 'प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा'। तब उन्होंने उसको तथा उसके घर के सब लोगों को प्रभु का वचन सुनाया"।* ध्यान दें! पौलुस ने सिर्फ शार्टकट जवाब नहीं दिया, बल्कि उस दरोगा को तथा उसके घर में रहने वालों को सावधानीपूर्वक सुसमाचार-संदेश समझाया (प्रेरित0 16:29-30; 16:31-32)।

"और उसी घड़ी रात को उन्हें ले जाकर उसने उनके घाव धोए, और तुरन्त उसने और उसके घराने ने बपतिस्मा लिया। और उन्हें वापस घर लाकर उसने उनके लिए भोजन परोसा, और सारे कुटुम्ब सहित परमेश्वर पर विश्वास करके बड़ा आनन्द मनाया"। क्या आपको याद है कि प्रभु यीशु पर विश्वास करने के पश्चात् लुदिया कैसे पौलुस और सीलास की सेवकाई के प्रति सेवा-सत्कार के द्वारा प्रभु-प्रेम प्रकट करना चाहती थी। यहाँ जेल के दरोगा के जीवन में

भी प्रभु यीशु पर सच्चे विश्वास का प्रमाण दिखायी दिया। उसने पौलुस और सीलास के घाव धोए, प्रभु के आदेशानुसार बपतिस्मा लिया और अन्ततः उन्हें अपने घर ले जाकर भोजन कराया (प्रेरित0 16:33-34)।

"जब दिन हुआ तब मुख्य न्यायाधीशों ने यह कह कर सिपाहियों को भेजा, 'उन मनुष्यों को छोड़ दो'। तब जेल के दरोगा ने आकर ये बातें पौलुस से कहीं, 'मुख्य न्यायाधीशों ने तुम्हें छोड़ देने के लिए कहला भेजा है। अतः अब निकल कर कुशलतापूर्वक चले जाओ'। परन्तु पौलुस ने उनसे कहा, 'उन्होंने हमें जो रोमी हैं बिना अपराधी ठहराए सबके सामने पीटा और जेल में डाला। और क्या वे अब हमें चुपके से बाहर निकाल रहे हैं? यह नहीं हो सकता! वे स्वयं आकर हमें बाहर निकालें'। सिपाहियों ने जाकर ये बातें मुख्य न्यायाधीशों को बताईं। जब उन्होंने सुना कि वे रोमी हैं, तब वे डर गए, और आकर उन्होंने उनको मनाया और उन्हें बाहर ले जाकर उनसे बार-बार निवेदन किया कि वे नगर से निकल जाएँ। वे जेल से निकल कर लुदिया के घर गए और वहाँ भाइयों से मिल कर उन्हें प्रोत्साहित किया तथा उनसे विदा हुए" (प्रेरित0 16:35-40)।

11

"फिर जब वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया से होकर निकले तो थिस्सलुनिके पहुँचे, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था"। पौलुस और सीलास जेल से छुटकारा मिलने के बाद तीमुथियुस और लूका के साथ फिलिप्पी से दूसरे शहरों में सुसमाचार सुनाने के लिए प्रस्थान किए। थिस्सलुनिके नगर में पहुँचने के बाद पौलुस वहाँ यहूदियों के सभागृह में शिक्षा देने गया। *"पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया और तीन सब्त तक पवित्रशास्त्र से उनके साथ वाद-विवाद करता रहा, और इस बात का अर्थ स्पष्ट करके यह प्रमाणित करता रहा कि मसीह को दुख उठाना और मृतकों में से जी उठना अवश्य था, और वह कहता था, 'यही यीशु जिसका मैं तुम्हारे सामने प्रचार करता हूँ, मसीह है'। उनमें से कुछ लोगों ने विश्वास किया और यूनानियों के एक बड़े समूह व बहुत सी प्रमुख स्त्रियों सहित वे पौलुस व सीलास के साथ मिल गए"।* यद्यपि वहाँ के कुछ लोगो ने सुसमाचार पर विश्वास किया, किन्तु अधिकतर लोगों ने परमेश्वर के प्रेमपूर्ण संदेश को अस्वीकार किया और पौलुस तथा सीलास को जेल में डालने की युक्ति करने लगे। यदि विश्वासियों ने पौलुस तथा उसके साथियों को वहाँ से रातों-रात हटाया नहीं होता तो संभवतः लोग उन्हें मार डालते (प्रेरित0 17:1; 17:2-4)।

"भाइयों ने तुरन्त रात में ही पौलुस तथा सीलास को बिरीया भेज दिया जहाँ पहुँचने पर वे यहूदियों के आराधनालय में गए। ये लोग थिस्सलुनीके वालों से अधिक सज्जन थे क्योंकि उन्होंने बड़ी उत्सुकता से वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में से

खोज-बीन करते रहे कि देखें ये बातें ऐसी ही हैं या नहीं। अतः उनमें से बहुतों ने, तथा उनके साथ अनेक प्रतिष्ठित यूनानी महिलाओं और पुरुषों ने भी विश्वास किया"। थिस्सलुनीके की अपेक्षा बिरीया के लोग पौलुस की शिक्षा को ज्यादा ध्यान से सुनने के लिए तत्पर थे। उन्होंने पौलुस का संदेश सुनने के बाद पवित्रशास्त्र पढ़कर उसकी सत्यता को जाँचा-परखा। वे सच्चाई को जानने के इच्छुक थे। इसलिए वे पवित्रशास्त्र का अध्ययन करके यह समझना चाह रहे थे कि क्या नासरत का यीशु वास्तव में संसार के लिए परमेश्वर की ओर से भेजे जाने वाला प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता है। सत्य के प्रति उनकी इस भूख-प्यास से शैतान खुश नहीं था, और उसने "कुछ दुष्टों" को उनका विरोध करने के लिए भड़काया। *"परन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को मालूम हुआ कि बिरीया में भी पौलुस ने परमेश्वर का वचन सुनाया है, तो वे वहाँ भी आकर भीड़ को भड़काने और हुल्लड़ मचाने लगे। तब भाइयों ने पौलुस को तुरन्त समुद्र तट पर जाने के लिए विदा किया, परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। पौलुस को पहुँचाने वाले एथेंस तक उसे ले गए, और उससे यह आदेश पाकर कि सीलास तथा तीमुथियुस जल्द से जल्द मेरे पास आ जाएँ, वे वहाँ से विदा हुए"* (प्रेरित0 17:10-15)।

एथेंस नगर में पौलुस का उपदेश

पौलुस को एथेंस नगर में सीलास और तीमुथियुस की प्रतीक्षा करनी पड़ी। ऐसे समय में उसने शहर का पैदल भ्रमण किया। वहाँ चलते-फिरते समय जब उसे बहुत से ऐसे पूजा-स्थल दिखाई दिए जहाँ लोग मूर्तियों की पूजा-आराधना कर रहे थे तो उसका मन अत्यन्त बेचैन हो उठा। एथेंस के निवासी इसी प्रकार के देवताओं के उपासक थे। एथेंस के लोगों की इस प्रवृत्ति से पौलुस

हैरान था, क्योंकि वे ऐसी मूर्तियों की उपासना कर रहे थे जिनके कान, मुँह और आँख तो थे, मगर वे सुन, बोल व देख नहीं सकती थीं। पौलुस उन्हें सच्चे परमेश्वर का संदेश देने के लिए बेचैन था; और शीघ्र ही ऐसा अवसर आया जबकि उसने सच्चे परमेश्वर तथा उसके द्वारा पाप-क्षमा के लिए किए गए ईश्वरीय उपाय के बारे में उस शहर के लोगों को सुसमाचार दिया (भजन0 115:4-8)।

"जब पौलुस एथेंस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देखकर वह अपनी आत्मा में जल उठा। अतः वह प्रतिदिन आराधनालयों में यहूदियों से तथा ग़ैर यहूदी भक्तों से और बाजार में उनसे जो वहाँ मिलते थे वाद-विवाद किया करता था। और कुछ इपीकूरी और स्तोईकी दार्शनिकों ने भी उससे तर्क-वितर्क किया। कुछ कह रहे थे, 'यह बकवादी क्या कहना चाहता है?' दूसरों ने कहा, 'यह तो विचित्र देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है' – क्योंकि वह यीशु और पुनरुत्थान का प्रचार कर रहा था। वे उसे अपने साथ अरियुपगुस की सभा में ले गए और पूछने लगे, 'क्या हम जान सकते हैं कि यह नई शिक्षा जिसका तू प्रचार करता है, क्या है? क्योंकि तू हमें कुछ अनोखी बातें सुनाता है; इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इन बातों का क्या अर्थ है'? क्योंकि सब एथेंसवासी और परदेशी जो वहाँ आया करते थे, नई-नई बातें कहने और सुनने के अतिरिक्त और किसी बात में अपना समय नहीं बिताते थे।

तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा, 'हे एथेंस के लोगों, ऐसा लगता है तुम, सब बातों में बड़े धार्मिक हो। क्योंकि जब मैं घूमते-फिरते तुम्हारे पूजने की वस्तुओं का अवलोकन कर रहा था, तो मैंने एक वेदी पाई जिस पर यह लिखा था,

'अनजाने परमेश्वर के लिए'। इसलिए जिसे तुम अनजाने में पूजते हो, उसी का संदेश मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

परमेश्वर जिसने जगत और उसमें की सब वस्तुओं को बनाया है, वही स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है। वह हाथ के बनाए हुए मंदिरों में निवास नहीं करता। और न ही मनुष्यों के हाथों से उसकी सेवा-टहल होती है, मानो कि उसे किसी बात की आवश्यकता हो, क्योंकि वह स्वयं सब को जीवन, श्वास और सब कुछ प्रदान करता है। उसने एक ही मूल से मनुष्य की प्रत्येक जाति को बनाया कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर बस जाए, और इसीलिए उसने उनका एक निश्चित समय और उनके निवास की सीमाएँ निर्धारित कर दीं, कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, हो सकता है कि वे उसे टटोल कर पाएँ, यद्यपि वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि उसी में हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं, जैसा कि तुम्हारे अपने कुछ कवियों ने भी कहा है, 'हम भी तो उसी की संतान हैं'।

इसी प्रकार परमेश्वर की संतान होकर हमें यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि परमेश्वर सोने, चाँदी अथवा पत्थर की किसी कारीगरी के समान है, जो मनुष्य की कला और कल्पना से गढ़ा गया हो। इसलिए अज्ञानता के समयों की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चाताप करें। क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृतकों में से उसे जिला कर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है'।" पौलुस के इस सुसमाचारीय वचन का उस शहर के लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा? क्या इन गैर यहूदियों ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया? *"जब उन्होंने*

मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनी तो कुछ लोग ठट्ठा करने लगे, परन्तु दूसरों ने कहा 'हम इस विषय में तुझसे फिर कभी सुनेंगे'। इस पर पौलुस उनके मध्य से चला गया। परन्तु कुछ लोग उसके साथ हो लिए और उन्होंने विश्वास किया जिनमें दियुनुसियुस, अरियुपगुस का सदस्य और दमरिस नाम की एक महिला तथा उसके साथ अन्य लोग भी थे" (प्रेरित0 17:16-31; 17:32-34)।

पौलुस का कुरिन्थुस पहुँचना

"इन बातों के पश्चात् पौलुस एथेंस छोड़कर कुरिन्थुस चला गया"। तब पौलुस एथेंस के बाद कुरिन्थुस नामक नगर में चला गया जहाँ वह इससे पहले भी सुसमाचार-प्रचार कर चुका था। *"रात को प्रभु ने दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, 'डर मत। प्रचार करता जा और चुप न रह। क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ और कोई व्यक्ति हानि पहुँचाने के लिए तुझ पर आक्रमण न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं'।"* प्रत्येक घटना के घटित होने से पूर्व प्रभु परमेश्वर सब कुछ जानता है। वह यह भली-भाँति जानता है कि उसके वचन पर कौन विश्वास करेगा और कौन नहीं। किन्तु हम यह नहीं जानते कि कौन परमेश्वर के संदेश को स्वीकार करेगा और कौन अस्वीकार। इसलिए हमें सब लोगों को सुसमाचार सुनाना है, ताकि जिनके मन को प्रभु परमेश्वर ने तैयार किया है वे पवित्र आत्मा की अगुवाई में सत्य को ग्रहण कर सकें। जब पौलुस को यह ज्ञान हुआ कि प्रभु की इच्छानुसार कुरिन्थुस में प्रभु के वचन की और शिक्षा देनी है, तो वह वहाँ रहकर सत्य वचन सुनने के आकाँक्षी लोगों को शिक्षा देता रहा। *"वह उनके मध्य परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा"।* इस प्रकार यह पौलुस की द्वितीय

सुसमाचार प्रचार यात्रा थी। कुरिन्थुस में पौलुस लगभग अट्ठारह महीने तक शिक्षा-सेवा देता रहा। तत्पश्चात् वह इफिसुस की ओर प्रस्थान किया।

"फिर वे इफिसुस पहुँचे जहाँ उसने उन्हें छोड़ दिया और वह आप आराधनालय में जाकर यहूदियों से तर्क-वितर्क करने लगा। जब लोगों ने उससे कुछ दिनों के लिए और रहने को कहा तो उसने स्वीकार नहीं किया। परन्तु विदा लेते समय उसने कहा, 'यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो तुम्हारे पास फिर आऊँगा'। तब वह इफिसुस से जहाज द्वारा रवाना हुआ"। पौलुस इफिसुस से कैसरिया (यरूशलेम का बन्दरगाह) एवं यरूशलेम गया, और वहाँ से **अन्ताकिया** चला गया। *"जब वह कैसरिया में उतरा, तो उसने ऊपर चढ़ कर कलीसिया से भेंट की, और फिर नीचे उतर कर अन्ताकिया को चला गया"* (प्रेरित0 18:1; 18:9-10; 18:11; 18:19-21; 18:22)।

12

पौलुस यह जानता था कि परमेश्वर की यह मनसा है कि सब लोगों को सुसमाचार सुनने का अवसर मिले। इसीलिए उसे भेजने वाली **अन्ताकिया** की मंडली में पहुँचने के बाद वह स्थायी तौर पर वहीं नहीं बस गया। उसकी प्रबल इच्छा थी कि सुसमाचार से अपरिचित लोगों के पास परमेश्वर का संदेश पहुँचाए। प्रत्येक विश्वासी की यह आकाँक्षा होनी चाहिए। अतः पौलुस ने अन्ताकिया से पुनः प्रस्थान किया, और इस बार वह अपनी तीसरी मिशनरी (सुसमाचार-प्रचार) यात्रा पर निकला। *"तथा वहाँ कुछ समय और व्यतीत करके उसने विदा ली, और गलातिया तथा फ्रूगिया प्रदेशों का भ्रमण करते हुए वह सब चेलों को स्थिर करता रहा"।* अपनी इस यात्रा के शुरू में वह उन नई मंडलियों में गया जहाँ वह पहले परमेश्वर का वचन सुना चुका था। प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर के वचन की शिक्षा का बारम्बार स्मरण कराना आवश्यक है। इस प्रकार सत्य-शिक्षा के बारम्बार याद कराए जाने से विश्वासीजन परमेश्वर पर आशा-भरोसा रखने में विकसित होते हैं (प्रेरित0 18:23)।

इफिसुस में पौलुस

"वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निर्भीकता से बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में तर्क-वितर्क करता और उन्हें समझाता रहा। परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी और भीड़ के सामने इस पंथ को भला-बुरा कहने लगे, तो वह चेलों को लेकर उनसे अलग हो गया और तरन्नुस की पाठशाला में प्रतिदिन तर्क-वितर्क करता रहा। दो वर्ष तक ऐसा

होता रहा, जिससे कि वे जो एशिया में रहते थे – यहूदी तथा यूनानी – सबने प्रभु का वचन सुन लिया"। गलातिया और फ्रूगिया प्रदेशों में परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने के पश्चात् पौलुस इफिसुस पहुँचा। वहाँ पौलुस के द्वारा प्रभु परमेश्वर ने पुनः अपनी सामर्थ्य को प्रकट किया। इफिसुस पहुँचने के बाद पौलुस वहाँ के यहूदी सभागृह में शिक्षा देने गया (प्रेरित0 19:8-10)।

कुछ स्थानों पर पौलुस थोड़े समय तक सुसमाचार-शिक्षा की सेवा दिया, और कुछ स्थानों में ज्यादा समय तक। यह इस तथ्य पर निर्भर किया कि वचन सुनने वालों की कैसी प्रतिक्रिया रही। दूसरी जगहों पर सुसमाचार शिक्षा देने जाते समय हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। यदि परमेश्वर का वचन सुनने पर किसी खास स्थान के लोग उसे अस्वीकार करते हैं, तो हमें वहाँ से आगे बढ़कर उन स्थानों पर ध्यान देना चाहिए जहाँ लोग प्रभु के वचन को ग्रहण करते हैं, या फिर ऐसे लोगों के मध्य जाना चाहिए जिन्होंने सुसमाचार कभी नहीं सुना है।

"और पौलुस के हाथों से परमेश्वर अद्‌भुत सामर्थ्य के काम दिखाता था, यहाँ तक कि उसकी देह से स्पर्श किए हुए रूमाल और अंगोछे रोगियों पर डाल दिए जाते थे, और उनकी बीमारियाँ दूर हो जाती थीं, और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाया करती थीं"। कलीसिया निर्माण शुरू करने के लिए तथा अपने वचन की पूर्ण प्रकाशना को लिखित रूप देने के लिए प्रभु परमेश्वर ने अपने प्रेरितों को इस्तेमाल किया। प्रभु परमेश्वर उनके द्वारा जो शिक्षा देना चाहता था, उसने उस सत्य को उन्हें बताया (उन पर प्रकट किया) और उसे लिपिबद्ध करने की अगुवाई प्रदान किया ताकि वह भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित (उपलब्ध) हो। इसके अतिरिक्त, प्रभु परमेश्वर ने

अपने **प्रेरितों** को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ्य प्रदान किया, ताकि यह प्रमाणित हो कि उनका संदेश परमेश्वर की ओर से है। बहरहाल, वर्तमान में प्रभु के वे प्रेरित नहीं हैं, और पवित्रशास्त्र बाइबॅल में परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रकाशना लिपिबद्ध है। अब इस ईश्वरीय संदेश की सच्चाई को सत्यापित (प्रमाणित) करने हेतु आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता नहीं है। बेशक, परमेश्वर वही परमेश्वर है; और आज भी वह आश्चर्यकर्म करने में समर्थ है। इन्हीं दिनों जब पौलुस इफिसुस में था तो उसने कुरिन्थुस की मंडली को एक पत्र लिखा। उसकी यह पत्री "नया नियम" की पुस्तकों में शामिल है (प्रेरित0 9:11-12)।

"परन्तु झाड़ा-फूँकी करने वाले कुछ यहूदी जो इधर-उधर घूमते-फिरते थे अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त लोगों पर प्रभु यीशु के नाम का उपयोग करने का प्रयत्न यह कह कर करने लगे, 'मैं तुमको उस यीशु की शपथ दिलाता हूँ जिसका प्रचार पौलुस करता है'। और स्किवा नामक एक यहूदी मुख्य याजक के सात पुत्र ऐसा ही कर रहे थे। परन्तु दुष्टात्मा ने उनको उत्तर दिया, 'यीशु को मैं जानती हूँ और पौलुस को भी पहचानती हूँ, पर तुम कौन हो?' और वह मनुष्य जिसमें दुष्टात्मा थी उन पर झपटा और उनको वश में करके उन पर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। यह बात इफिसुस के रहने वाले क्या यहूदी क्या यूनानी व सब लोगों को मालूम हो गई। उन सब पर भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई होने लगी"। इस घटना के द्वारा प्रभु परमेश्वर ने यह प्रमाणित किया कि पौलुस वास्तव में यीशु मसीह का दास है, और उसे शैतान एवं दुष्टात्माओं के ऊपर अधिकार प्राप्त है। इसके अतिरिक्त यहाँ यह भी दर्शाया गया है कि प्रभु यीशु का

नाम असावधानी, लापरवाही, हल्के तौर पर या व्यर्थ में नहीं लेना है। प्रभु यीशु का नाम सब नामों से ऊपर है, और यीशु का नाम लेना बहुत गम्भीर बात है। केवल परमेश्वर की सच्ची संतानों को ही प्रभु यीशु का नाम एवं उसके अधिकार का उपयोग करना है। उपर्युक्त पदों में वर्णित घटना में कुछ लोगों ने प्रभु यीशु के नाम को जादूगरी या मंत्र-तंत्र की तरह इस्तेमाल करने का दुस्साहस किया, लेकिन प्रभु परमेश्वर ने शीघ्र ही उन्हें यह सबक सिखाया कि वह सर्वोच्च (प्रभु परमेश्वर) शासक है और उसका सबसे बढ़ कर भय मानना है (प्रेरित0 19:13-17; फिलि0 2:10-11; भजन0 47:9)।

"जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से बहुतों ने आकर अपने कामों को मान लिया और उन्हें प्रकट कर दिया। बहुत से लोगों ने जो जादू-टोना किया करते थे अपनी पोथियाँ लाकर इकट्ठी कीं और सबके सामने जला दीं। जब उन्होंने उनका मूल्य आँका तो लगभग पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला। इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्य के साथ फैलता और प्रबल होता गया"। यहाँ फिर प्रभु यीशु पर विश्वास करने वालों के जीवन में पवित्र आत्मा का सामर्थ्यपूर्ण काम दिखाई देता है। जैसे लुदिया के जीवन में और फिलिप्पी के दरोगा के जीवन में प्रभु पर विश्वास के बाद परिवर्तन दिखायी दिया, उसी प्रकार इफिसुस के इन विश्वासियों में भी। इफिसुस के बहुत से लोग शारीरिक चँगाई के लिए तथा दूसरों को शाप देने हेतु जादूगरी का इस्तेमाल करते थे। परन्तु प्रभु यीशु पर विश्वास करने वालों ने यह सब त्याग कर अपनी पोथियाँ जला दीं। सच्चे प्रभु परमेश्वर के भक्तों के लिए सत्य परमेश्वर के अलावा अन्य किसी पर आशा-भरोसा रखना पाप है। परमेश्वर की संतान होने के कारण हम उसकी देखरेख के अधीन हैं, और हमें उन

वस्तुओं व शक्तियों के भरोसे नहीं जीना है जिन पर शैतान के लोग भरोसा करते हैं (प्रेरित0 19:18-20)।

"इन दिनों में इस पंथ के विषय में बड़ा उपद्रव हुआ। क्योंकि देमेंत्रियुस नाम का एक सुनार था जो अरतिमिस के चाँदी के मंदिर बनवाकर कारीगरों को बहुत व्यवसाय दिलाता था"। अब पौलुस लगभग अढ़ाई वर्ष तक इफिसुस में सेवा कर चुका था। वहाँ बहुत से आश्चर्यकर्म हुए थे। बहुत से लोग प्रभु के विश्वासी हो गए थे। यह सब देखकर शैतान प्रसन्न नहीं था। अतः उसने पौलुस और इफिसुस की मंडली के लिए परेशानी पैदा करना शुरू किया। *"उसने उन्हें और इसी प्रकार का धन्धा करने वाले कारीगरों को एकत्रित करके कहा, 'हे भाइयों, तुम जानते हो कि हमारी सम्पन्नता इसी धन्धे पर निर्भर है। और तुम देखते और सुनते हो कि न केवल इफिसुस में बल्कि लगभग सम्पूर्ण एशिया में इस पौलुस ने बहुत से लोगों को समझा-बुझाकर और यह कहकर बहका लिया है, कि वे जो हाथ के बनाए हुए हैं, ईश्वर है ही नहीं! इससे न केवल यह डर है कि हमारे धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन् यह भी कि महान देवी अरतिमिस का मंदिर तुच्छ समझा जाएगा, तथा जिस देवी की पूजा एशिया और संसार के सब लोग करते हैं वह अपने ऐश्वर्य से गिरा दी जाएगी'। जब उन्होंने यह सुना तो क्रोध से भर गए और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे, 'इफिसियों की देवी अरतिमिस महान् है'। नगर में हुल्लड़ मच गया, और लोगों ने गयुस तथा अरिस्तर्खुस नामक पौलुस के संगी यात्रियों को जो मैसीडोनिया से आए थे घसीटा और वे एक साथ दौड़ कर रंगशाला में गए। जब पौलुस ने भीड़ में जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने नहीं दिया"* (प्रेरित0 19:23-24; 19:25-30)।

इफिसुस के लोग (संत्तानोत्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी डायना अर्थात्) **अरतिमिस** देवी का एक विशाल मंदिर बनाए थे। देमेत्रियुस नामक व्यक्ति उन बहुत से सुनारों में से एक था जो इस देवी की मूर्तियाँ बना कर बेचने का धंधा करता था। पौलुस के सुसमाचार-प्रचार से प्रभावित होकर कई लोग उस देवी की पूजा करना छोड़ रहे थे, और इससे देमेत्रियुस एवं उसके साथी अपने धंधे के प्रति चिंतित होने लगे कि उनके मूर्तियों की बिक्री कम हो जाएगी। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं थी कि प्रभु परमेश्वर की ओर फिरने से लोगों के जीवन में क्या पवित्र बदलाव आ रहा है; उनकी रुचि तो सिर्फ अपनी कमाई में थी।

पौलुस का मैसीडोनिया एवं यूनान की ओर प्रस्थान

"हुल्लड़ थम जाने पर पौलुस ने चेलों को बुलवा भेजा। उन्हें समझाने के पश्चात् उनसे विदा होकर वह मैसीडोनिया की ओर चल दिया"। पौलुस ने मैसीडोनिया के विश्वासियों के पास जाकर उन्हें प्रभु के विश्वास में बने रहने के लिए पुनः प्रोत्साहित किया। वहाँ रहते हुए उसने "कुरिन्थुस" की मंडली के नाम अपनी "दूसरी पत्री" लिखी। वहाँ अपनी सेवा पूरी करने के बाद वह कुरिन्थुस गया। कुरिन्थुस में तीन महीने तक वह विश्वासियों को शिक्षा एवं प्रोत्साहन प्रदान करता रहा। कुरिन्थुस में रहते हुए पौलुस ने रोम की मंडली के नाम एक पत्र लिखा। यह पत्र रोम के विश्वासियों को प्रभु पर विश्वास में प्रोत्साहित करने के लिए लिखा। इसके अतिरिक्त उस पत्र में उन्हें यह भी बताया कि यरूशलेम से वापिस होने के बाद उसकी रोम आने की योजना है। कुरिन्थुस से ही उसने गलातिया की कलीसिया को भी पत्र लिखा। उसने यह सुना था कि कुछ झूठे शिक्षक गलातिया की मंडली के लोगों को यह सिखा रहे थे कि

केवल मसीह पर विश्वास से ही उद्धार नहीं मिलता, इसके साथ खतना कराना और व्यवस्था-पालन जरूरी है। इसलिए पौलुस ने उस मंडली को पत्र लिखकर इस गलत शिक्षा को उजागर किया। पौलुस के ये सभी पत्र "नया नियम" में शामिल हैं, ताकि हम इनसे शिक्षा ले सकें। इसके बाद पौलुस सीरिया की ओर जाने की सोच रहा था, लेकिन जब उसे यह पता चला कि वहाँ कुछ यहूदी उसे मार डालने का षडयंत्र रच रहे हैं, तब वह उधर की बजाय पुनः मैसीडोनिया के रास्ते वापस आ गया (प्रेरित0 20:1)।

"अख़मीरी रोटी के पर्व के पश्चात् हम फिलिप्पी से जहाज द्वारा निकले और पाँच दिन में उनके पास त्रोआस पहुँचे और वहाँ सात दिन तक रहे"। प्रारम्भिक मंडली के लोग प्रतिदिन आराधना, प्रार्थना एवं वचन की शिक्षा हेतु एकत्रित होते थे। कुछ स्थानों पर लोग प्रतिदिन इकट्ठा नहीं हो सकते थे, किन्तु इतवार को अवश्य एकत्रित होते थे। प्रारम्भिक कलीसिया के ये विश्वासी इतवार को इसलिए आराधना-सभा करते थे क्योंकि सप्ताह के प्रथम दिन अर्थात् इतवार को ही मसीह मृतकों में से जीवित हो उठा था (प्रेरित0 20:6-7; मर0 16:9)।

"सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए एकत्रित हुए, तो पौलुस उनसे बातें करने लगा। वह दूसरे दिन जाने पर था इसलिए आधी रात तक उपदेश देता रहा"। जब त्रोआस की मंडली सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा हुई तो उन्होंने प्रभु यीशु मसीह के बलिदान का स्मरण करने हेतु प्रभु-भोज के रूप में "रोटी तोड़ी"। अर्थात् यह स्मरण किया कि प्रभु यीशु की देह उनके लिए सलीब पर चढ़ाई गई और उनके पापों के लिए उसका निष्कलंक लहू बहाया गया। इस प्रकार की सभा में वे परमेश्वर के वचन की शिक्षा भी

प्राप्त करते थे। हम सब को निरन्तर परमेश्वर के वचन की शिक्षा की आवश्यकता है। परिपक्व विश्वासियों को भी निरन्तर परमेश्वर के वचन का अध्ययन एवं मनन-चिंतन करना आवश्यक है। त्रोआस के विश्वासी परमेश्वर के वचन के इतने भूखे-प्यासे थे कि पौलुस आधी रात तक वचन की शिक्षा देता रहा। उसकी इस शिक्षा-सभा के दौरान एक दुःखद और अद्‌भुत घटना घटित हुई : *"जिस अटारी में हम एकत्रित हुए थे, वहाँ बहुत से दीपक जल रहे थे। यूतुखुस नाम का एक युवक था जो खिड़की पर बैठा हुआ नींद के झोंके में था। जब पौलुस देर तक बोलता रहा तों उन्हें नींद आ गई और वह तिमंजिले से गिर पड़ा और मरा हुआ उठाया गया। परन्तु पौलुस नीचे उतरा और उस पर झुक गया। फिर उसने उसे गले से लिपटा कर कहा, 'घबराओ मत, क्योंकि उसका प्राण उसी में है'। फिर उसने ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर उनसे इतनी देर तक बातें करता रहा कि भोर हो गई, फिर वह चला गया। वे उस युवक को जीवित ले आए और उन्हें बहुत चैन मिला"*। मृतक युवक को जिन्दा करने के लिए प्रभु परमेश्वर ने पौलुस को सामर्थ्य प्रदान किया। इससे यह सुस्पष्ट हो गया कि वह परमेश्वर का जन है और उसका संदेश सत्य है (प्रेरित0 20:8-12)।

13

त्रोआस से प्रस्थान करके पौलुस मिलेतुस पहुँचा। *"उसने मिलेतुस से इफिसुस को संदेश भेज कर कलीसिया के प्राचीनों को अपने पास बुलवाया"।* संभवतः इफिसुस की मंडली में अपनी सेवकाई देते समय पौलुस ने प्राचीनों को नियुक्त किया होगा। जहाँ कहीं पौलुस ने मंडली शुरू किया, वहाँ प्रशिक्षित करके अगुवे (प्राचीन) नियुक्त करना पौलुस प्रेरित की जिम्मेदारी थी। प्रेरित होने के कारण उसका यह आत्मिक दायित्व था। आज की मंडलियों के प्राचीनों (अगुवों) की भी यह जिम्मेदारी है कि मंडली की आत्मिक देख-रेख, शिक्षा एवं सुरक्षा के लिए भावी अगुवों को प्रशिक्षित एवं नियुक्त करें। पौलुस और सीलास की भाँति कोई मंडली अपने अगुवों को अन्यत्र सुसमाचार शिक्षा व मंडली स्थापना के लिए भेजती है तो भेजे गए अगुवों का दायित्व है कि नई मंडलियों की आत्मिक देख-रेख व पालन-पोषण के लिए पवित्र आत्मा से भरपूर अगुवों (प्राचीनों) को नियुक्त करें (प्रेरित0 20:17)।

इफिसुस की मंडली के प्राचीनों को पौलुस का सम्बोधन

इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से मिलेतुस नगर में बातचीत करते समय सबसे पहले पौलुस ने इफिसुस में अपने सेवा-कार्य एवं अपने निजी आचरण की उन्हें याद दिलायी। *"और जब वे उसके पास आए तो उसने उनसे कहा : 'तुम स्वयं जानते हो कि पहिले दिन से ही जब मैंने एशिया में पैर रखे किस प्रकार मैं तुम्हारे साथ सब समय रहा – अर्थात् किस प्रकार बड़ी दीनता के साथ, आँसू बहा-बहा कर और उन परीक्षाओं में भी, जो यहूदियों के षडयँत्र के*

कारण मुझ पर आ पड़ी थीं, प्रभु की सेवा करता रहा"। यहूदी लोग पौलुस का उत्पीड़न करते रहे और शैतान उसके सेवा-कार्य में विघ्न-बाधाएँ खड़ा करता रहा। बहरहाल, पौलुस का जीवन-आचरण ईश्वर-भक्ति का एक सुन्दर उदाहरण रहा। हमारा जीवन-आचरण भी ऐसा होना चाहिए कि इसे देखकर दूसरे लोग प्रभु यीशु की ओर आकर्षित हों। सुसमाचार-प्रचार के कारण पौलुस को बहुत दुःख उठाना पड़ा। किन्तु उसने वफादारी के साथ प्रभु की सेवा करना तथा उसी पर आशा-भरोसा रखना नहीं छोड़ा (प्रेरित0 20:18-19)।

अपने जीवन आचरण के बाद उसने उन्हें अपनी शिक्षा के बारे में याद दिलाया। *"और कि मैं किस प्रकार तुम्हारे लाभ के लिए कोई भी बात बताने से न झिझका और सबके सामने तथा घर-घर जाकर तुम्हें उपदेश देता रहा"।* पौलुस के इस सम्बोधन को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि सबसे पहले पौलुस ने अपने कार्य-व्यवहार द्वारा उनके समक्ष एक **उदाहरण** प्रस्तुत किया और तब उपदेश दिया। कहने का मतलब यह है कि अपने आचरण से उदाहरण प्रस्तुत किया, मात्र उपदेश ही नहीं दिया। लोगों को सत्य की शिक्षा देना सदैव आसान नहीं होता, लेकिन हमारे जीवन में सत्य का व्यवहारिक रूप देखकर लोगों में सत्य को जानने या अपनाने की रुचि पैदा हो सकती है। पौलुस ने इफिसुस में अपनी सेवकाई के दौरान परमेश्वर के सम्पूर्ण मंशा की शिक्षा दी, उनके लाभ की किसी आत्मिक बात (शिक्षा) को उन्हें बताने से वह झिझका नहीं था। अपनी सेवा एवं बुलाहट के प्रति वह इतना समर्पित था कि इफिसुस की मंडली के लोगों को "घर-घर" जाकर उसने शिक्षा दी थी (प्रेरित0 20:20)।

"मैं यहूदी तथा यूनानी दोनों को ही दृढ़तापूर्वक साक्षी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराओ और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो"। पौलुस यहूदियों और ग़ैर यहूदियों दोनों को यह चितौनी देने से नहीं झिझका था कि पापियों के लिए प्रभु परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य होने का केवल एक ही उपाय (मार्ग) है। अर्थात् परमेश्वर की दृष्टि में अपने आपको पापी मानना तथा मसीह के बलिदान द्वारा पाप के दोष-दण्ड की कीमत चुकता किए जाने की सच्चाई पर विश्वास (आशा-भरोसा) करना (प्रेरित0 20:21)।

इसके बाद उसने उन प्राचीनों को अपनी भावी योजना (अगुवाई) के बारे में बताया। *"अब देखो, मैं आत्मा में बंधा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और वहाँ न जाने मुझ पर क्या-क्या बीतेगा, केवल यह कि पवित्र आत्मा प्रत्येक नगर में मुझसे गम्भीरता-पूर्वक गवाही देकर कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरी प्रतीक्षा में हैं। मैं अपने प्राण को किसी प्रकार भी अपने लिए प्रिय नहीं समझता, यदि समझता हूँ तो केवल इसलिए कि अपनी दौड़ को और उस सेवा को जो मुझे प्रभु यीशु से मिली है पूर्ण करूँ, अर्थात् मैं परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गम्भीरतापूर्वक साक्षी दूँ। अब देखो, मैं जानता हूँ कि तुम सब जिनके मध्य मैं परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता फिरा, मेरा मुँह फिर न देख पाओगे"।* प्रभु की इच्छानुसार पौलुस उसके सुसमाचार हेतु मरने को भी तैयार था। पौलुस अपने प्रभु परमेश्वर पर आशा-भरोसा रखता था और इस सत्य के प्रति आश्वस्त था कि परमेश्वर उसे कभी नहीं त्यागेगा। अतः मन अटल था क्योंकि वह इस सच्चाई को अच्छी तरह जानता था कि प्रभु परमेश्वर पूर्णरूपेण विश्वसनीय है (प्रेरित0 20:22-25)।

क्या आप और मेरे लिए भी पौलुस जैसी शाँति का अनुभव सम्भव है? क्या ऐसी शाँति का अनुभव तब भी सम्भव है जबकि यह ज्ञात हो कि हम अपने विश्वास के कारण गिरफ्तार होंगे और शायद फाँसी देकर मार डाले जाएँगे? हाँ, ऐसी शाँति का आध्यात्मिक अनुभव संभव है। जिस पवित्र आत्मा ने ऐसी कठोर यातना सहने की पौलुस को शक्ति व साहस प्रदान किया, वही हमारे जीवन में भी वास करता है। यदि हम ऐसी परिस्थिति में होंगे कि प्रभु के नाम के कारण यातना सहनी होगी तो ऐसे दुःख-सहन के लिए हमें ईश्वरीय अनुग्रह प्रदान किया जाएगा (कुलु0 1:11)।

"इसलिए आज के दिन मैं तुम्हारे समक्ष गवाही देकर कहता हूँ कि मैं सब लोगों के लहू से निर्दोष हूँ। क्योंकि मैं परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को तुम्हें बताने से न झिझका"। कलीसिया के उन अगुवों को पौलुस ने पुनः याद दिलाया कि उसने उन्हें पहले से ही चिताया एवं खरी शिक्षा प्रदान की है। इस संदर्भ में उसका विवेक साफ था। यदि उनमें से कोई प्रभु परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता तो यह पौलुस की लापरवाही नहीं थी। चूँकि पौलुस उस इलाके से जा रहा था और पुनः वापस आने की संभावना नहीं दिख रही थी, इसलिए वहाँ की कलीसिया की ठीक से देखरेख करने की गम्भीर जिम्मेदारी वह उन प्राचीनों (अगुवों) को सौंप रहा था। *"इसलिए अपनी और अपने पूरे झुण्ड की रखवाली करो जिसके मध्य पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की उस कलीसिया की रखवाली करो जिसे उसने अपने ही लहू से खरीदा है"* (प्रेरित0 20:26-27; 20:28)।

परमेश्वर के वचन के अनुसार मंडली के अगुवे चरवाहों की तरह हैं। जैसे कोई चरवाहा अपनी भेड़ों की सुरक्षा एवं देखभाल

करता है, उसी प्रकार प्राचीनों को परमेश्वर की मंडली के लोगों की देखभाल करनी है। जैसे कोई खूँखार भेड़िया बड़ी चालाकी के साथ भेड़शाला की भेड़ों को मार कर निगलना चाहता है, उसी प्रकार झूठे शिक्षक मंडली के लोगों को बहला, फुसला और भटकाकर आत्मिक बिगाड़ की ओर ले जाते हैं। अतः पौलुस ने कलीसिया के उन अगुवों को आगाह किया कि ऐसे खतरनाक लोगों के प्रति असावधान या अजागरूक रहना, अपनी भेड़ों के बिगाड़-भटकाव को दावत देने के समान होगा। अच्छे चरवाहे की तरह स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों का यह दायित्व है कि मंडली की आत्मिक अगुवाई, पालन-पोषण एवं देखरेख करते हुए ऐसी गलत शिक्षाओं के नुकसान से बचाएँ। *"मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुम्हारे मध्य आएँगे, और झुंड को न छोड़ेंगे। और तुम्हारे ही बीच में से ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी बातें करेंगे। इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात-दिन आँसू बहाकर एक-एक को समझाना न छोड़ा"।* इस प्रकार पौलुस ने उन अगुवों को ऐसे (झूठे) शिक्षकों की शिक्षा के प्रति सावधान रहने के लिए कहा जो पौलुस द्वारा दी गई शिक्षा के विपरीत सिखाएँगे। अतः हमें अपनी मंडली में ऐसे अगुवों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो कलीसिया की इस तरह देखभाल करेंगे (प्रेरित0 20:29-31; प0पत0 5:2-3)।

"और अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके अनुग्रह के वचन के हाथ सौंपता हूँ, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों के साथ मीरास दे सकता है"। हाँ, अब पौलुस उनके पास से विदा ले रहा था। अतः उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि परमेश्वर का वचन उनके पास है, और पवित्र आत्मा उस वचन का

उपयोग करके सम्पूर्ण सत्य के ज्ञान में उनकी अगुवाई करेगा। हो सकता है कि हम भी कभी स्वयं को बिल्कुल अकेला पाएँ। ऐसे समय हमें भी यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर का वचन हमारे पास है और पवित्र आत्मा पर आश्रित रहना है कि वह सम्पूर्ण सत्य में हमारी अगुवाई करने में पूर्णरूपेण विश्वसनीय है (प्रेरित0 20:32)।

ध्यान दें कि अन्ततः पौलुस ने उन अगुवों को एक बार फिर अपने जीवन-आचरण की याद दिलायी और उन्हें उसके उदाहरण का अनुसरण करने की प्रेरणा दी : *"मैंने किसी के सोने, चाँदी या वस्त्रों का लोभ नहीं किया। तुम स्वयं जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी की हैं। मैंने तुम्हें हर बात से यह दिखाया है कि तुम भी इसी प्रकार कठिन परिश्रम करके निर्बलों को संभालो और प्रभु यीशु के ये वचन स्मरण रखो जो उसने स्वयं कहे : 'लेने से देना धन्य है'।"* पौलुस पर कोई आलसी या काहिल होने का आरोप नहीं लगा सकता था। उसने परमेश्वर के वचन का प्रचार भी किया और अपनी जीविका के लिए परिश्रम भी किया। परमेश्वर यह नहीं चाहता कि उसके लोग आलसी हों। परमेश्वर की इच्छा यह है कि उसके लोग परिश्रमी हों; न सिर्फ अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए बल्कि दूसरे आवश्यकता-ग्रस्त लोगों की मदद का एक माध्यम भी होने के लिए। इन आखिरी बातों के बाद पौलुस वहाँ से विदा हुआ। *"यह कह कर उसने घुटने टेके और सबके साथ प्रार्थना की। तब वे सब फूट-फूट कर रोने लगे और पौलुस के गले लिपट कर उसे बार-बार चूमने लगे। वे विशेषकर उस बात से जो उसने कही थी शोकित थे कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे, और उन्होंने उसे जहाज़ तक पहुँचाया* (प्रेरित0 20:33-35; प्रेरित0 18:1-3; रोमि0 12:11; दू0थिस्स0 3:6-12; इफि0 4:28; प्रेरित0 20:36-38)।

14

इससे पहले के अध्याय में हमने पौलुस द्वारा इफिसुस के प्राचीनों को दिए गए प्रोत्साहन का अध्ययन किया। उन अगुवों के साथ अपनी बातचीत समाप्त करने के बाद पौलुस जलयान द्वारा कैसरिया गया और वहाँ विश्वासियों के साथ एक दिन व्यतीत करने के पश्चात् उसने यरूशलेम के लिए प्रस्थान किया। *"जब हम यरूशलेम पहुँचे तो भाइयों ने हमें बड़े आनन्द से ग्रहण किया"* (प्रेरित0 21:17)।

यरूशलेम की कलीसिया के विश्वासी पौलुस को अपने मध्य पाकर खुश थे। पौलुस को वहाँ आए लगभग एक सप्ताह ही हुआ था कि कुछ ग़ैर यहूदी मसीही उसे पहचान गए। उन्होंने उसे विभिन्न स्थानों पर शिक्षा देते यह सुन रखा था कि वह यहूदियों की शिक्षा के विरुद्ध यह सिखाता है कि व्यवस्था-पालन एवं यरूशलेम के मंदिर में उपासना आवश्यक नहीं है। यरूशलेम में पौलुस के साथ त्रुफिमुस नामक ग़ैर यहूदी पृष्ठभूमि का एक मसीही मित्र भी था। जब वहाँ के यहूदियों ने उसे देखा तो यह सोचा कि पौलुस अपने इस ग़ैर यहूदी मित्र को भी यरूशलेम के मंदिर के भीतरी भाग में ले गया है, जहाँ केवल खतना वाले यहूदियों को ही प्रवेश की अनुमति थी। पवित्रशास्त्र के इस विवरण पर ध्यान दें : *"जब वे सात दिन पूर्ण होने को थे तो एशिया के यहूदियों ने उसे मंदिर में देखकर सारी भीड़ को भड़का दिया और पौलुस को पकड़ लिया, और चिल्लाकर कहा, 'हे इस्राएलियों, हमारी सहायता करो! यह वही*

मनुष्य है जो हर जगह सब लोगों में हमारी प्रजा और व्यवस्था और इस स्थान के विरोध में प्रचार करता है, यहाँ तक कि उसने यूनानियों को भी मंदिर में लाकर इस पवित्र स्थान को अपवित्र कर दिया है।' क्योंकि इससे पहले उन्होंने त्रुफिमुस नाम इफिसी को उसके साथ नगर में देखा था और यह समझा कि पौलुस उसे मंदिर में ले आया है। सारा नगर भड़क उठा और सब लोग दौड़कर इकट्ठे हो गए, और वे पौलुस को पकड़ कर मंदिर से बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द कर दिए।

जब वे उसे मार डालने को थे तो पलटन के सेनापति को यह सूचना मिली कि सारे यरूशलेम में गड़बड़ी मच गई है। वह तुरन्त सैनिकों और सूबेदारों को लेकर उनकी ओर दौड़ पड़ा, और जब लोगों ने सेनापति और सैनिकों को देखा तो पौलुस को पीटना बन्द कर दिया। तब सेनापति ने पास आकर उसे पकड़ लिया, और उसे दो जंजीरों से बाँधने की आज्ञा दी और पूछने लगा कि वह कौन है और उसने क्या किया है? परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाता रहा और उस हुल्लड़ के मारे जब वह सही बात न जान सका तो उसे छावनी में ले जाने की आज्ञा दी"। अगले दिन रोमी पल्टन के सेनापति ने पौलुस को उसके विरोधियों (फरीसियों और यहूदियों) के समक्ष पेश किया, लेकिन वह भी पौलुस पर लगाए जाने वाले आरोप के बारे में एकमत नहीं थे। *"जब मतभेद अधिक बढ़ता गया तो सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस को टुकड़े-टुकड़े न कर डालें, इसलिए उसने सैनिकों को आज्ञा दी कि नीचे जाकर उनके बीच में से उसे जबरदस्ती निकाल कर किले में ले जाएँ* (प्रेरित0 21:27-34; 23:10)।

पौलुस ने यह सोचा था कि थोड़े दिनों तक यरूशलेम में रहकर शीघ्र ही रोम की यात्रा पर निकल जाएगा। परन्तु अब वह कैद कर लिया गया था और शीघ्र छूटने की आशा नहीं दिखाई दे रही थी। पौलुस की चिन्ता को प्रभु परमेश्वर जानता था और उसे इस सच्चाई के प्रति हियाव, आश्वासन एवं सांत्वना प्रदान किया कि यह सब ईश्वरीय इच्छा-योजनानुसार हो रहा है। *"परन्तु उसी रात प्रभु ने उसके पास खड़े होकर कहा, 'साहस रख, क्योंकि जिस प्रकार तूने यरूशलेम में दृढ़तापूर्वक मेरी साक्षी दी है उसी प्रकार तुझे रोम में भी साक्षी देनी होगी'।"* अपने इस वायदे से प्रभु परमेश्वर ने पौलुस को प्रोत्साहित किया। अगले दिन क्या हुआ? *"जब दिन हुआ तो यहूदियों ने षडयंत्र रचा और यह कह कर शपथ खाई कि जब तक पौलुस को मार न डालें तब तक न तो खाएँगे और न पीएँगे"।* इस षडयँत्र के बारे में पौलुस के भाँजे को पता चल गया, जिसने उसे बता दिया। तब पौलुस ने उसे रोमी पल्टन के सेनापति के पास भेज दिया कि उसे इसके बारे में बता दे। यह सब सुन कर उस सेनापति ने पौलुस को रोमी सैनिकों की देखरेख में कैसरिया भेज दिया और राज्यपाल फेलिक्स से उसके मुकदमें की सुनवाई करने का अनुरोध किया। *"तब उसने दो सूबेदारों को अपने पास बुला कर कहा, 'कैसरिया जाने के लिए रात को नौ बजे तक दो सौ सैनिक, सत्तर घुड़सवार तथा दो सौ भालैत तैयार रखो'। उन्हें राज्यपाल फेलिक्स के पास पौलुस को सकुशल ले जाने के लिए घोडों की सवारी का भी प्रबन्ध करना था"* (प्रेरित0 23:11; 23:12; 23:23-24)।

यहूदियों ने जब यह सुना कि पौलुस कैसरिया में कैद है तो वे राज्यपाल फेलिक्स के पास जाकर पौलुस को मृत्यु-दण्ड देने की माँग करने लगे। फेलिक्स यह जानता था कि मृत्यु-दण्ड की बात तो

दूर रही, पौलुस को कैद में रखना भी ठीक नहीं है। लेकिन वह उसे छोड़ भी नहीं सकता था, अतः उसे कैद में ही रखा। लगभग दो साल बाद उसके स्थान पर पुरखियुस फेस्तुत नामक एक दूसरा राज्यपाल नियुक्त हुआ, और तब तक पौलुस कैद में ही था। *"जब दो वर्ष बीत गए तो फेलिक्स के स्थान पर पुरखियुस फेस्तुत की नियुक्ति हुई। और फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न करने की इच्छा से पौलुस को हिरासत में ही छोड़ गया"* (प्रेरित0 24:27)।

यद्यपि प्रभु परमेश्वर ने पौलुस से यह वायदा किया था कि वह रोम में भी जाकर उसकी गवाही देगा, किन्तु मानवीय दृष्टि से यह आशा धूमिल होने लगी थी; क्योंकि पौलुस दो साल से अब भी जेल में था। कभी-कभी प्रभु परमेश्वर से उत्तर पाने की आशा में लम्बी प्रतीक्षा करना विश्वासीजन के लिए सबसे कठिन कार्य लगता है। प्रायः बीमारी के समय, कठिनाई के समय या फिर किसी घटी-कमी के समय हम फौरन ईश्वरीय सहायता चाहते हैं। परन्तु परमेश्वर सदैव हमारे चुटकी बजाते ही हमारी सहायता करने नहीं आ जाता, क्योंकि वह हमारे विश्वास को निर्मल करना चाहता है। वह हमें यह सिखाना चाहता है कि हम हर हालत में उसी पर आशा-भरोसा रखें। हाँ, तब भी जबकि सबकुछ गड़बड़ एवं बुरा दिखता है और आशा की कोई किरण नहीं दिखती (प0पत0 1:6-7)।

आगे चलकर पौलुस को राज्यपाल फेस्तुत के समक्ष हाजिर किया गया। फेस्तुत ने पौलुस को यरूशलेम वापस जाकर अपने मुकदमें की सुनवाई वहीं होने देने की सलाह दी। तब पौलुस ने रोमी सल्तनत के सर्वोच्च शासक कैसर के समक्ष पेश किए जाने की अपील की : *"परन्तु पौलुस ने कहा, 'मैं कैसर के न्यायालय के सामने*

खड़ा हूँ, मेरा न्याय यहीं होना चाहिए। जैसा तू भी भली-भाँति जानता है, मैंने यहूदियों का कुछ भी नहीं बिगाड़ा है। यदि मैं अपराधी हूँ और मैंने मृत्यु-दण्ड पाने के योग्य कुछ किया है, तो मैं मरने से इंकार नहीं करता; परन्तु यदि उनके द्वारा लगाए गए अभियोगों में से एक भी सत्य नहीं तो कोई भी मुझे इनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर से अपील करता हूँ'। तब फेस्तुत ने अपनी सभा से परामर्श कर उत्तर दिया, 'तूने कैसर से अपील की है, तू कैसर ही के सामने खड़ा होगा'।" (प्रेरित0 25:10-12)।

पौलुस का रोम भेजा जाना

अन्ततः राज्यपाल की आज्ञा से पौलुस को रोम भेजने का प्रबन्ध किया गया। *"जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज़ द्वारा इटली जाएँ तो उन्होंने पौलुस तथा अन्य बन्दियों को राजसी सैन्य दल के यूलियुस नामक एक सूबेदार को सौंप दिया"।* जलयान से रोम की लम्बी यात्रा पर निकलने के बाद ऐसा वक्त भी आया कि समुद्री तूफान के कारण उनकी जहाज़ डूबने लगी, किन्तु प्रभु परमेश्वर ने पौलुस तथा उस जहाज के शेष सभी लोगों को सुरक्षित रखा। अन्ततः जब जहाज़ टूटने लगा तब वे सब माल्टा द्वीप के तट पर पहुँचे। वहाँ के नागरिकों ने आग जला कर उनका स्वागत किया क्योंकि ठंड पड़ रही थी। आग की लकड़ी के ढेर में से एक सांप निकल कर पौलुस के हाथ में लिपट गया और उसे काट लिया। परमेश्वर की कृपा से पौलुस की कोई हानि नहीं हुई। वह न तो बीमार हुआ और न ही मरा। परमेश्वर का वायदा था कि पौलुस को रोम जाना है, और परमेश्वर जो कहता है उसे अवश्य पूरा करता है।

उस द्वीप पर कुछ समय रहने के पश्चात् पौलुस और उसके सहयात्री एक अन्य जलयान पर सवार होकर रोम की ओर चल दिए (प्रेरित0 27:1; 27:14-44; 28:1-8; 28:11)।

रोम की कैद में निर्भीकतापूर्ण प्रचार

"जब हम रोम में पहुँचे तब पौलुस को एक सैनिक के साथ जो उसकी चौकसी करता था अलग रहने की अनुमति दी गई।

फिर ऐसा हुआ कि तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया। जब वे एकत्रित हुए तो उसने कहा, 'भाइयों, यद्यपि मैंने अपनी जाति अथवा अपने पूर्वजों की रीति-विधि के विरुद्ध कुछ नहीं किया, फिर भी मैं यरूशलेम से बन्दी बनाकर रोमियों के हाथ सौंप दिया गया हूँ। उन्होंने पूछताछ करने के पश्चात् मुझे छोड़ देना चाहा क्योंकि मुझे मृत्यु-दण्ड दिए जाने का कोई कारण नहीं था। परन्तु जब यहूदियों ने विरोध किया तो मुझे कैसर से अपील करनी पड़ी – पर यह नहीं कि मुझे अपनी जाति पर कोई अभियोग लगाना था। इसी कारण मैंने आग्रह किया कि तुम लोगों से मिलूँ और बातचीत करूँ, क्योंकि इस्राएल की आशा ही के कारण मैं इस जंजीर में बँधा हूँ'।

उन्होंने उत्तर दिया, 'न तो हमें यहूदिया से तेरे सम्बन्ध में कोई पत्र प्राप्त हुआ है और न ही भाइयों में से किसी ने यहाँ आकर तेरे विषय में कुछ समाचार दिया और न कोई बुरी बात कही। परन्तु हम तेरे विचार सुनने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि हमें इस पंथ के सम्बन्ध में यह मालूम है कि सब जगह लोग इसके विरोध में बातें करते हैं'।

तब उसके लिए एक दिन निश्चित करके वे बड़ी संख्या में उसके रहने के स्थान पर आए। उसने परमेश्वर के राज्य के विषय में गम्भीरतापूर्वक गवाही देकर उन्हें समझाया और प्रातः काल से सायं काल तक मूसा की व्यवस्था तथा नबियों की पुस्तकों से यीशु के सम्बन्ध में उन्हें समझाने का प्रयत्न करता रहा। कुछ लोगों ने तो इन बातों को मान लिया, परन्तु कुछ ने विश्वास न किया"। यद्यपि बहुत से यहूदी प्रभु यीशु पर विश्वास करके मसीही हो रहे थे, लेकिन अधिकतर यहूदी तथा उनके अगुवे प्रभु यीशु को प्रतिज्ञात् उद्धारकर्ता मानने से इनकार कर रहे थे। उनका सोचना यह था कि वे अपने कर्म-प्रयास द्वारा ही परमेश्वर के दरबार में स्वीकार्य होंगे। प्रभु परमेश्वर ने सदियों पहले से ही अपने भविष्यवक्ताओं द्वारा पवित्रशास्त्र में यह लिपिबद्ध करवा दिया था कि अधिकाँश यहूदी लोग (मसीह) यीशु को अस्वीकार्य करेंगे, और पौलुस ने पुराना नियम शास्त्र की इस बात का यहूदियों को बारम्बार स्मरण भी कराया : *"जब वे एक दूसरे से सहमत न हुए, तब पौलुस के इन अंतिम शब्दों के कहने के पश्चात् वे वहाँ से जाने लगे, 'पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक ही कहा, **'जाकर इन लोगों से कह दे, 'तुम सुनते तो रहोगे पर न समझोगे; और देखते तो रहोगे परन्तु न बूझोगे; क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, वे अपने कानों से ऊँचा सुनने लगे हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें और अपने कानों से सुनें और अपने मन से समझें और फिरें और मैं उन्हें चंगा करूँ'।"*** इसके अतिरिक्त पौलुस ने यह भी बताया कि यहूदियों की अपेक्षा ज्यादा ग़ैर यहूदी (मसीह) यीशु पर विश्वास करेंगे। *"अतः तुम जान लो कि परमेश्वर का यह उद्धार ग़ैर यहूदियों के पास भेजा गया है, और वे तो सुनेंगे"।* विभिन्न देशों के जिन यहूदियों ने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया था, उन्हें भारी सतावट का सामना

करना पड़ा। इन लोगों को इतने घोर उत्पीड़न का सामना करना पड़ा कि अनेक लोग सार्वजनिक तौर पर अपने इस विश्वास से मुकर गए। यह लोग "चट्टान पर गिरे बीज" के समान थे (प्रेरित0 28:16-24; 28:25-27; 28:28; लूका 8:12-13)।

लूका द्वारा लिखित "प्रेरितों के काम" की पुस्तक के आखिरी अध्याय के इन शब्दों पर ध्यान दें : *"और जब वह ये बातें कह चुका तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करते हुए वहाँ से चले गए। पौलुस अपने किराये के घर में पूरे दो वर्ष तक रहा, और जो उसके पास आते थे उन सब का स्वागत किया करता था। और वह बिना किसी रुकावट के निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह के विषय में शिक्षा दिया करता था"।* उस समय पौलुस रोम में कैद था। वहाँ से उसने कलीसियाओं के नाम तीन पुस्तकें लिखीं – **इफिसियों, कुलुस्सियों** और **फिलिप्पियों** के नाम पत्रियाँ। यह सब दस्तावेज अब **नया नियम** शास्त्र में शामिल हैं (प्रेरित0 28:29-31)।

दो वर्ष बाद पौलुस को कैद से छोड़ दिया गया, और वह उन लोगों के मध्य सुसमाचार प्रचार करता रहा जिन्होंने प्रभु यीशु के बारे में नहीं सुना था। इस दौरान पौलुस ने दो अन्य पत्रियाँ भी लिखीं – **तीमुथियुस** के नाम एक पत्र और एक **तीतुस** के नाम। यह अभिलेख भी **नया नियम** में शामिल हैं। पौलुस रोम में सुसमाचार प्रचार एवं शिक्षा देने में लगा रहा। तत्पश्चात् फिर उसे गिरफ्तार करके कैद में डाल दिया गया। इस कैद के दौरान उसने **तीमुथियुस** के नाम एक अन्य पत्री लिखी। इस कारावास के कुछ समय बाद रोम के सम्राट ने उसका सिर कलम करके उसे मार डाला।

✞ ✞ ✞

हमारे अन्य प्रकाशन

1. उत्पत्ति और उद्धार की कहानी
2. सुदृढ़ आधार
3. आत्मिक जन्म
4. परमेश्वर कृत उद्धार
5. आध्यात्मिक विकास के सिद्धान्त
6. वह मुझमें और मैं उसमें
7. प्रभु पर दृष्टि
8. उद्धार का अभिप्राय
9. पवित्र शास्त्र बाइबॅल की भविष्यवाणियाँ
10. प्रेरितों के काम